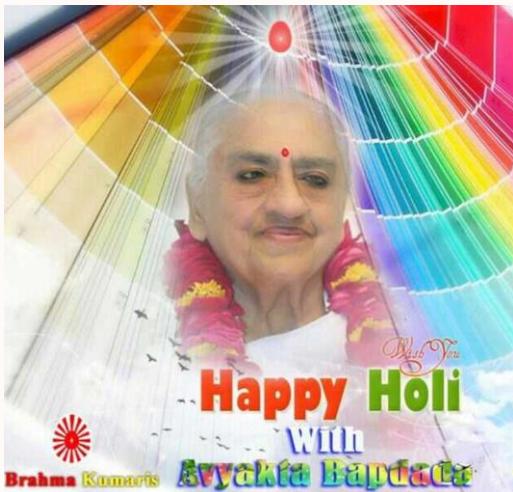


“होली का रुहानी रंग ”

“अव्यक्त मुरलियों से प्रेरित सार संकलन”

(1969 से 2016 तक
होली पर चलायी गई¹
मुरलियों का आध्यात्मिक सार)



॥ समर्पण (Dedication) ॥

ॐ शान्ति

यह पुस्तक
सर्व आत्माओं के पिता - परमपिता परमात्मा शिव बाबा
को सादर समर्पित है,
जिनकी दिव्य वाणी और रुहानी स्नेह ने
हम बच्चों को अज्ञान के अंधकार से निकाल
सत्य के प्रकाश में स्थिर किया।

यह समर्पण उन सभी
ब्रह्मा कुमारों और ब्रह्मा कुमारी आत्माओं को भी समर्पित है
जो तन-मन-धन से सेवा में तत्पर रहकर
विश्व में शांति और पवित्रता का प्रकाश फैला रहे हैं।

यह पुस्तक
उन साधकों और पाठकों के लिए भी है
जो अपने जीवन में आत्मिक रंग भरना चाहते हैं,
जो बीते हुए को बीत जाने देकर
हर दिन को नेया आरंभ बनाना चाहते हैं।

✿ लेखक की ओर से संदेश (Author's Note):

यह पुस्तक मेरे उस आत्मिक अनुभव का परिणाम है, जो मैंने वर्षों से होली के अवसर पर बापदादा की मुरलियाँ सुनते हुए प्राप्त किया।

हर होली पर बाबा के शब्द आत्मा को एक नया रंग, नई दिशा और नया संकल्प देते हैं।

इस ग्रंथ को संकलित करने का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि पाठक को यह अनुभव कराना है कि सच्ची होली रंगों की नहीं, बल्कि आत्मा की पवित्रता की होली है।

जब हम बीती बातों को भला देते हैं और वर्तमान को ईश्वरीय रंग से रंग देते हैं, तभी जीवन में सच्ची खुशी और हल्कापन आता है।

मेरा विनम्र निवेदन है कि इस पुस्तक को केवल पढ़ें नहीं; इसे मनन करें, अनुभव करें और जीवन में अपनाएँ।

तभी यह पुस्तक अपने वास्तविक उद्देश्य को पूरा करेगी।

स्नेह सहित,

– संकलन एवं प्रस्तुति: Swaati Vilhekar

लेखक की अनुभूति (My Spiritual Experience)

जब मैं मधुबन गई थी,	मैंने वही किया –
<p>तो मन में बहुत उत्साह था कि वहाँ गहन तपस्या करूँगी, आत्मा को नयी शक्ति दूँगी। परंतु, वहाँ पहुँचने के बाद अचानक मेरा मूँड बदल गया –</p> <p>किसी कारणवश भीतर से शांति नहीं मिल रही थी। मन भारी था और साधना में मन नहीं लग रहा था। उसी समय, संयोगवश मेरी दृष्टि इस पुस्तक – “होली पर चलायी गई अव्यक्त मुरलियों का सार” – पर पड़ी।</p> <p>जब मैंने इसे पढ़ना शुरू किया, तो दो वाक्य मेरी आत्मा को भीतर तक छू गए – “बीती को बीती करो।”</p> <p>“नए संस्कारों को उद्दित करो।”</p> <p>इन दो पंक्तियों ने जैसे मेरे भीतर की बुझी ज्योति को फिर से जला दिया। मुझे गहराई से अनुभव हुआ कि होली का असली अर्थ बीते हुए को भुलाकर नये जीवन का आरंभ करना है।</p>	<p>जो बीत गया उसे बीत जाने दिया, और अपने मन को “नई शुरुआत” के रंग से रंग दिया। अचानक मेरे भीतर हल्कापन, प्रसन्नता और एक नई शक्ति का अनुभव हुआ।</p> <p>तपस्या स्वतः चलने लगी, मन स्थिर और हृदय मधुर हो गया। उस क्षण मुझे अनुभव हुआ कि होली केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि आत्मा का पुनर्जन्म है। यह पुस्तक मेरे लिए केवल शब्दों का संग्रह नहीं रही, बल्कि मेरी आत्मा का मार्गदर्शक बन गई।</p> <p>अब जब भी होली आती है, मैं इसे रंगों से नहीं, बल्कि रुहानी स्मृति और पवित्रता के रंग से मनाती हूँ।</p> <p>हर बार यही अनुभूति होती है कि – “जो हुआ, वह हो गया।</p> <p>अब हर पल नया है, हर क्षण ईश्वरीय है।”</p> <p>इस पुस्तक ने मेरे जीवन में जो परिवर्तन लाया, वह शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता – यह आत्मा की यात्रा का वो रंग है जो अब सदा के लिए मेरी आत्मा में बस गया है।</p>

✿ Preface 1 (भूमिका / प्रस्तावना):

“होली का रहानी रंग” पुस्तक ईश्वरीय होली के सच्चे अर्थ को उजागर करती है – “जो हुआ, वह हो गया।”
यह केवल रंगों का नहीं, बल्कि आत्मा को पवित्र बनाने का उत्सव है।

इस पुस्तक में सन् 1969 से 2016 तक बापदादा द्वारा उच्चारित होली की अव्यक्त मुरलियों का सार दिया गया है।

हर वर्ष, हर मुरली आत्मा को याद दिलाती है कि बीती सो बीती, अब नया आरंभ करो।

यह पुस्तक पाठक को सिखाता है कि

- कैसे पुराने संस्कारों को योग-अग्नि में जलाना,
- कैसे बाप के संग के रंग में स्वयं को रंगना,
- और कैसे खुशी व मधुरता की पिचकारी से विश्व को सुख-शांति में रंगना है।

पाठक इस पुस्तक के माध्यम से न केवल “होली मनाने” बल्कि “होली बन जाने” का अनुभव करेंगे – अर्थात् आत्मा को पवित्रता, स्नेह और शक्ति के रंग में स्थायी रूप से रंगना।

સૂચી (Table of Contents)

“હોલી કા રૂહાની રંગ – અવ્યક્ત મુરલિયોં કા સાર”

✿ ભાગ – 1 : હોલી કા અર્થ ઔર આરંભિક સંદેશ

- 1.હોલી કા વાસ્તવિક અર્થ – “હો લી” કા ગૂઢ રહસ્ય
- 2.બીતી કો બીતી કરના – સચ્ચી હોલી કા પહ્લા પાઠ
- 3.પરુષાર્થ કી સ્પીડ ઔર આત્મિક ઉત્સાહ
- 4.હોલી કે તીન સ્વરૂપ – જલાના, રંગના ઔર મનાના

✿ ભાગ – 3 : સચ્ચી હોલી કેસે મનાએँ

- 10.જલાના – પુરાની બાતોં ઔર સંસ્કારોં કો અગિન મેં ભસ્મ કરના
- 11.રંગના – ગુણોં ઔર શક્તિયોં કે રંગ મેં રંગના
- 12.મિલન મનાના – આત્મા ઔર પરમાત્મા કા મિલન
- 13.ખુશી કી પિચકારી – આત્મિક આનંદ કા વિસ્તાર
- 14.ડબલ લાઇટ સ્થિતિ – હલ્કાપન ઔર ઉડ્ઢતી કલા કા અનુભવ

✿ ભાગ – 5 : આત્મ પરિવર્તન સે વિશ્વ પરિવર્તન તક

- 20.રોજ કી હોલી – હર દિન કો ઉત્સવ બનાના
- 21.વાયબ્રેશન દવારા સેવા – મૌન કી શક્તિ સે વિશ્વ કો રંગના
- 22.નિર્માણતા ઔર નિરહંકારિતા – બાપ સમાન બનના
- 23.લક્ષ્ય ઔર લક્ષણ કી સમાનતા – સમાનતા કી અંતિમ પરીક્ષા
- 24.પાસ વિદ ઓનર બનના – અંતિમ સફલતા કી સ્થિતિ

✿ ભાગ – 2 : રૂહાની રંગોં કી હોલી

- 5.જાન કા રંગ – આત્મા કો જાન સે રંગના
- 6.યોગ કી પિચકારી – બાપ કે સંગ કા રંગ
- 7.મધુરતા કા રંગ – વાળી, દૃષ્ટિ ઔર વ્યવહાર મેં મધુરતા
- 8.સંસ્કારોં કા મિલન – મંગલ મિલન કી હોલી
- 9.બાપ સમાન બનને કી પ્રેરણા

✿ ભાગ – 4 : હોલી કા રૂહાની રહસ્ય

- 15.હોલી કે તીન પ્રકાર – જલાને, રંગને ઔર મિલન કી હોલી
- 16.અવિનાશી રંગ – બાપ કે સંગ કા સ્થાયી રંગ
- 17.હોલી બનના – પવિત્રતા કી પરમ સ્થિતિ
- 18.મહાદાની બનો – જાન, ગુણ ઔર ખુશી કા દાન
- 19.રૂહાની ગુલાબ બનના – સુગંધ ઔર સૌંદર્ય કા પ્રતીક

✿ ભાગ – 6 : સમાપન ઔર આશીર્વચન

- 25.હોલી – આત્મા કા પુનર્જન્મ
- 26.બાપદાદા કા અંતિમ સંદેશ – સદા હોલી મૃડ મેં રહો
- 27.સંગમયુગ કી હોલી – જીવન કા અવિનાશી ઉત્સવ
- 28.લેખક કી અનુભૂતિ – મેરે રૂહાની અનુભવ સે સીખે હુએ રંગ

Sr.no.	Date	Topic	Page no.
1	4 MARCH 1969	होली के शुभ अवसर	12
2	23 MARCH 1970	सच्ची होली मनाना: बीती को बीती करना	18
3	21 MARCH 1981	सच्ची होली कैसे मनायें?	38
4	9 MARCH 1982	होली मनाने और जलाने की अलौकिक रीति	51
5	15 MARCH 1984	होली उत्सव: पवित्र बनने और बनाने का यादगार होली उत्सव पवित्र बनने, बनाने का यादगार	59
6	6 FEB 1985	होली का रहानी रहस्य	69
7	25 MARCH 1986	होली का रहस्य: एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण	85
8	16 MARCH 1992	होली मनाना: कमज़ोरियों को जलाना और मिलन की मौज मनाना	95
9	26 MARCH 1993	अव्यक्त वर्ष में लक्ष्य और लक्षण को समान बनाओ	120
8	3 APRIL 1997	पुराने संस्कारों को खत्म कर अपने निजी संस्कार धारण करने वाले एवररेडी बनो	155

Sr.no.	Date	Topic	Page no.
11	1 MARCH 1999	होली मनाना अर्थात् सम्पूर्ण पवित्र बनकर संस्कार मिलन मनाना	190
12	3 FEB 2005	सेवा करते उपराम और बेहद द्वारा एवररेडी बन, बहमा बाप समान सम्पन्न बनो	225
13	3 MARCH 2007	परमात्म संग में, जान का गुलाल	250
14	9 MARCH 2009	होली का आध्यात्मिक महत्व	280
15	28 FEB 2010	होली का आध्यात्मिक महत्व	315
16	31 MARCH 2011	दृढ़ संकल्प द्वारा टेन्शन फ्री बनें	345
17	15 MARCH 2015	बाप और बच्चों का अलौकिक मिलन	371
18	31 MARCH 2016	बापदादा का बच्चों से मिलन	386

THREE WORLDS

SUPREME SOUL

SOUL WORLD



BRAHMA, VISHNU, SHANKAR PURI



CORPOREAL WORLD

SUPREME FATHER IS HERE ON EARTH TO LIBERATE US

भारत के उत्थान और पतन के 84 जन्मों की अद्भुत कहानी



HOW
STAGE
DECEIVED
FROM
DEITY To
SHUDRA

मनमनाभव / मध्याजी भव
“बाबा की याद में स्थित आत्मा — जगत के लिए लाइट हाउस।”



योगी बनो; पवित्र बनो

होली के शुभ अवसर

4 MARCH 1969

“अव्यक्त बापदादा मुरली”

होली का त्योहार हमारे जीवन में एक नई ऊर्जा लाता है।
यह सिर्फ रंगों का त्योहार नहीं है।

इसमें जलाना, मिटाना, रंगना और शृंगारना - ये चारों तत्व शामिल हैं।



होली का वास्तविक अर्थ

होली का अर्थ

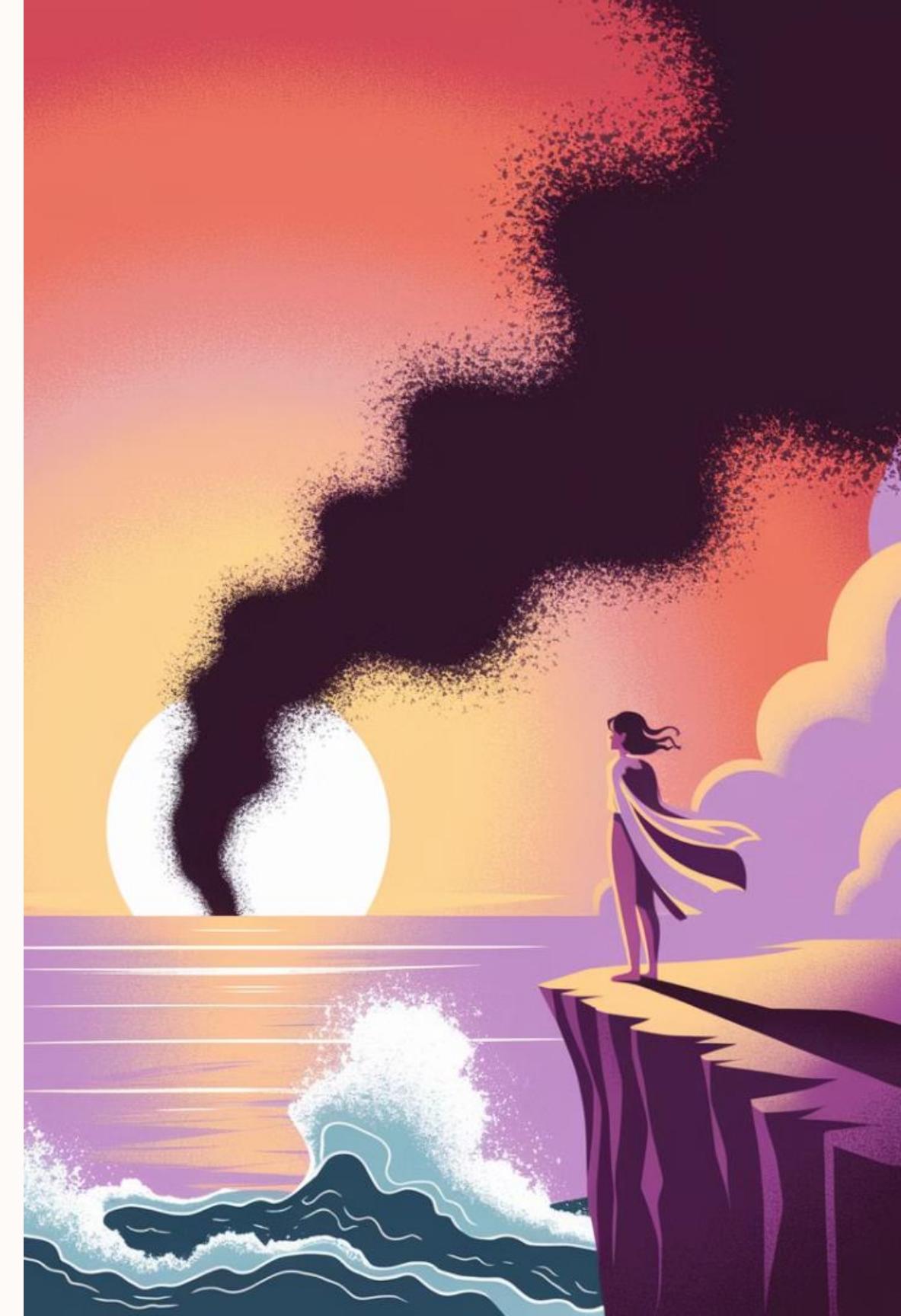
'होली' का अर्थ है - जो हुआ वह हो गया। बीत चुकी बातों को छोड़ना।

वर्तमान में जीना

ड्रामा के ढाल की तरह मजबूत होना। तभी रंग पक्का लगेगा।

पक्का रंग

हर वक्त सोचो - हो ली। जो बीता हो ही गया। ऐसी होली मनाएं।





ज्ञान का मंथन

1

ड्रामा पर मंथन

ड्रामा की सीन पर क्यों, क्या, कैसे मंथन करना व्यर्थ है।

2

पानी का मंथन

पानी को मंथन करने से केवल थकावट और समय की बर्बादी होती है।

3

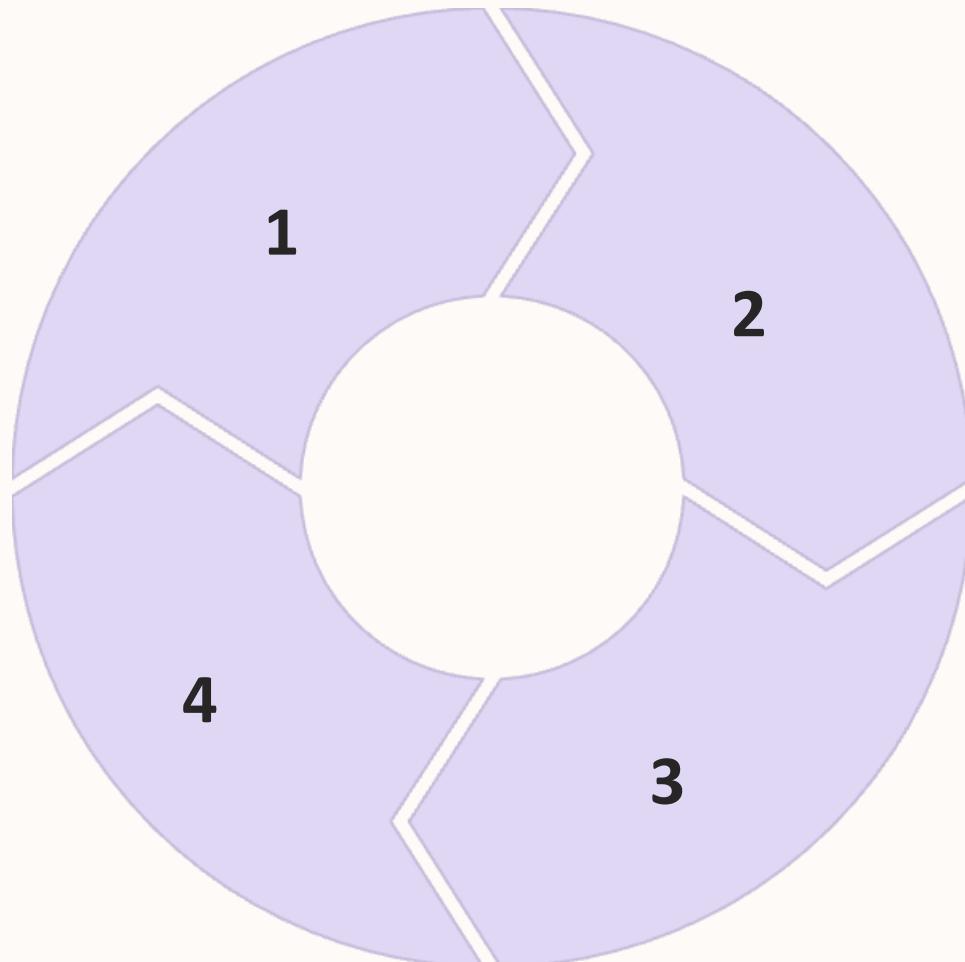
ज्ञान का मंथन

दही के मंथन से मक्खन निकलता है। ज्ञान के मंथन से सार निकलता है।

सेवा का घेराव

वाणी द्वारा सेवा
ज्ञान के शब्दों से लोगों को प्रभावित करना।

अव्यक्त आकर्षण से घायल
आत्मिक शक्ति से दूसरों के हृदय को हूँना।



अव्यक्त आकर्षण

अपनी आध्यात्मिक शक्ति से दूसरों को आकर्षित करना।

घेराव डालना

ऐसा प्रभाव डालना जिससे कोई निकल न सके।

सेवा का समय

1

वर्तमान अवसर

अभी सेवा का समय है। जितनी सेवा करनी है, अधिक से अधिक कर लें।

2

आने वाली चुनौतियां

समस्याएं ऐसी खड़ी होंगी जो सेवा में बाधा डालेंगी।

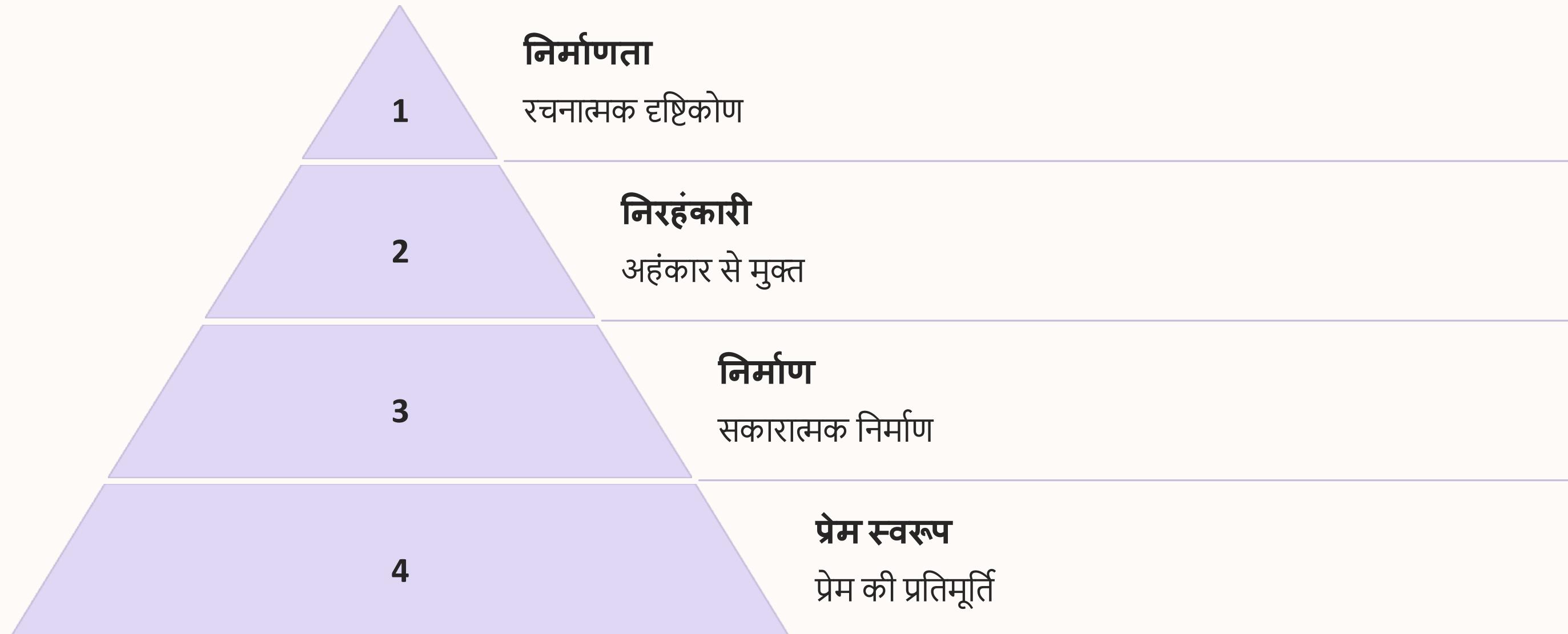
3

समय की कीमत

सेवा का समय भी होली हो जाएगा - यानी बीत जाएगा।



मालिक और बालक



मालिक बनकर सेवा करें, लेकिन बालकपन भी पूरा होना चाहिए। न अटकना है, न छूटना है।

वतन की होली



फूलों की पहाड़ी

वतन में एक सुंदर फूलों की पहाड़ी बनाई गई थी। उसमें साकार को छिपाया गया था।



छिपने का खेल

संदेशियों ने बहुत ढूँढा, फिर अचानक फूलों के बीच साकार दिखाई दिए।



अमृत और मुलाकात

अव्यक्त बापदादा हरेक को अमृत और भोग दे रहे थे। एक-एक से मुलाकात भी कर रहे थे।

सच्ची होली मनाना: बीती को बीती करना

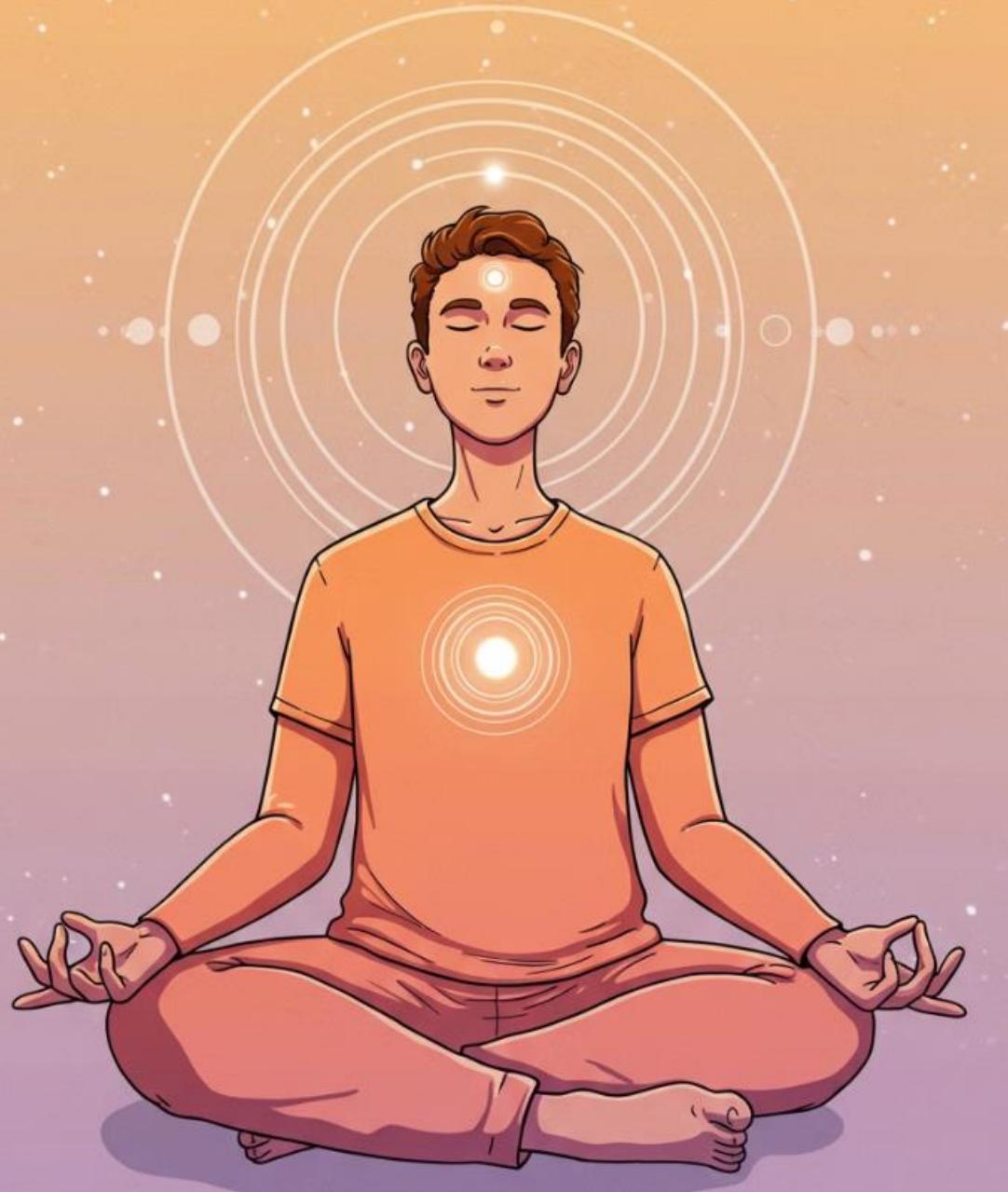
• • •

23 MARCH 1970

बापदादा हर एक के पुरुषार्थ की स्पीड और स्थिति की स्पिरिट देख रहे हैं।
जितनी स्पिरिट होगी, उतनी स्पीड भी होगी।
स्पीड तेज़ होने से सर्विस की सफलता तेज़ होगी।



“अत्यक्त बापदादा मुरली”



होली का वास्तविक अर्थ

1

बीती को बीती करना

होली मनाना अर्थात् सदा के लिए बीती सो बीती का पाठ पक्का करना। जो बात हो गयी, बीत गयी उसको बिलकुल खत्म कर देना।

3

पुरुषार्थ में बाधा

पुरुषार्थ की स्पीड को ढीला करने वाली मुख्य बात है – बीती हुई बात को चिंतन में लाना।

2

पुरुषार्थ की स्पीड

हर दिवस पर पुरुषार्थ को बदलने के लिए बीती हुई बात को ऐसे महसूस करो जैसे बहुत पुरानी कोई जन्म की बात है।

होली के तीन महत्वपूर्ण पहलू

रंग लगाना

बीती को बीती करने का रंग लगाना। इस रंग को पक्का लगाना ही होली मनाना है।

जलाना

पुरानी बातों को जलाकर समाप्त करना। जलाने के बाद ही मनाना होता है।

मिठाई खाना

जब बीती को बीती करने का रंग लग जाता है, तो मधुरता का गुण स्वतः ही आ जाता है।



मधुरता का महत्व



नयनों से मधुरता

सरलचित बनने से नयनों में मधुरता प्रत्यक्ष रूप में देखने में आती है।



मुख से मधुरता

बीती को बीती करने से वाणी में मधुरता आती है, जो दूसरों को प्रभावित करती है।



चलन से मधुरता

जब व्यक्ति अपनी और दूसरों की बीती को नहीं देखता, तो उसके व्यवहार में मधुरता आती है।

मंगल मिलन का अर्थ

संस्कारों का मिलन

मंगल मिलन का अर्थ है संस्कारों का मिलन। भिन्न-भिन्न संस्कारों के कारण ही एक दो से दूर होते हैं।

रंग और मधुरता का प्रभाव

जब बीती को बीती करने का रंग लग जाता है और मधुरता आ जाती है, तब संस्कारों का मिलन होता है।

सम्मेलन का उद्देश्य

बापदादा ने यह भट्टी संस्कार मिलन के लिए बनाई है। जब संस्कार मिलन होगा, तब जयजयकार होगी।





सिद्धि प्राप्ति का रहस्य

1

पुरुषार्थ की विधि

जब पुरुषार्थ की विधि सम्पूर्ण हो जाती है, तब सिद्धि प्राप्त होती है।

2

देवियों की भूमिका

देवियाँ स्वयं सिद्धि प्राप्त की हुई होती हैं, तभी दूसरों को रिद्धि-सिद्धि दे सकती हैं।

3

संस्कारों का मिलन

तुम्हारे पुरुषार्थ की सिद्धि तब होगी जब संस्कारों का मिलन होगा।

प्रत्यक्षता का समय

1

भक्तों की क्यू

सबसे ज्यादा भक्तों की क्यू देवियों के मंदिर में लगती है, जो बच्चों के यादगार रूप पर ही लगती है।

2

संस्कारों का मिलन

यह क्यू तब लगेगी जब संस्कार न मिलने का एक शब्द भी निकल जायेगा।

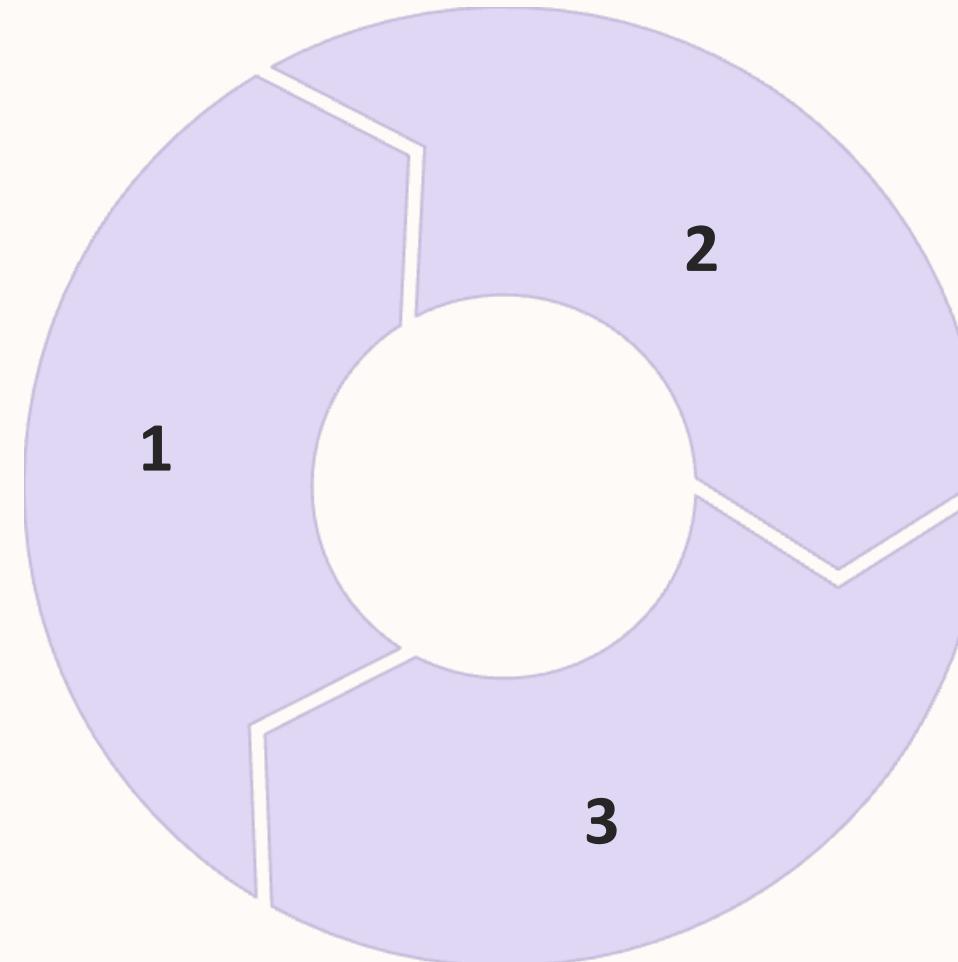
3

अंतिम सिद्धि

इस भट्टी में अंतिम सिद्धि का स्वरूप बनकर दिखाना है। यह संगठन संस्कारों को मिलाने के लिए है।

संस्कारों को मिलाने की विधि

भुलाना
पुरानी बातों को भुलाकर आगे बढ़ना।



मिटाना

नकारात्मक संस्कारों को मिटाना।

समाना

श्रेष्ठ संस्कारों को अपने में समाना।

संस्कारों को मिलाने के लिए दिलों का मिलन करना पड़ेगा। कुछ मिटाना पड़ेगा, कुछ भुलाना पड़ेगा, कुछ समाना पड़ेगा - तब यह संस्कार मिल ही जायेंगे।

अंतिम स्थिति की प्राप्ति

स्वीकार करना

एक दो की बातों को स्वीकार करना अंतिम स्थिति को समीप लाने का माध्यम है।

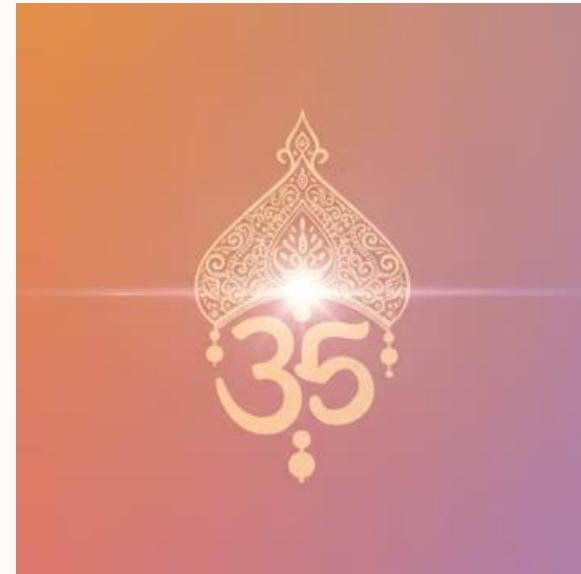
सत्कार देना

एक दो को सत्कार देना ही भविष्य का अधिकार लेना है।

सम्पूर्णता और सफलता

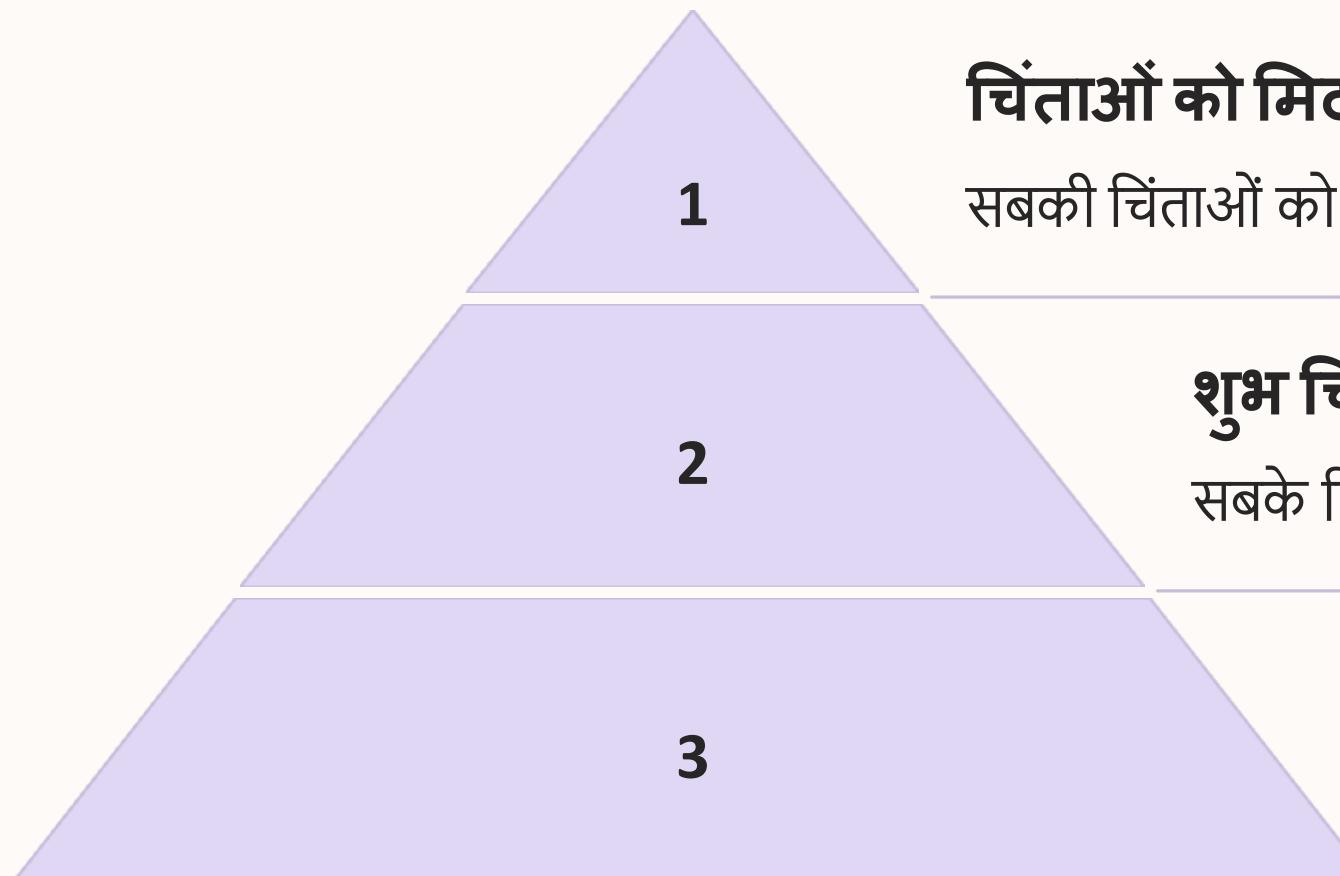
स्वीकार करना और सत्कार देना - यह दोनों बातें आने से सम्पूर्णता और सफलता समीप आती हैं।

शुभ चिन्तक ग्रुप की विशेषता



इस भट्टी को तिलक के बजाय चिन्दी लगानी है। तिलक छोटा होता है, चिन्दी बड़ी होती है। बड़ेपन की निशानी चिन्दी है। आप सभी सर्व के शुभ चिन्तक हो, सर्विसेबुल अर्थात् शुभ चिन्तक।

शुभ चिन्तक का कर्तव्य



आपके शुभ चिन्तक बनने से सभी की चिंताएं मिटती हैं। आप सभी की चिंताओं को मिटाने वाली शुभ चिन्तक हो।
इस ग्रुप का स्लोगन है - "बालक सो मालिक"।

त्रिमूर्ति कर्तव्य

1

स्थापना

नए संस्कारों की स्थापना करना

2

पालना

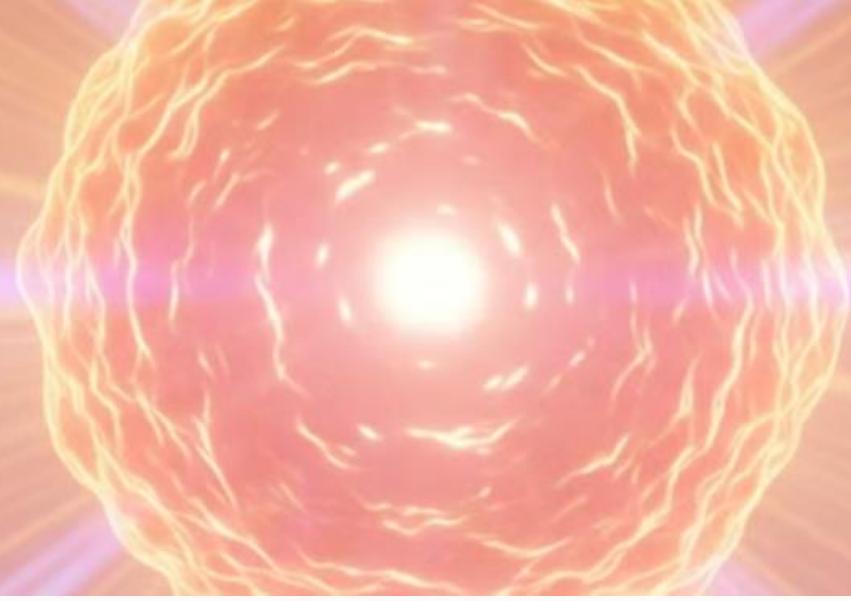
श्रेष्ठ संस्कारों की पालना करना

3

समाप्ति

पुराने विकारों का विनाश करना

समाप्ति करने वाला और फिर स्थापना करने वाला यह ग्रुप है। समाप्ति क्या करनी है, पालना क्या करनी है और स्थापना क्या करनी है - यह तीनों ही टॉपिक्स इस भट्टी में स्पष्ट करनी है।



बिंदी रूप की महता

1

स्मृति

अपनी आत्मिक स्थिति की स्मृति में रहना।

2

स्थिति

बिंदु रूप में स्थित होकर कर्म करना।

3

कर्तव्य

त्रिमूर्ति कर्तव्य को निभाना।

बिंदी रूप बनकर के ही यह तीनों कर्तव्य सफल कर सकेंगे। इसलिए आपके इस कर्तव्य के यादगार में चिन्दी दे रहे हैं - स्मृति भी, स्थिति भी और कर्तव्य भी तीनों ही इस यादगार में समाये हुए हैं।

श्रेष्ठ आत्माओं के समीप बनना



सेरेमनी का अर्थ

यह सौभाग्य समझो कि ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं के समीप बनने का ड्रामा में पार्ट है।



अपने को श्रेष्ठ बनाना

सेरेमनी देखना अर्थात् अपने को ऐसा श्रेष्ठ बनाना। ऐसा अपने को बनाओ जो इस ग्रुप के जैसे समीप हो।



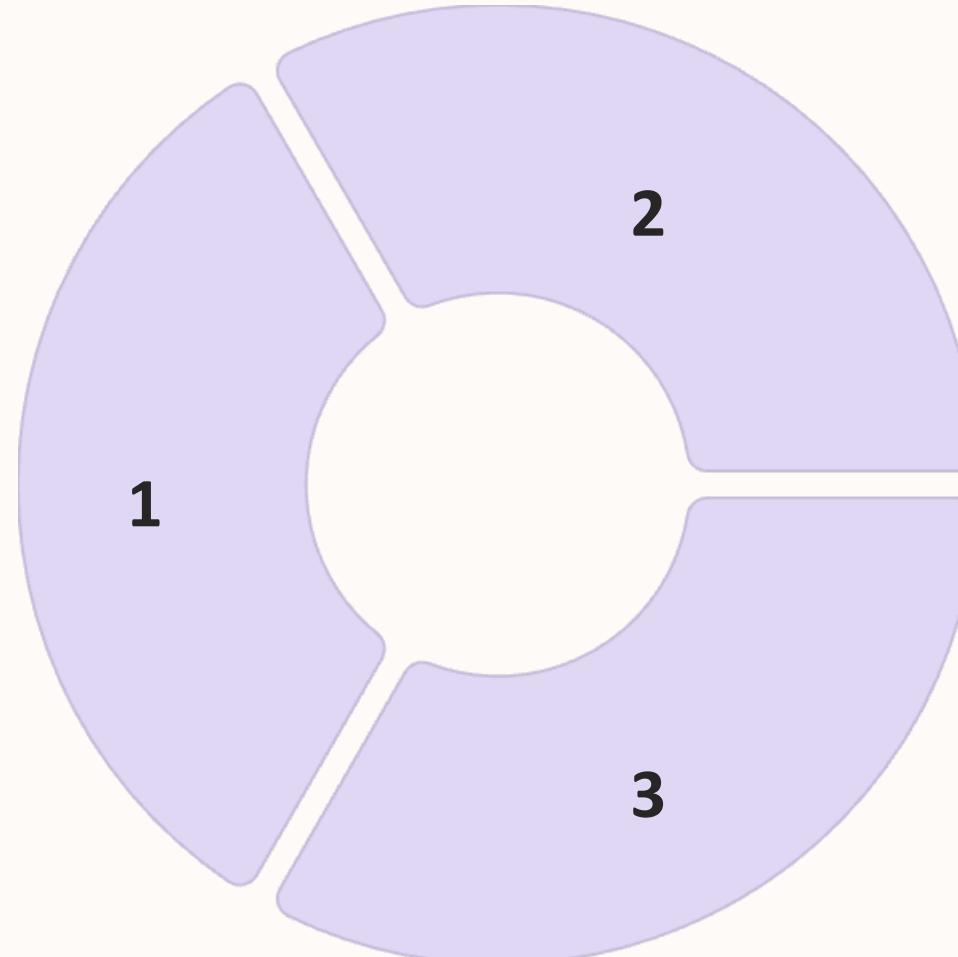
बापदादा के दिल पसंद रत्न

देखने वाली आत्माएं भी श्रेष्ठ और समीप हैं। बापदादा के दिल पसंद रत्न हैं।

तख्त नशीन बनने का रहस्य

दिल तख्त नशीन

साकार में थी दिल तख्त नशीन, जहां स्नेह का बंधन था।



बालक को मालिक बनाया, अब से तख्तनशीन बनाते हैं। संगम पर तख्त नशीन अभी बनते हैं। ड्रामा में जो पार्ट नूँधा हुआ है वह कितना रहस्ययुक्त है।

सर्विस की तख्त नशीन

अब हैं सर्विस की तख्त नशीन, जहां कर्तव्य का बंधन है।

राज्य तख्त नशीन

भविष्य में होंगी राज्य तख्त नशीन, जहां अधिकार होगा।

त्रिमूर्ति त्रिलोक के अधिकारी कौन?

1 नशा और निशाना

त्रिमूर्ति त्रिलोक के अधिकारी कौन बनता है? जो सदैव नशे में है और निशाना बिलकुल एक्यूरेट रहता है।

2 योग और ज्ञान

नशा और निशाना, योग और ज्ञान - इन दोनों का संतुलन आवश्यक है।

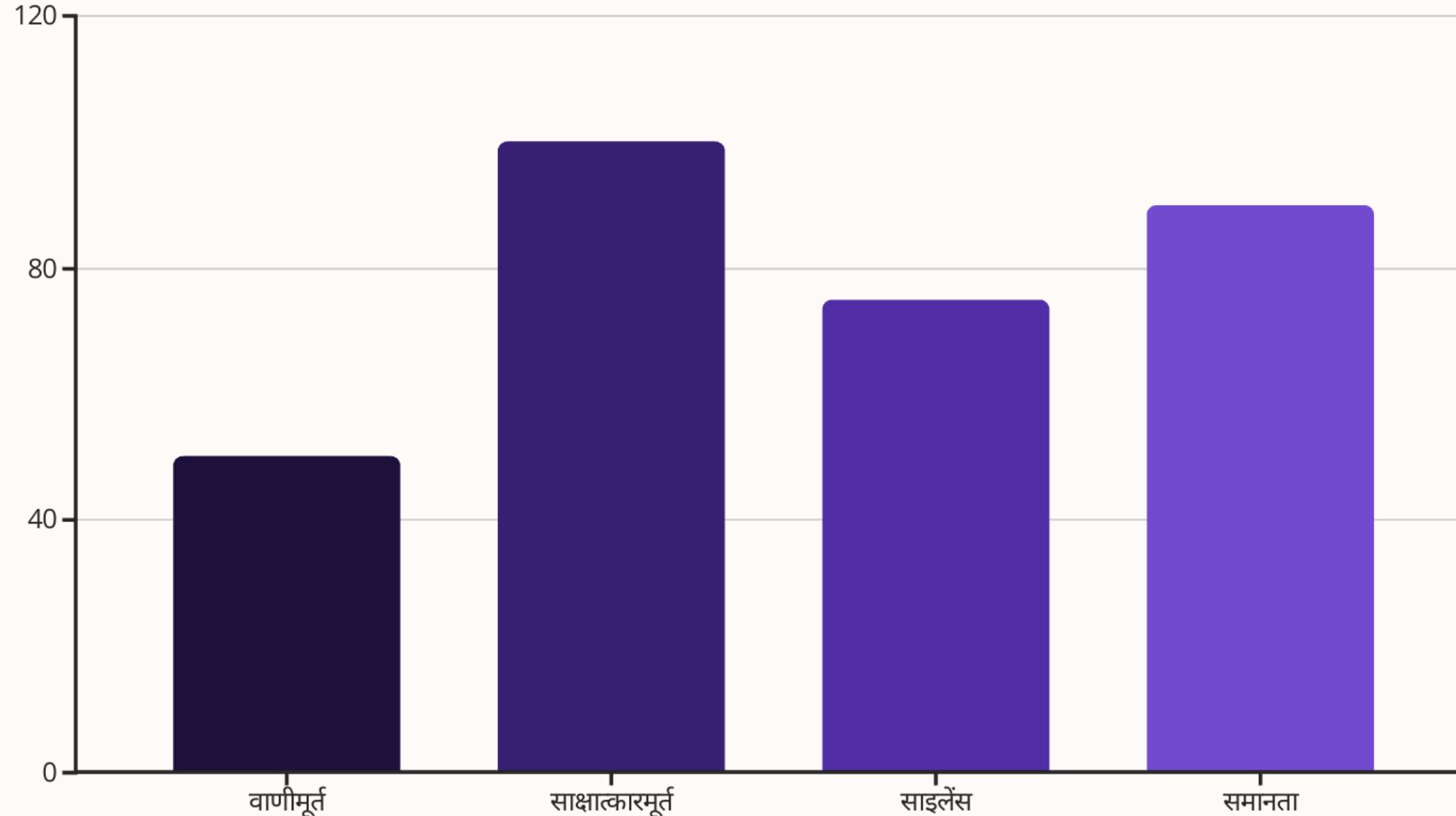
3 त्रिमूर्ति त्रिलोक

ऐसे बच्चे ही तीनों त्रिलोक के अधिकारी बनते हैं। त्रिमूर्ति त्रिलोक भी है।

4 बापदादा का नशा

बाप त्रिलोक के अधिकारी बच्चों को देखते हैं तो बापदादा को भी नशा होता है कि ऐसे लायक बच्चे हैं।

साक्षात्कार मूर्त बनने की विधि



अब तक वाणीमूर्ति बने हो, फिर बनेंगे साक्षात्कार मूर्ति। अभी वाणी से औरों को साक्षात्कार होता है, लेकिन फिर होंगा साइलेंस से साक्षात्कार। साक्षात्कार मूर्ति बनने के लिए साक्षात् बापदादा समान बनना है।

समानता की चेकिंग

समानता

जितनी समानता

समानता से

समानता

स्वमान

उतना स्वमान

अपने स्वमान का पता

समीपता की निशानी

अब चेकिंग क्या करनी है? समानता की चेकिंग करनी है। जितनी समानता उतना स्वमान मिलेगा। समानता से अपने स्वमान का पता लगा सकते हैं। समानता कहां तक आई है और कहां तक लानी है, यही चेकिंग करना है।



लाइट और माईट का संतुलन

- 1
- 2
- 3

नॉलेज की लाइट

अभी नॉलेज तो आ गयी है, लेकिन स्थिति तो नहीं है।
नॉलेज से लाइट आई है।

माईट की कमी

अभी माईट नहीं आई है। जब लाइट और माईट दोनों में एकरस होंगे तब नंबर आउट होंगे।

सफलता का आधार

अभी औरों को भी नॉलेज की लाइट दे सकते हो, माईट नहीं दे सकते। इसलिए सफलता भी उसी अनुसार होती है।

अंतिम पुरुषार्थः साक्षात्कार मूर्त बनना

साक्षी अवस्था

जितना साक्षी अवस्था ज्यादा रहेगी, उतना समझो कि साक्षात्कार मूर्त बनने वाले हैं।

अंतिम पुरुषार्थ

अब अंतिम पुरुषार्थ यह रह गया है
- साक्षात्कार मूर्त बनना।

दोहरा साक्षात्कार

साक्षात्कार मूर्त बन बापदादा का साक्षात्कार और अपना साक्षात्कार कराना है।

स्पष्टता श्रेष्ठता के नजदीक है। जितनी स्पष्टता होती है, उतनी सफलता भी होती है। सफलता फिर समीपता में लाती है। समीप रत्नों की निशानी समानता से मालूम पड़ेगी।



हो ली – I Belong,
मैं आत्मा परमात्मा की हो ली
हो ली – Past is Past, बीती बातें हो ली

पुरानी बातें भुलाकर, आज हम
प्यार और सम्मान का रंग
एक दूजे को लगाएं।

होली सिर्फ आज नहीं, होली हर रोज़ मनाएं,
खुद को और दूसरों को Holy बनाएं।



सच्ची होली कैसे मनायें?

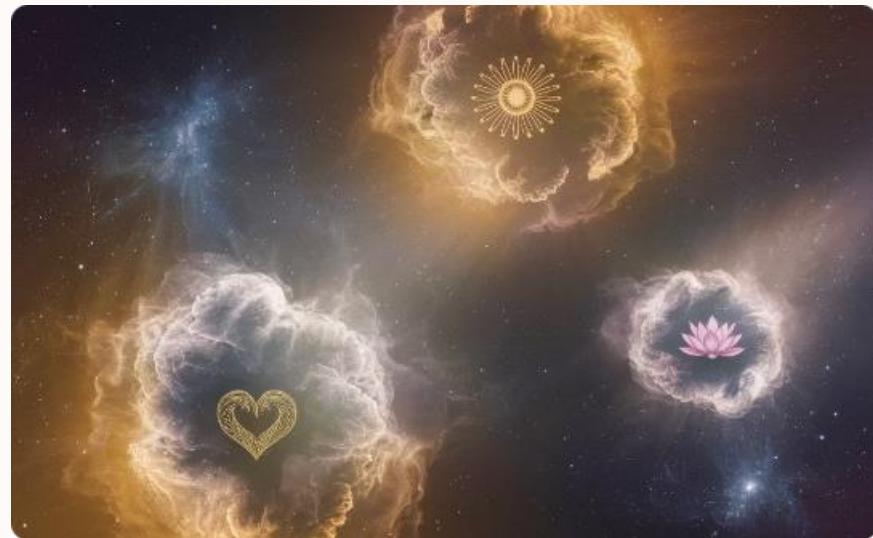
21 MARCH 1981

आज बेगमपुर के बादशाह अपने बेगमपुर के मालिकों से मिलने आये हैं। ऐसे मालिकों को देख बापदादा भी खुश हो रहे हैं कि हर बालक, मालिक बन गये हैं। संगमयुग बेगमपुर, मूलवतन बेगमपुर, स्वर्ग बेगमपुर, तीनों के मालिक। बापदादा ऐसे मालिकों को देख, मालिकों को आज के होली की मुबारक देते हैं।

SB

अव्यक्त बापदादा

सच्ची होली कैसे मनायें?



बेगमपुर के मालिक

आज बेगमपुर के बादशाह अपने बेगमपुर के मालिकों से मिलने आये हैं

मास्टर का परिवर्तन

हर बालक, मालिक बन गये हैं, बापदादा की नज़र में विशेष

तीन लोकों के मालिक

संगमयुग बेगमपुर, मूलवतन बेगमपुर, स्वर्ग बेगमपुर, तीनों के मालिक

होली का सच्चा अर्थ

रंग की नहीं, 'हो-लिए' की मुबारक

बापदादा रंग की होली की मुबारक नहीं देते, बल्कि 'हो-लिए' की मुबारक देते हैं। सब बाप के हो लिए अर्थात् हो गये।

खुशी की पिचकारी

आपकी खुशी की पिचकारी मनुष्य को कितना परिवर्तन कर देव आत्मा बना देती है।

पास्ट इज पास्ट

जब होली अर्थात् पास्ट इज पास्ट कर बाप के होलिए तब खुशी की पिचकारी लगाते हो।



खुशी की पिचकारियाँ

1

आत्मिक खुशी

मैं एक श्रेष्ठ आत्मा हूँ, मैं विश्व के मालिक का बालक हूँ।

2

ज्ञान की खुशी

मैं सृष्टि के आदि मध्य अन्त का नालेजफुल हूँ।

3

श्रेष्ठ पार्ट की खुशी

ऊँचे ते ऊँचे बाप के साथ श्रेष्ठ मंच पर मेरा हीरो पार्ट है।

तीन प्रकार की पिचकारियाँ

खुशी की पिचकारी

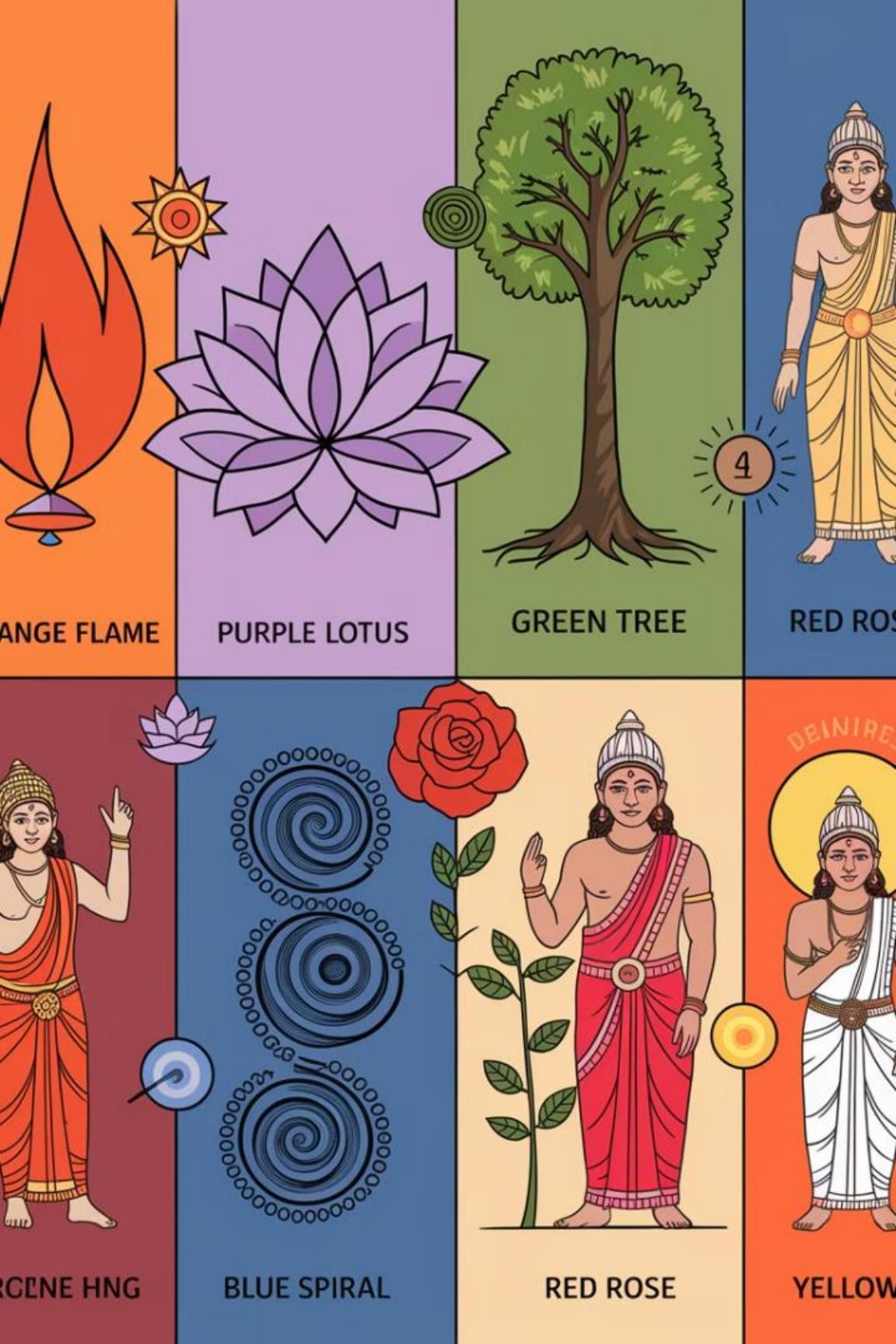
एक-दो को लगाते हो, जिससे आत्मिक खुशी का अनुभव होता है।

प्राप्तियों की पिचकारी

अतीन्द्रिय सुख, आत्मा और परमात्मा के मिलन का रूहानी प्रेम का अनुभव।

शक्तियों की पिचकारी

सर्व शक्तियों का अनुभव, जो आत्मा को शक्तिशाली बनाता है।



संगमयुग का महत्व

1

मंगल मिलन का युग

संगमयुग ही बाप और बच्चों के मंगल मिलन का युग है।

2

होली डे का समय

संगम पर होली और सतयुग मे होगी हाली डे। अभी हाली डे नहीं मनाना है।

3

मेहनत का समय

अभी तो मेहनत ही मुहब्बत के कारण हाली डे की अनुभूति कराती है।

मेहनत का महत्व



मुहब्बत से मेहनत

बापदादा से मुहब्बत होने के कारण यह मेहनत भी एक खेल लग रहा था।

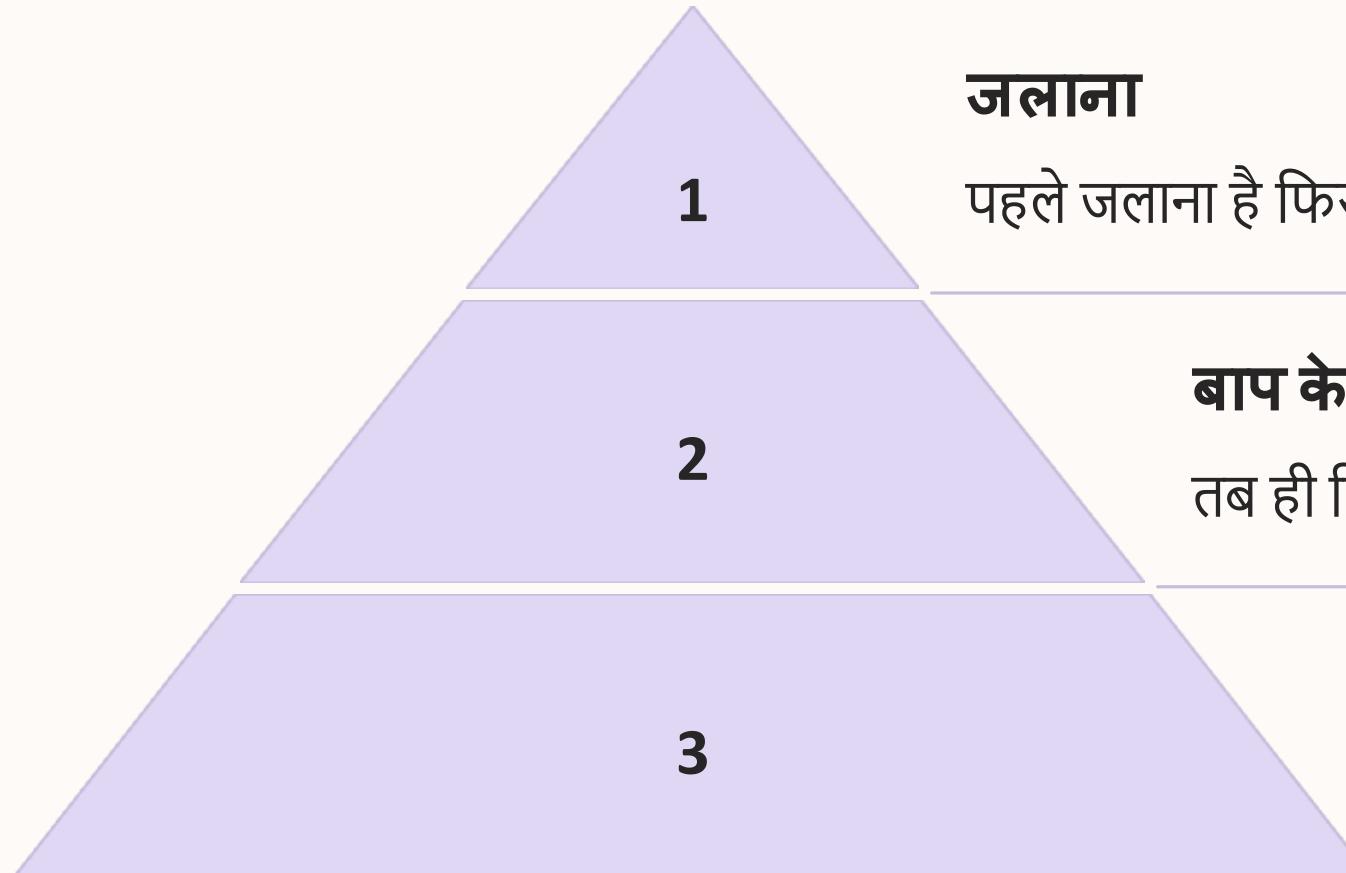
फ्रीडम का साधन

संगमयुग की जितनी मेहनत उतनी फ्रीडम है। बुद्धि और शरीर बिजी रहते उतना व्यर्थ संकल्पों से फ्री रहते हैं।

फल की प्राप्ति

अभी जो मेहनत की उसका फल सजा सजाया महल मिलेगा।

होली मनाने का सही तरीका



यादगार और यथार्थ

यादगार होली

लोग देवताओं के रूप साँग के रूप में बनाते हैं।
मस्तक पर लाइट जलाते हैं।

यथार्थ होली

जब मस्तक की ज्योति जगती तो देवता बन जाते हो।
बाप के हो लिए तो देवता बन जाते हो।

विनाश और स्थापना

1

विनाश की तैयारी

विनाश के निमित्त आत्माओं के साथ-साथ स्थापना की तैयारी।

2

स्थापना का कार्य

आप स्थापना करने वाली आत्मायें अपना झण्डा बुलल्द करेंगी।

3

विशेष आत्माओं का आगमन

विशेष आत्माओं को लाने से सेवाकेन्द्र भी वी.आई.पी. हो जायेगा।

सेवा का महत्व



स्व उन्नति

सेवा करने से एक तो स्व उन्नति होती है।



अनेक आत्माओं की उन्नति

साथ-साथ अनेक आत्माओं की भी उन्नति हो जाती है।



शेयर जमा

दूसरे की जो उन्नति होती उसका भी शेयर जमा हो जाता।



याद और सेवा का महत्व

1 ब्राह्मण की पहचान

ब्राह्मण वह जो याद और सेवा में
सदा तत्पर रहें।

2 मेवा की प्राप्ति

याद में रहकर सेवा करना
अर्थात् मेवा ही मेवा है।

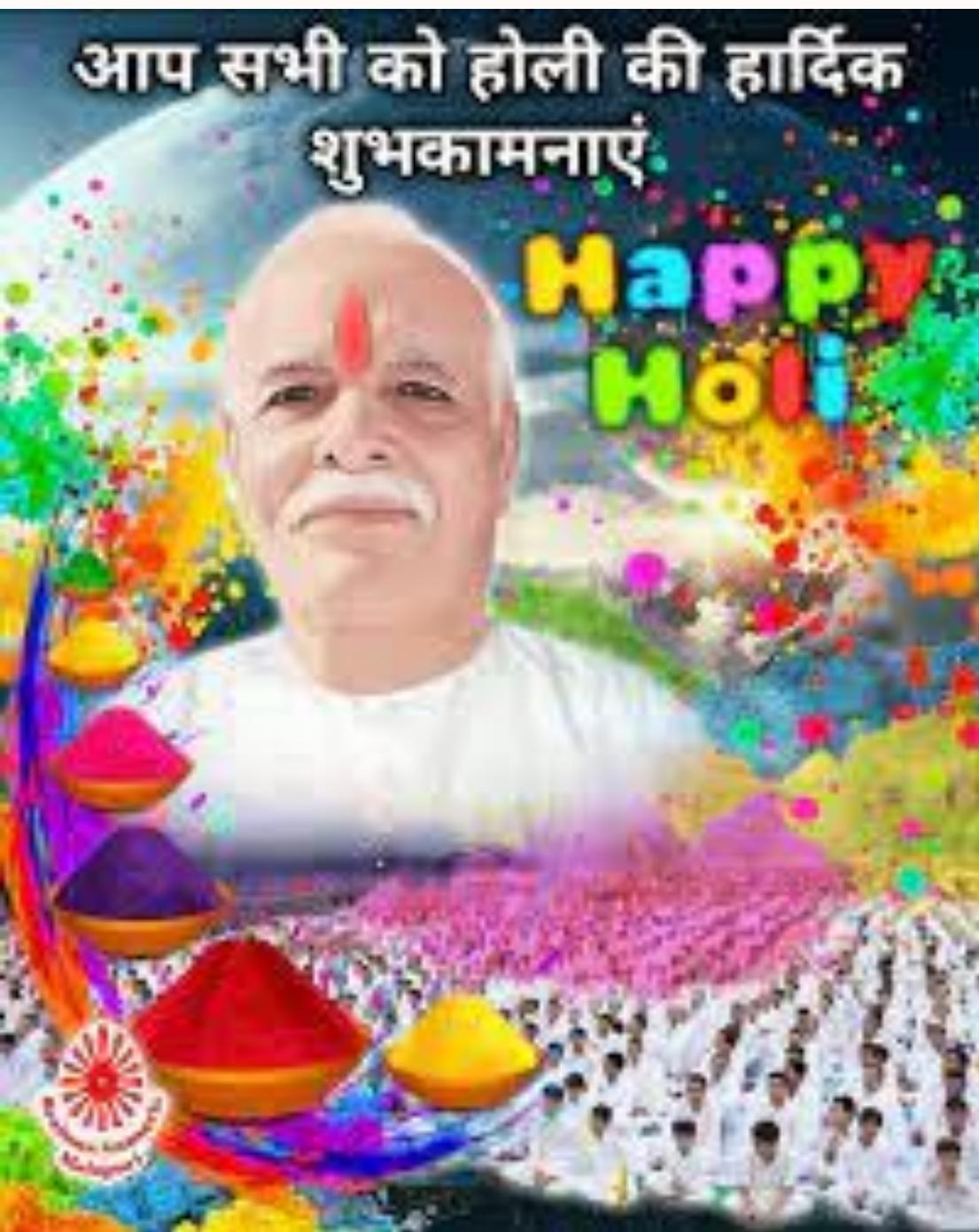
3 मेहनत का परिवर्तन

जैसे मेहनत मुहब्बत में बदल जाती, वैसे सेवा मेवा में बदल जाती।

अंतिम संदेश

सी फादर और फालो फादर करने से चढ़ती कला का अनुभव करेंगे।

जब सी फादर और फालो फादर है तो उड़ते रहेंगे। कभी भी आत्मा को नहीं देखना। क्योंकि आत्मायें सब पुरुषार्थी हैं। पुरुषार्थी को फॉलो करेंगे तो पुरुषार्थी में अच्छाई भी होती और कुछ कमी भी होती है। सम्पन्न नहीं। तो फालो फादर, न कि ब्रदर या सिस्टर। जैसे फादर एकरस है तो फालो फादर करने वाले भी एकरस रहेंगे।



होली मनाने और जलाने की अलौकिक रीति 9 MARCH 1982

होली के उपलक्ष्य में अव्यक्त बापदादा के उच्चारे हुए महावाक्य हमें होली के गहन अर्थ और आध्यात्मिक महत्व को समझने में मदद करते हैं। यह प्रस्तुति हमें होली के रूहानी पहलुओं और इसके माध्यम से आत्मिक विकास के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देगी।



अव्यक्त बापदादा



होलीहंसः विशेष आत्माएँ

ज्ञान के रत्न

होलीहंस की बुद्धि में सदा ज्ञान के मोती, माणिक और रत्न भरे होते हैं।

कर्माई का समय

होलीहंस होली मनाते हुए आध्यात्मिक कर्माई भी करते हैं, गंवाते नहीं हैं।

संगमयुग की होली

बापदादा सारे संगमयुग होलीहंसों के साथ होली मनाते रहते हैं।

रुहानी पिचकारी

प्रेम की धारा

बच्चों के नयनों और मस्तक की पिचकारी द्वारा प्रेम की धारा और अति स्नेह की सुगंधित पिचकारी बापदादा तक पहुँचती है।

अष्ट शक्तियों का रंग

बापदादा रिटर्न में सर्व बच्चों को नयनों की पिचकारी द्वारा अष्ट शक्ति अर्थात् अष्ट रंगों की पिचकारी से खेलते हैं।

रूहानी गुलाब बनना

1

पुष्पों की वर्षा

बापदादा पुष्पों की वर्षा कर होली मनाने के बजाए हरेक बच्चे को सदा के लिए रूहाब द्वारा रूहानी गुलाब बना देते हैं।

2

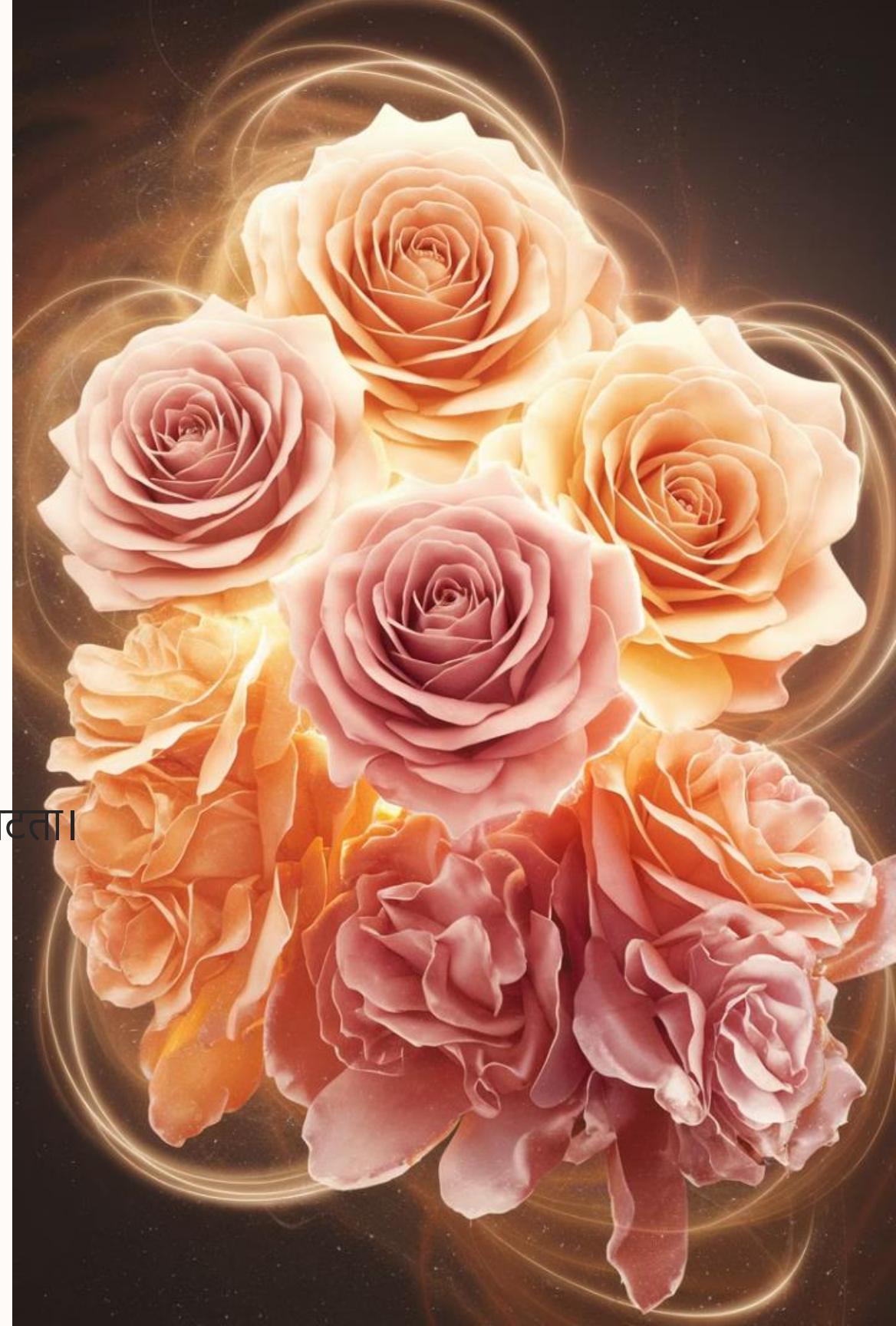
अविनाशी तिलक

होलीहंस सदा तिलकधारी होते हैं, जिनका अविनाशी तिलक कभी नहीं मिटता।

3

विश्व को रोशनी

होलीहंस बापदादा के गले का हार बनकर विश्व के आगे रोशनी फैलाते हैं।





होली जलाना और मनाना

- 1
- 2
- 3

संकल्प की तीली

व्यर्थ संकल्पों और कमजोरियों को संकल्प की तीली से जलाना।

सम्बन्ध और अभ्यास

बाप के साथ सम्पर्क सम्बन्ध और अभ्यास की तीली से सफलता प्राप्त करना।

'होली' बनाना

जलाना ही मनाना और स्व को सदा 'होली' बनाना है।

मेहनत से मुहब्बत तक

1

भक्ति का समय

63 जन्मों की मेहनत और भक्ति का समय समाप्त।

2

ज्ञान का फल

भक्ति का फल 'ज्ञान' अर्थात् मुहब्बत, न कि मेहनत।

3

फलीभूत बनना

अब बाप की मुहब्बत द्वारा फल खाना और सदा फलीभूत बनना।

गुणों के गहने



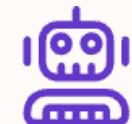
श्रृंगार की निशानी

गुणों के गहनों से सजी
सजाई रूहानी मूर्ति
बनना, यही 16 श्रृंगार है।



सर्वगुण सम्पन्न

16 कला सम्पन्न, सर्वगुण
सम्पन्न बनकर सदा
सुहागिन रहना।



रूहानी गुलाब

स्वयं ही गुलाब बनकर
सदा ज्ञान के रंग में रंगे
रहना।

बिन्दी का महत्व

बड़े व्यापारी

आप सब बड़े ते बड़े व्यापारी हो, जो विश्व के अंदर सबसे बड़ा बिजनेस करते हैं।

बिन्दी लगाना

मैं भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी - यह सहज और श्रेष्ठ अभ्यास है।

याद की शक्ति

बिन्दी लगाने से याद की शक्ति बढ़ती है, सहयोग मिलता है और सेवा भी होती है।

होली उत्सवः पवित्र बनने और बनाने का यादगार होली

उत्सव पवित्र बनने, बनाने का यादगार 15 MARCH 1984

1984



अव्यक्त बापदादा

होली उत्सवः पवित्र बनने और बनाने का यादगार



पवित्रता का प्रतीक

होली एक ऐसा उत्सव है जो हमें पवित्र बनने और दूसरों को पवित्र बनाने का संदेश देता है।

संगमयुग का प्रतीक

यह संगमयुग का प्रतीक है, जहाँ हम होलीएस्ट बाप के साथ होली डे मनाते हैं।

सदा का अनुभव

यह केवल एक या दो दिन का त्योहार नहीं, बल्कि एक ऐसा अनुभव है जो हमें सदा के लिए पवित्र बना देता है।

होली का वास्तविक अर्थ

अपवित्रता का त्याग

होली मनाने से पहले हमें
अपवित्रता और बुराई को भस्म
करना होता है।

पवित्रता का रंग

जब तक हम अपवित्रता को पूरी
तरह से समाप्त नहीं करते, तब
तक पवित्रता का रंग नहीं चढ़
सकता।

एकता का भाव

होली हमें याद दिलाती है कि हम सभी एक ही परिवार के हैं, भाई-भाई के समान।

आध्यात्मिक पिचकारी

दिव्य बुद्धि की पिचकारी

आपकी दिव्य बुद्धि रूपी पिचकारी में अविनाशी रंग भरा हुआ है। यह रंग संग के अनुभवों से भरा होता है।

आत्माओं को रंगना

इस पिचकारी से आप किसी भी आत्मा को दृष्टि, वृत्ति और वाणी द्वारा रंग सकते हैं, जिससे वह सदा के लिए पवित्र बन जाए।

होली मूँड़: सदा खुशी और हल्कापन

निरंतर उत्सव

आप सभी सदा मनाने के लिए होली और हैपी मूँड़ में रहते हैं। मूँड़ बनानी नहीं पड़ती, यह स्वाभाविक हो जाता है।

होली मूँड़ की विशेषताएँ

सदा हल्की, निश्चिंत, सर्व खजानों से संपन्न, और बेहद के स्वराज्य अधिकारी की स्थिति।

मूँड़ परिवर्तन

विभिन्न मूँड़ बदलने के बजाय, आप सदा हैपी और होली मूँड़ में रहते हैं।

अविनाशी उत्सव का अनुभव

1 मिटाना

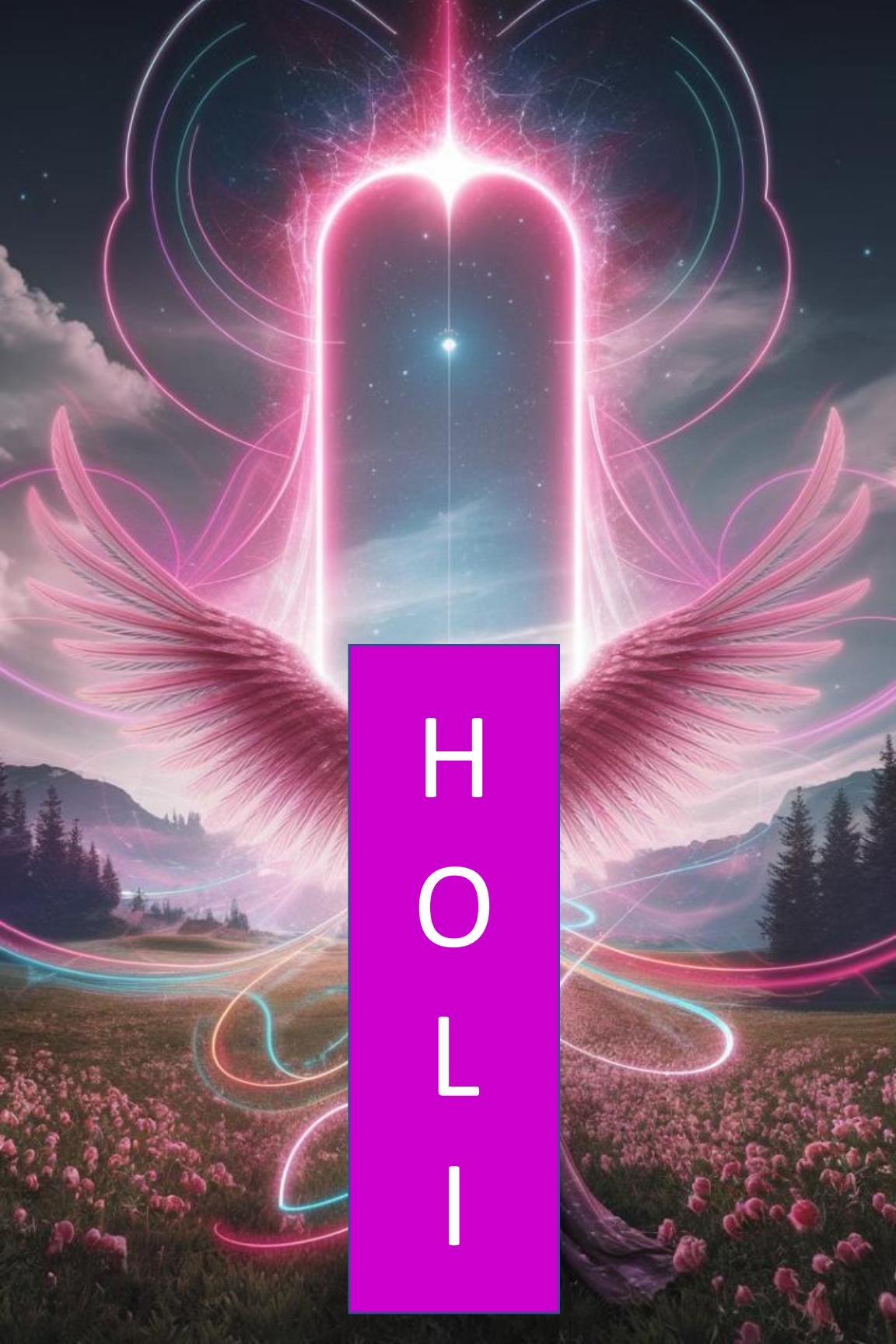
पुराने विकारों और नकारात्मकता को मिटाना।

2 मनाना

नए गुणों और शक्तियों को अपनाकर खुशी मनाना।

3 मिलन मनाना

बाप के साथ और एक-दूसरे के साथ आत्मिक मिलन का आनंद लेना।



ज्ञान के रंग में रंगना



ज्ञान का रंग

आध्यात्मिक ज्ञान से अपने को
और दूसरों को रंगना।



खुशी का रंग

सदा प्रसन्नता और आनंद में रहना
और इसे फैलाना।



एकता का रंग

सभी आत्माओं के साथ एकता
और भाईचारे का भाव रखना।

यादगार उत्सव का महत्व

1

चैतन्य अनुभव

वर्तमान में श्रेष्ठ आत्मा बनना।

2

यादगार देखना

अपने पूर्व के श्रेष्ठ कर्मों का यादगार देखना।

3

महिमा सुनना

अपनी ही महिमा को कल्प पहले की तरह सुनना।

सदा होली मूड में रहना

- 1
- 2
- 3
- 4

खुश रहो

हर परिस्थिति में प्रसन्न रहें।

हल्के रहो

किसी भी बोझ को अपने ऊपर न रखें।

मूड ऑफ न करें

नकारात्मक विचारों को आने न दें।

लाइट मूड

सदा प्रकाशमान और उत्साहित रहें।

बापदादा का संदेश

सभी ज्ञान के रंग में रंगे हुए, सदा बाप के संग के रंग में रहने वाले, बाप समान संपन्न बन औरों को भी अविनाशी रंग में रंगने वाले, सदा होली डे मनाने वाले, होली हंस आत्माओं को बापदादा की सदा हैपी और होली रहने की मुबारक हो।

बापदादा हमें याद दिलाते हैं कि हम सदा खुश रहें, हल्के रहें, और अपने जीवन को एक निरंतर उत्सव की तरह जीएं। वे हमें उमंग और उत्साह में रहने की प्रेरणा देते हैं, ताकि हम न केवल स्वयं को बल्कि दूसरों को भी इस दिव्य अनुभव से भर सकें।

होली का रूहानी रहस्य

6 FEB 1985

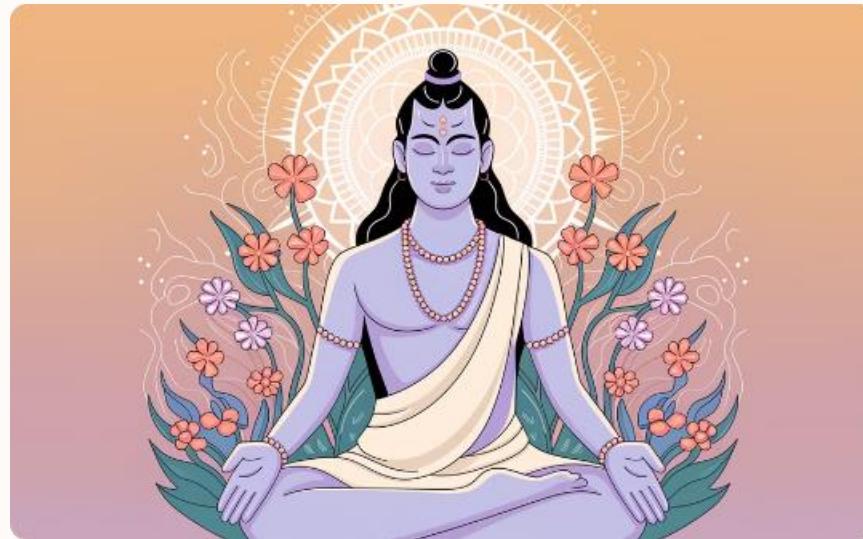
पतित पावन शिव बाबा अपने बच्चों को होली के रूहानी रहस्य का दिव्य ज्ञान दे रहे हैं। संगमयुग होली युग है, जहां हर दिन उत्साह और उमंग से भरा होता है। आइए जानें होली के तीन प्रकार और उनका आध्यात्मिक महत्व।



अव्यक्त बापदादा

होली का रूहानी रहस्य

पतित पावन शिव बाबा अपने बच्चों को होली के रूहानी रहस्य का दिव्य ज्ञान दे रहे हैं।



दिव्य ज्ञान का प्रकाश

शिव बाबा द्वारा दिया गया
होली का रूहानी रहस्य



संगमयुग का उत्सव

संगमयुग होली युग है, जहां हर दिन उत्साह
और उमंग से भरा होता है



त्रिमूर्ति स्वरूप

होली के तीन प्रकार का आध्यात्मिक महत्व



संगमयुग: उत्सव का युग

1

उत्साह भरा जीवन

संगमयुग में हर दिन, हर समय उत्साह से भरा होता है। यह ब्राह्मण जीवन उमंग और खुशी से परिपूर्ण है।

2

सदा खुशियों में नाचना

ईश्वरीय जीवन में सदा ज्ञान का अमृत पीते, सुख के गीत गाते, और दिल के स्नेह से जीवन बिताते हैं।

3

होली बनना

आप केवल होली मनाते नहीं, बल्कि स्वयं होली बन जाते हो और दूसरों को भी होली बनाते हो।

होली के तीन प्रकार

1 जलाने की होली

पुराने स्वभाव और संस्कारों को योग अग्नि से भस्म करना।

2 रंग लगाने की होली

बाप के संग का रंग लगाना, ज्ञान और गुणों से स्वयं को रंगना।

3 मंगल मिलन की होली

आत्मा और परमात्मा का, बाप और बच्चों का श्रेष्ठ मिलन मनाना।

जलाने की होली का रहानी अर्थ



जब आप बाप की बनती हो, तो पहले पुराने स्वभाव और संस्कारों को योग अग्नि से भस्म करते हो। यह आत्मिक शुद्धि का प्रतीक है, जो आपको एक नया आध्यात्मिक जन्म देता है।

रंग लगाने की होली का आध्यात्मिक महत्व

बाप का संग

याद द्वारा बाप के संग का रंग लगता है। यह रंग आपको बाप समान बना देता है।

ज्ञान और गुण

बाप ज्ञान सागर है, तो बच्चे भी संग के रंग में ज्ञान स्वरूप बन जाते हैं। बाप के गुण आपके गुण बन जाते हैं।

अविनाशी रंग

यह रूहानी रंग इतना अविनाशी है कि जन्म-जन्मांतर तक बना रहता है।

मंगल मिलन की होली

आत्मा-परमात्मा मिलन

आत्मा और परमात्मा का श्रेष्ठ मिलन का मेला सदा होता रहता है।

बाप-बच्चों का मिलन

बाप और बच्चों का प्रेममय मिलन होली का सार है।

सदा का उत्सव

यह मिलन केवल एक दिन नहीं, बल्कि संगमयुग में सदा मनाया जाता है।

होली के यादगार का महत्व

1

विशेषताओं का यादगार

आपकी हर विशेषता और गुण का अलग-अलग यादगार बना दिया गया है।

2

खुशी का प्रतीक

होली आपकी सदा की खुशी और दुःख से मुक्ति का यादगार है।

3

समानता का संदेश

होली पर सभी समान भाव में आते हैं, जो आपके भाई-भाई की स्थिति का यादगार है।

4

सेवा का प्रतीक

रंग लगाना आपकी सेवा का यादगार है, जहां आप दूसरों को ज्ञान और गुणों से रंगते हैं।

होली का रुहानी महत्व



आत्मिक परिवर्तन

पुराने स्वभाव को त्याग कर नए दैवी गुणों को धारण करना।



एकता का प्रतीक

सभी आत्माओं की समानता और एकता का संदेश।



क्षमा और मेल-मिलाप

पुरानी बातों को भूलकर नए सिरे से रिश्तों को मजबूत करना।

होली: बीती सो बीती

1

पुराना भूलना

63 जन्मों की बीती बातों को भुला देना।

2

नया जीवन

नए संस्कार, नई दुनिया में प्रवेश।

3

शुभ मिलन

आत्मा-परमात्मा का मिलन मनाना।

4

नई शुरुआत

हर दिन नए उमंग-उत्साह से जीना।

होली का एक महत्वपूर्ण संदेश है "बीती सो बीती"। यह दिन सभी पुरानी बातों को भुलाकर नई शुरुआत करने का प्रतीक है।

होली: डबल लाइट की स्थिति

हल्कापन

होली पर सभी हल्के होकर मनाते हैं, जो आपकी डबल लाइट स्थिति का यादगार है।

बोझ मुक्त

पुराने संस्कारों और विकारों के बोझ से मुक्त होकर हल्के रहना।

आनंदमय जीवन

सदा खुशी और उमंग में रहकर जीवन का आनंद लेना।

सहज उड़ान

डबल लाइट स्थिति में रहकर कर्मयोगी जीवन जीना और सहज उड़ान भरना।

होली: रूहानी सेवा का माध्यम

दृष्टि की पिचकारी

शुभ दृष्टि से दूसरों को आध्यात्मिक रंग में रंगना। प्रेम, आनंद, शांति और शक्ति का रंग लगाना।

अविनाशी रंग

ऐसा रूहानी रंग लगाना जो सदा के लिए रहे। यह रंग आत्मा को परिवर्तित कर देता है।

खुशी बांटना

अपनी खुशी से दूसरों को खुश करना। यह सबसे बड़ी सेवा है जो आप कर सकते हैं।

होली: महादानी बनने का अवसर

ज्ञान का दान

आध्यात्मिक ज्ञान बांटकर दूसरों के जीवन को रोशन करना।

गुणों का दान

अपने दैवी गुणों से दूसरों को प्रेरित करना और उनमें भी वैसे गुण जगाना।

शक्तियों का दान

आध्यात्मिक शक्तियों से दूसरों को सशक्त बनाना और उनकी मदद करना।

खुशी का दान

अपनी खुशी बांटकर दूसरों के जीवन में भी खुशियां लाना।

बापदादा कहते हैं - जितना महादानी बनेंगे उतना खजाना बढ़ता जायेगा। महादानी बनो और खजानों को बढ़ाओ।

होलीः भाग्य का उत्सव

1

63

श्रेष्ठ भाग्य

घर बैठे भगवान मिलना
सबसे बड़ा भाग्य है।

जन्म

63 जन्मों के बाद मिला
यह अलौकिक जन्म।

21

∞

जन्मों का वरदान

21 जन्मों के लिए श्रेष्ठ प्रालब्ध बनाने का अवसर। इस ईश्वरीय ज्ञान से मिली अनंत खुशियां।

अनंत खुशियां

सदा अपने भाग्य को देख हर्षित रहो। कितना बड़ा भाग्य मिला है,
इसी स्मृति में रह सदा खुश रहो।

होलीः नित्य नृतन उत्सव

- 1 नया उमंग**
हर दिन नए उमंग से भरा होता है।
- 2 नया उत्साह**
प्रतिदिन नए उत्साह से कार्य करना।
- 3 नई सेवा**
हर दिन नए तरीके से सेवा करने का अवसर।
- 4 नई प्राप्तियां**
रोज नई आध्यात्मिक प्राप्तियों का अनुभव।

संगमयुग पर हर दिन ही नया है। सदा स्वयं में वा सेवा में कोई न कोई नवीनता जरूर चाहिए। जितना अपने को उमंग उत्साह में रखेंगे उतना नई-नई टचिंग होती रहेगी।

होली का संदेश: सदा उड़ती कला

- 1 बाप का साथ
बापदादा का साथ है, हाथ है तो घबराओ नहीं।
- 2 उड़ती कला
खूब उड़ो, उड़ती कला से सेकंड में सबको पार करो।
- 3 सुरक्षित यात्रा
बाप का साथ सदा ही सेफ रखता है और रखेगा।
- 4 लक्ष्य प्राप्ति
उड़ती कला से अपने लक्ष्य तक पहुंचो और सफलता प्राप्त करो।

होली का संदेश है - सदा उड़ती कला में रहो। बाप के साथ और सहयोग से हर परिस्थिति को पार कर सकते हो।

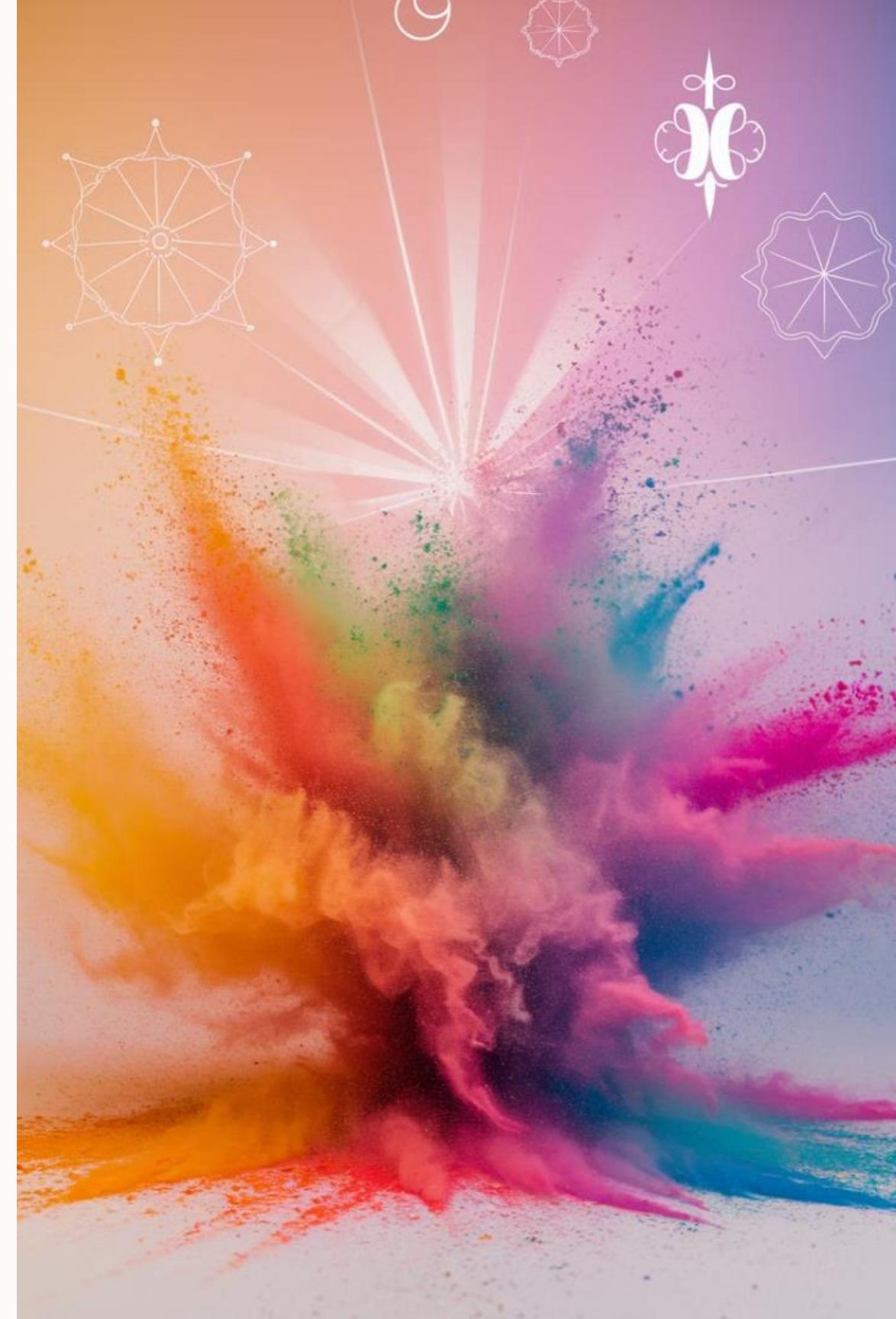


होली का रहस्यः एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण

25 MARCH 1986

होली केवल रंगों का त्योहार नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक अर्थ छिपा है। यह प्रस्तुति होली के वास्तविक महत्व और इसके आध्यात्मिक पहलुओं पर प्रकाश डालेगी। हम जानेंगे कि कैसे होली हमें परमात्मा के रंग में रंगने और आत्मिक शुद्धता प्राप्त करने का अवसर देती है।

अव्यक्त बापदादा





होली: पवित्रता का प्रतीक

पावन आत्मा

होली का अर्थ है पवित्र बनना। यह केवल एक जन्म के लिए नहीं, बल्कि अनेक जन्मों के लिए पवित्रता की रेखा खींचती है।

सहज साधन

बाप से मिलने वाला सुख, शांति और पवित्रता का वरदान होली को एक सहज साधन बनाता है।

अविनाशी रंग

होली में लगने वाला परमात्मा का रंग अविनाशी होता है, जो आत्मा को सदा के लिए पवित्र बना देता है।



संगमयुग: होली जीवन का युग

1

मनाना नहीं, बनना

दुनिया होली मनाती है, लेकिन आप होली बन जाते हो। यह एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि जीवन भर का परिवर्तन है।

2

बाप समान बनना

संगमयुग पर आप निराकार बाप समान कर्मातीत निराकारी स्थिति का अनुभव करते हो।

3

21 जन्मों का वरदान

इस एक जन्म की पवित्रता 21 जन्मों तक चलने वाले सुख और शांति के वरसे का आधार बनती है।

रुहानी रंगों की होली



ज्ञान का रंग

आत्मिक ज्ञान से बुद्धि को रंगना, जो सच्चे आनंद का स्रोत है।



याद का रंग

परमात्मा की याद में लीन होकर आत्मिक शक्ति प्राप्त करना।



गुणों के रंग

दैवी गुणों को धारण कर जीवन को सुंदर और सार्थक बनाना।

होली की तीन विशेषताएँ

1

जलाना

पुराने संस्कार और नकारात्मक विचारों को योग अग्नि में जलाना।

2

मनाना

बाप के संग का रंग लगाकर नई आध्यात्मिक पहचान का जश्न मनाना।

3

मंगल मिलन

सभी आत्माओं को परमात्म परिवार के रूप में देखकर शुभ कामनाओं का आदान-प्रदान करना।

त्रिकालदर्शी स्थिति

- 1
- 2
- 3

भूत

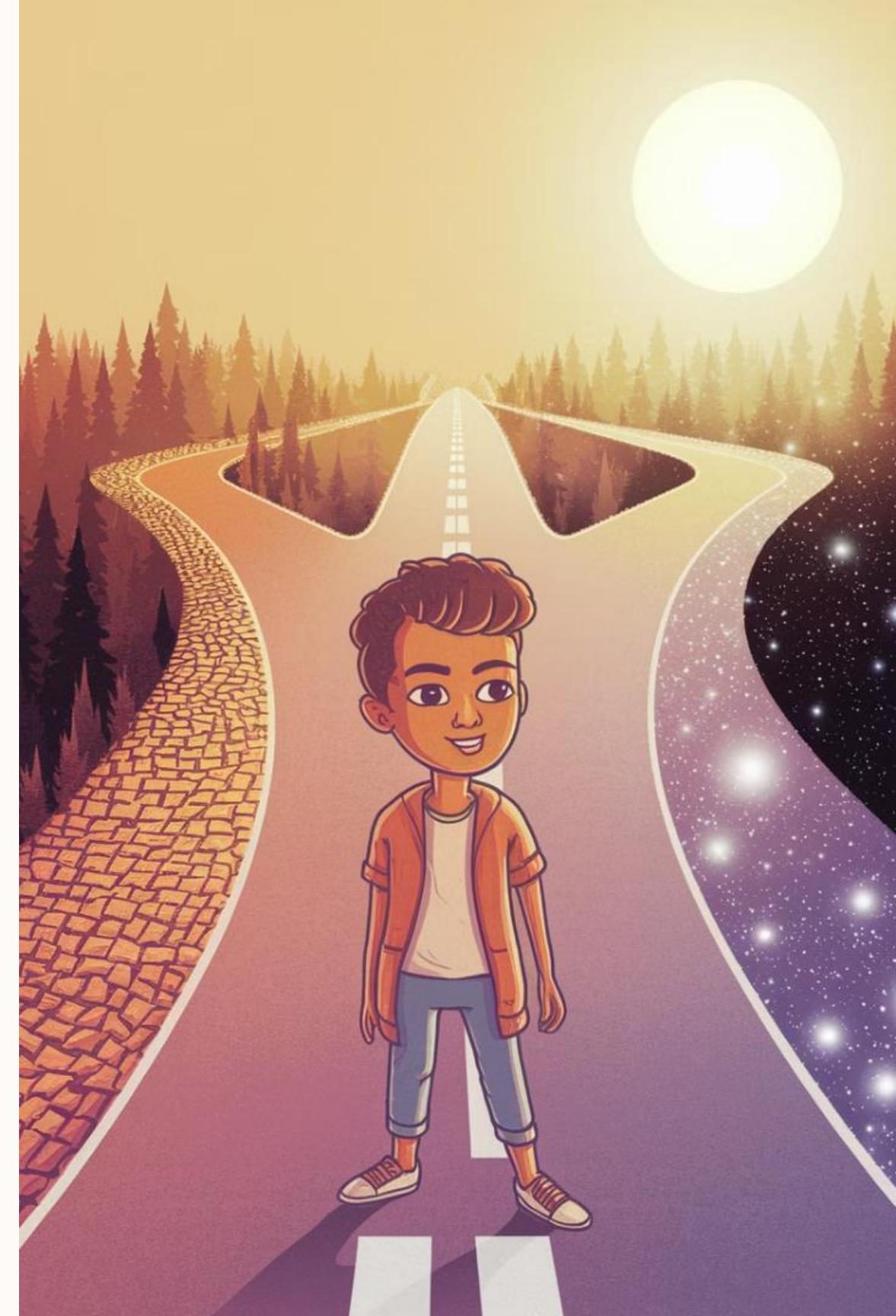
अतीत के अनुभवों से सीखना और उनसे मुक्त होना।

वर्तमान

वर्तमान क्षण में जीना और हर परिस्थिति को समझना।

भविष्य

उज्ज्वल भविष्य की ओर निरंतर बढ़ना और उसकी तैयारी करना।





होली का गृह्ण अर्थ

'हो ली' का अर्थ

पुराना बीत गया, नया शुरू हो गया। यह एक नई शुरुआत का प्रतीक है।

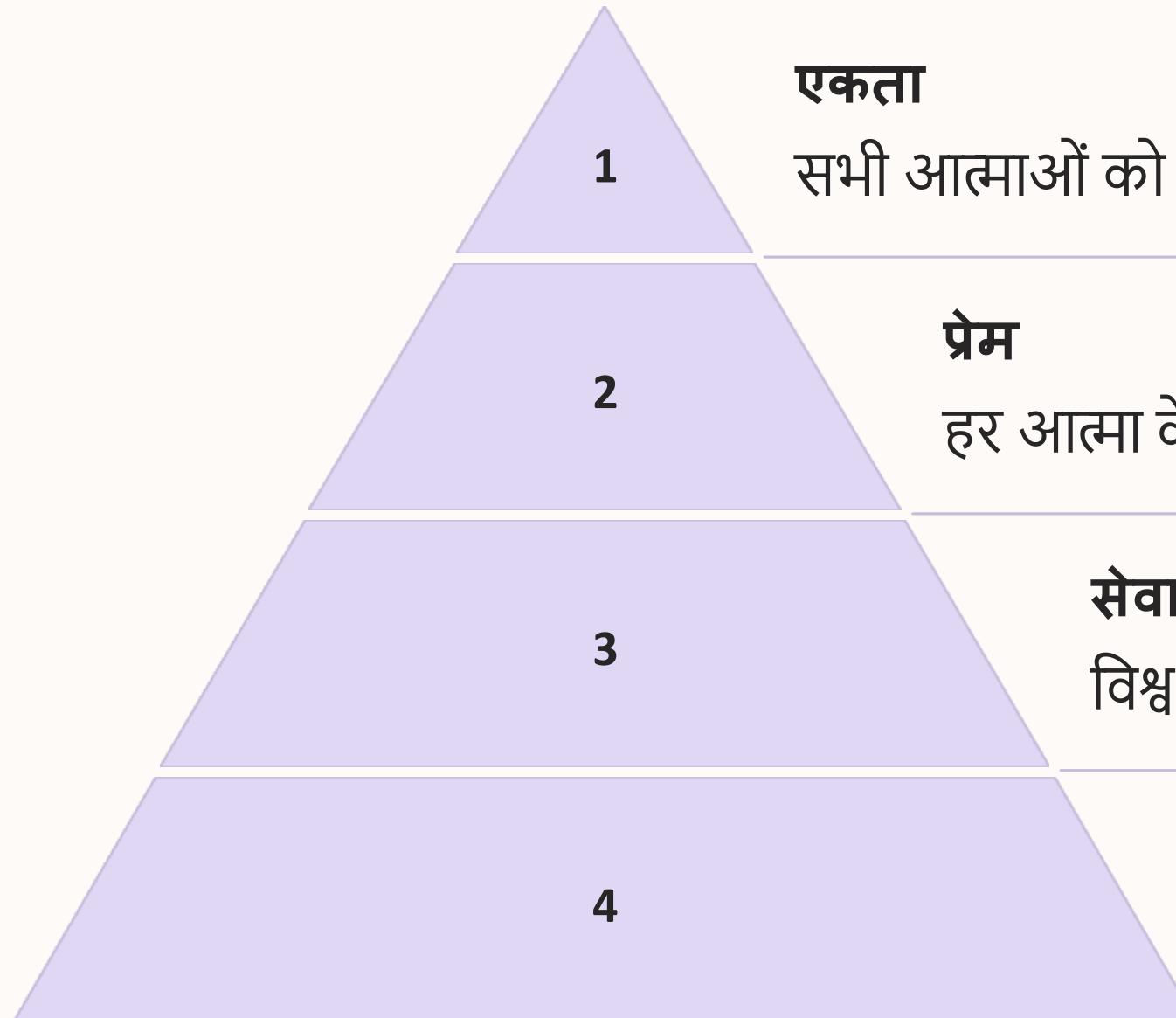
चार प्रकार की होली

जलाने, रंगने, बिंदी लगाने और मंगल मिलन की होली – सभी का महत्व समझना।

बिंदी लगाना

अतीत को पूर्णविराम देकर वर्तमान में जीने की कला सीखना।

परमात्म परिवार का मिलन



विश्व सेवा का महत्व

बिखरना और मिलना

आत्माएँ विश्व के कोने-कोने में बिखर गईं, लेकिन यह बिखरना भी कल्याणकारी साबित हुआ। इससे विश्व के हर कोने में परमात्म ज्ञान पहुँचाने का अवसर मिला।

विश्व परिवर्तन

हर धर्म और देश में पहुँची आत्माएँ अब अपने मूल धर्म की ओर लौट रही हैं, जो विश्व परिवर्तन का कारण बन रहा है। यह प्रक्रिया विश्व को एक आध्यात्मिक परिवार में बदलने में सहायक है।

संदेशः होली हंस बनो

1

पवित्रता

सदा पवित्र रहकर होली हंस बनो।

2

ज्ञान रत्न

ज्ञान रत्नों से स्वयं को सम्पन्न करो।

3

सेवा

विश्व सेवा में निरंतर तत्पर रहो।

4

आनंद

सदा आनंदमय और प्रसन्नचित्त रहो।



होली मनाना: कमज़ोरियों को जलाना और मिलन की मौज मनाना 16 MARCH 1992

होली मनाना अर्थात् दृढ़ संकल्प की अग्नि में कमज़ोरियों को जलाना और मिलन की मौज मनाना। यह त्योहार हमें याद दिलाता है कि हमें अपनी कमज़ोरियों को त्यागकर एकता और खुशी का जश्न मनाना चाहिए।



अव्यक्त बापदादा

रुहानी बगीचे का दृश्य

प्रकृति की सुंदरता

एक तरफ प्रकृति की सुंदरता दिखाई दे रही है, जो स्टेज पर सजाए गए सुंदर बगीचे के रूप में प्रतीक है।

रुहानी रुहे गुलाब

दूसरी तरफ रुहानी रुहे गुलाब बगीचे की शोभा है, जो आध्यात्मिक आत्माओं का प्रतीक है।



सतयुग और वर्तमान काल का अंतर

1

सतयुग का आदि काल

सतयुग में प्रकृति की सतोप्रधान सुंदरता आदि देव और श्रेष्ठ आत्माओं को प्राप्त होती थी।

2

वर्तमान अंतिम काल

वर्तमान समय में भी प्रकृति की सुंदरता दिखाई देती है, लेकिन इसमें बहुत अंतर है।

3

भविष्य का सतयुगी राज्य

भविष्य के सतयुगी राज्य में प्रकृति का स्वरूप अत्यंत श्रेष्ठ और सतोप्रधान सुंदर होगा।



प्रकृति पति की भूमिका

प्रकृति पति का अर्थ

आप श्रेष्ठ आत्माएं प्रकृति पति हैं,
जो प्रकृति के खेल को देखकर
हर्षित होती हैं।

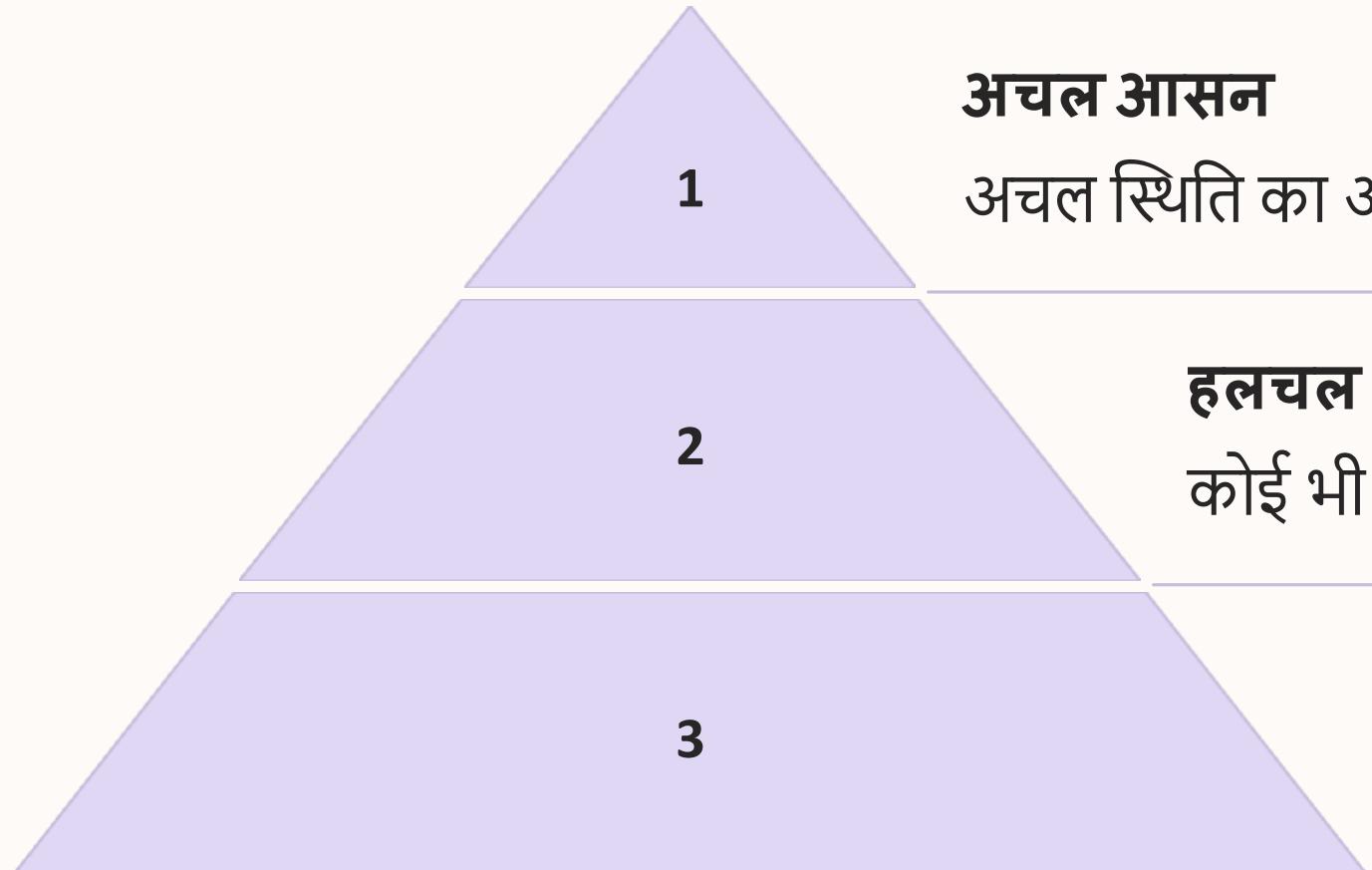
प्रकृति के खेल

चाहे प्रकृति हलचल करे या सुंदर
खेल दिखाए, प्रकृति-पति
आत्माएं साक्षी होकर खेल देखती
हैं।

साक्षीपन की स्थिति

बापदादा तपस्या द्वारा साक्षीपन की स्थिति के आसन पर अचल अडोल स्थित
रहने का विशेष अभ्यास करा रहे हैं।

अचल स्थिति का महत्व



अचल आसन

अचल स्थिति का आसन सबको अच्छा लगता है।

हलचल से परे

कोई भी बात हो, प्रकृति या व्यक्ति की, अचल स्थिति को हिला नहीं सकती।

विजयी बनना

अचल स्थिति अंत में विजयी या पास विद ऑनर का सर्टिफिकेट देगी।

प्रकृति और माया के खिलाड़ी



प्रकृति के पांच खिलाड़ी

प्रकृति के पांच तत्व जो मनुष्य के जीवन को प्रभावित करते हैं।



माया के पांच खिलाड़ी

माया के पांच विकार जो आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालते हैं।



संतुलन की आवश्यकता

इन दस खिलाड़ियों को समझना और संतुलित रहना महत्वपूर्ण है।

खेल देखने का दृष्टिकोण

साक्षी भाव

जीवन के खेल को साक्षी भाव से देखना चाहिए,
जैसे कोई खेल देखता है।

मौज का अनुभव

चाहे कोई गिरता है या गिराता है,
खेल देखने वाले को मौज आनी चाहिए।

शक्तिशाली आत्मा की विशेषताएं

अचल स्थिति

शक्तिशाली आत्माएं किसी भी परिस्थिति में हिलती नहीं हैं।

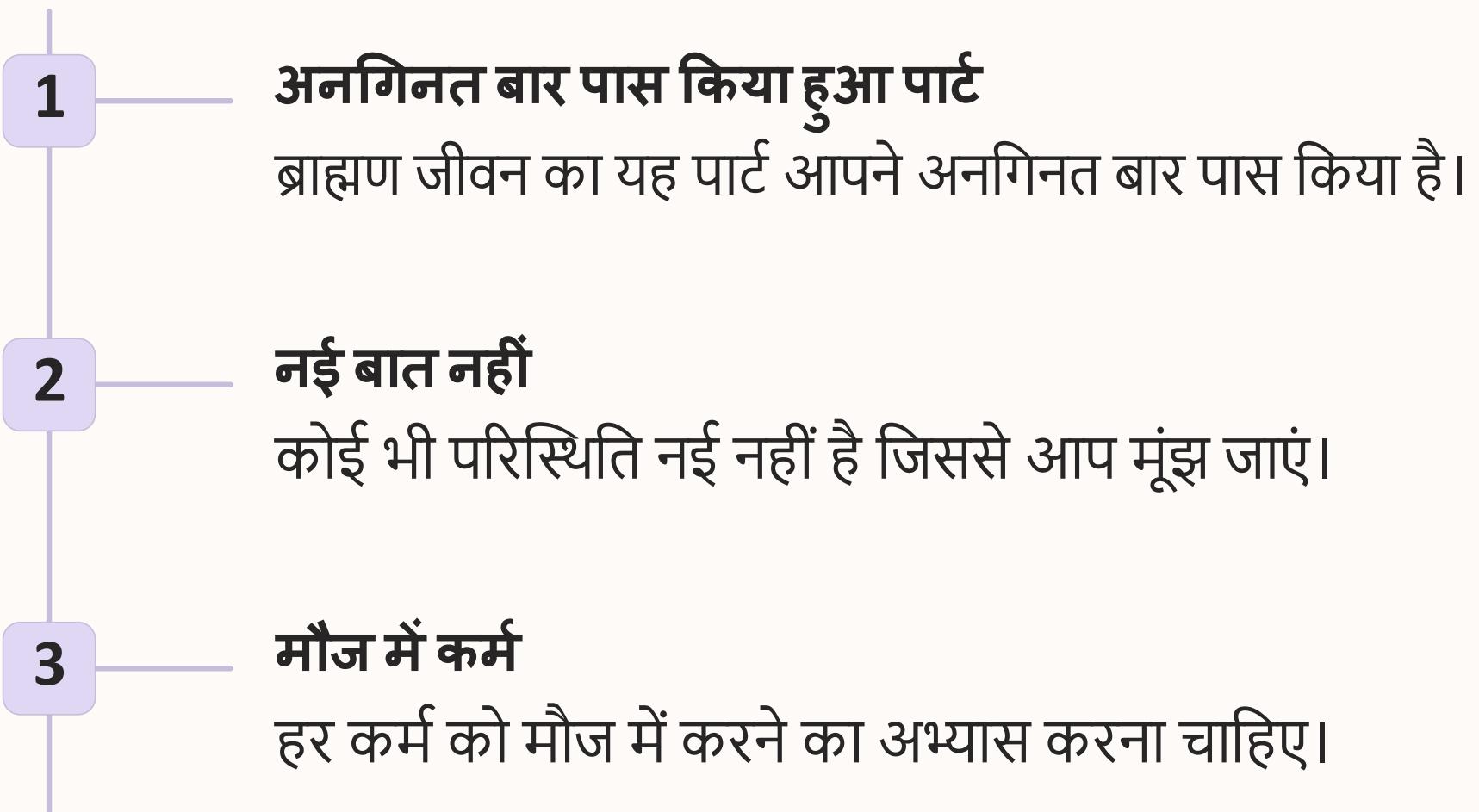
त्रिकालदर्शी दृष्टि

तीनों काल को स्पष्ट देखने की क्षमता रखती हैं।

मौज में रहना

हर परिस्थिति को मौज में बदलने की शक्ति रखती हैं।

ब्राह्मण जीवन का अनुभव

- 
- 1 अनगिनत बार पास किया हुआ पार्ट
ब्राह्मण जीवन का यह पार्ट आपने अनगिनत बार पास किया है।
 - 2 नई बात नहीं
कोई भी परिस्थिति नई नहीं है जिससे आप मूँझ जाएं।
 - 3 मौज में कर्म
हर कर्म को मौज में करने का अभ्यास करना चाहिए।

कर्म योग का आनंद

1

हर कार्य में मज़ा
चाहे कोई भी काम हो,
उसे मजे से करना सीखें।

2

कठिन कार्य का रूपांतरण
हार्ड वर्क को भी मजे में परिवर्तित
करने का कौशल विकसित करें।

3

विश्व परिवर्तन का लक्ष्य
अपने कर्मों के माध्यम से विश्व
परिवर्तन में योगदान दें।

रोज़ की होली



दैनिक उत्सव

आपकी तो रोज होली है, हर दिन एक उत्सव है।



भाग्य के गीत

अपने श्रेष्ठ भाग्य के गीत गाते रहो।



खुशी का झूला

सदा खुशी के झूले में झूलते रहो, चक्कर में न आएं।

खुशी बांटने का महत्व

1

खुशी का स्टॉक

इतनी खुशी जमा करो कि दूसरों को भी बांट सको।

2

नाजुक समय की तैयारी

भविष्य में अनेक आत्माएं आपसे खुशी मांगेंगी।

3

खुशी बढ़ाने का तरीका

जितनी खुशी बांटेंगे, उतनी ही बढ़ती जाएगी।

चेहरे का महत्व

सदा खुश चेहरा

आपका चेहरा सदा खुशी और उमंग-उत्साह से भरा होना चाहिए।

दिव्य दृष्टि का कैमरा

अपने चेहरे का दिव्य दृष्टि के कैमरे से रोज फोटो खींचें और देखें।

हीरो-हीरोइन एक्टर की भूमिका

खुश रहना

आपका मुख्य पार्ट है
सदा खुश रहना।

खुशी बांटना

दूसरों को भी खुशी बांटना
आपकी जिम्मेदारी है।

सकारात्मक चेहरा

कभी भी मूड ऑफ या दिल-शिक्स्ट वाला चेहरा न हो।

आवाज से परे होने का अभ्यास

- 1 बुद्धि की एक्सरसाइज़
- 2 आत्मा की शक्ति
- 3 मालिकपन का अनुभव

बुद्धि की एक्सरसाइज़

आवाज से परे होने का अभ्यास बुद्धि की एक्सरसाइज़ है।

आत्मा की शक्ति

यह अभ्यास आत्मा को शक्तिशाली बनाता है।

मालिकपन का अनुभव

आत्मा को मालिक के रूप में अनुभव करना सिखाता है।



आवाज से परे होने की विधि

1 मुख की आवाज

पहले मुख की आवाज से परे होने का अभ्यास करें।

2 मन की आवाज

फिर मन के संकल्पों की आवाज से भी परे हों।

3 शांति के सागर में समाना

अंत में पूर्ण शांति के सागर में समा जाएं।

स्वीट साइलेंस का अनुभव

आत्मा का स्वधर्म

शांति आत्मा का स्वधर्म है,
इसलिए स्वीट साइलेंस प्यारी लगती है।

आराम का अनुभव

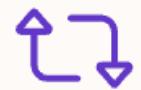
एक सेकंड की स्वीट साइलेंस भी
गहरा आराम देती है।

शांति का महत्व



हलचल में शांति

किसी भी हलचल या झगड़े में
शांति ही समाधान है।



मानसिक ताजगी

शांति में रहने से मन और तन
दोनों तरोताजा होते हैं।



संतुलन का साधन

शांति जीवन में संतुलन लाने का प्रमुख साधन है।

अशरीरी बनने का अभ्यास

- 1
- 2
- 3

नियमित अभ्यास

दिन में समय-समय पर अशरीरी बनने का अभ्यास करें।

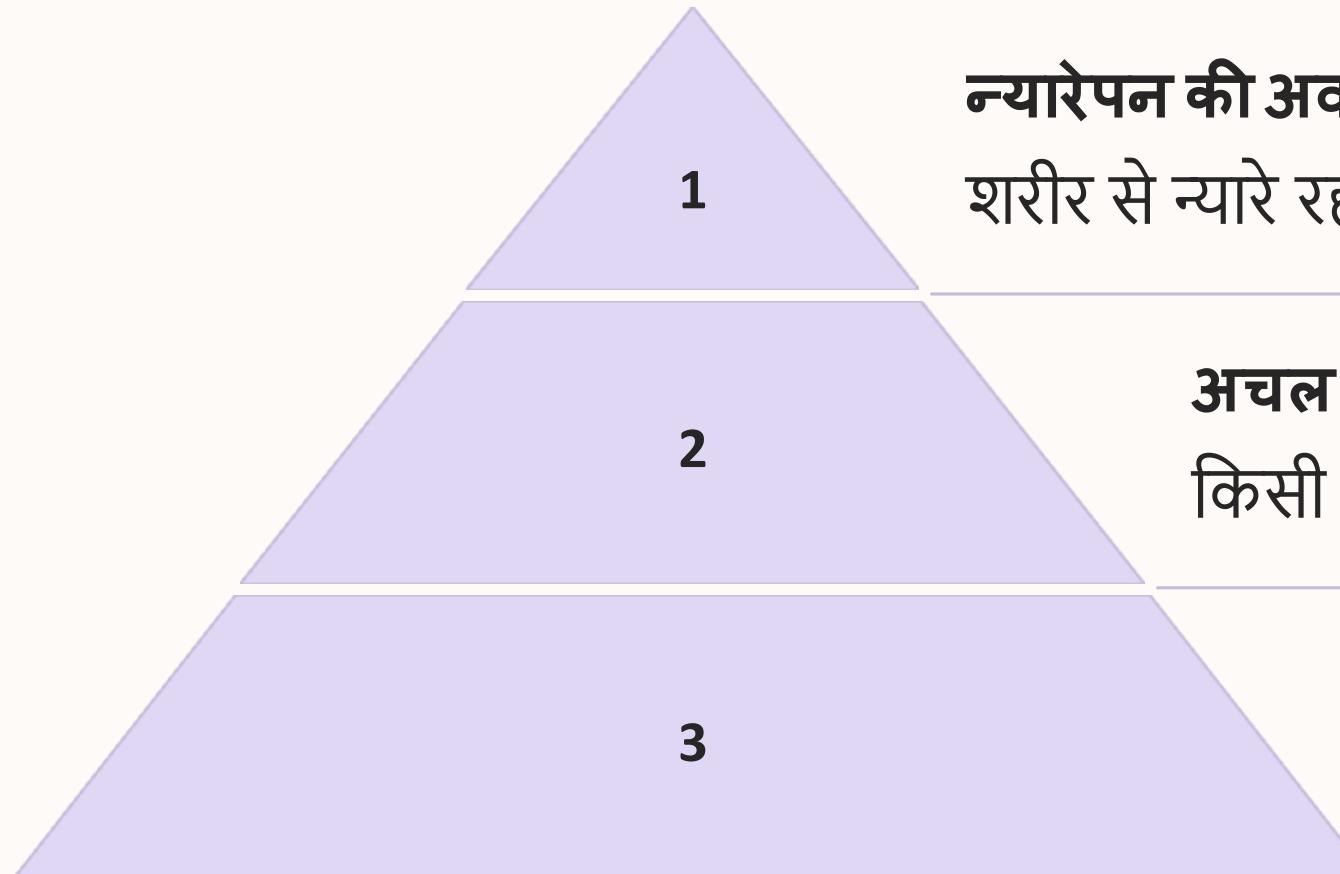
साक्षी भाव

अपने शरीर के पार्ट को भी साक्षी होकर देखें।

अंतिम समय की तैयारी

यह अभ्यास अंतिम समय में बहुत काम आएगा।

पास विद ऑनर बनने की विधि



न्यारेपन की अवस्था

शरीर से न्यारे रहने का अभ्यास करें।

अचल स्थिति

किसी भी परिस्थिति में अचल रहें।

शक्तिशाली आत्मा

अपनी आंतरिक शक्ति से पास होने का लक्ष्य रखें।



भारत का महत्व



बाप का आगमन स्थान

भारत में ही परमात्मा का अवतरण होता है।



ड्रामा की भावी

यह ड्रामा की भावी है जो कभी नहीं बदल सकती।



विशेष भूमिका

भारत की इस विशेष भूमिका का गौरव करें।

मौज में रहने का महत्व

मूँझने से बचें

जहां मौज है वहां मूँझना नहीं होता। मौज के समय में मूँझने से बचें।

त्रिकालदर्शी दृष्टि

त्रिकालदर्शी आत्मा कभी किसी बात में मूँझ नहीं सकती। तीनों काल स्पष्ट होते हैं।

परिस्थितियों का सामना

चाहे परिस्थिति मूँझाने वाली हो, लेकिन ब्राह्मण आत्मा उसे भी मौज में बदल लेती है।

कर्म में मौज का अनुभव

- 1
- 2
- 3

हर कर्म में आनंद

हर कर्म को मौज में करने का प्रयास करें।

कठिन कार्य का रूपांतरण

कठिन कार्य को भी मजे में बदलने की कला सीखें।

सेवा का आनंद

सेवा को भी मौज के रूप में अनुभव करें।

विश्व परिवर्तन का दायित्व



विश्व के कोने-कोने में सेवा
हर कोने में ब्राह्मण आत्माओं की
उपस्थिति महत्वपूर्ण है।



परिवर्तन के वाहक
आप सभी विश्व परिवर्तन के
निमित्त बने हैं।



सेवा का विस्तार
अपने क्षेत्र में सेवा का विस्तार करते रहें।

रोज़ की होली: आध्यात्मिक उत्सव



दैनिक आनंद

प्रतिदिन को एक उत्सव के रूप में मनाएं।



भाग्य का गुणगान

अपने श्रेष्ठ भाग्य के गीत निरंतर गाते रहें।



खुशी का झूला

सदैव खुशी के झूले में झूलते रहें, जीवन के उतार-चढ़ाव से प्रभावित न हों।

अव्यक्त वर्ष में लक्ष्य और लक्षण को समान बनाओ

26 MARCH 1993

आज निराकारी और आकारी बापदादा सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं को आकार रूप से और साकार रूप से देख रहे हैं। सभी के दिल में एक ही संकल्प है, उमंग है कि हम सभी बाप समान साकारी सो आकारी और आकारी सो निराकारी बाप समान बनें।

SB
अव्यक्त बापदादा



लक्ष्य और लक्षण में अंतर

लक्ष्य

मैजॉरिटी का लक्ष्य बहुत अच्छा दृढ़ है।
लक्ष्य धारण करने में 99% भी कोई हैं,
बाकी नम्बरवार हैं।

लक्षण

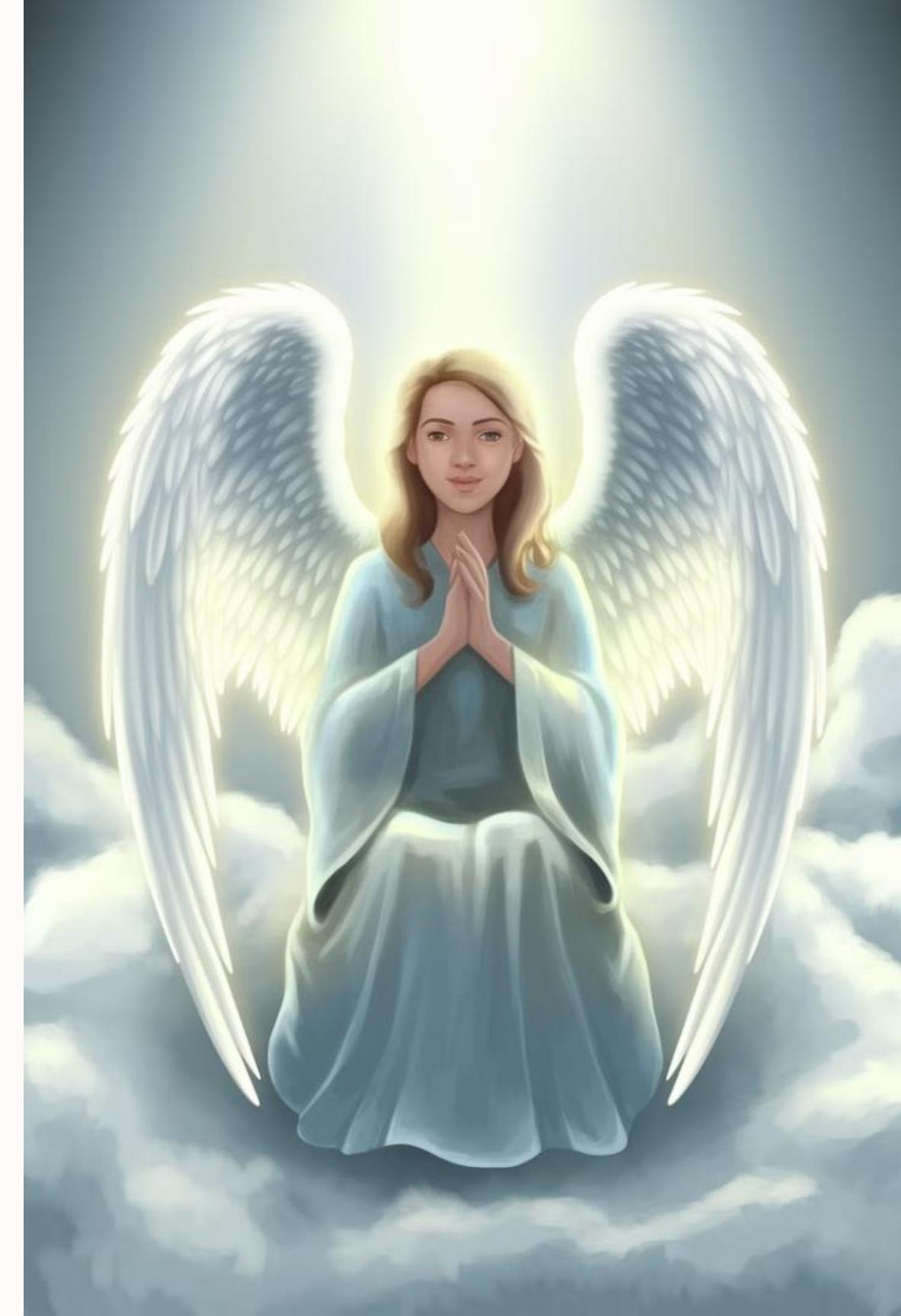
लक्षण कभी दृढ़ हैं, कभी साधारण हैं।
सदा, सहज और नेचुरल नेचर में लक्षण धारण करने में
मैनॉरिटी 90% तक हैं, बाकी और नम्बरवार हैं।

लक्ष्य और लक्षण में समानता लाना

लक्ष्य और लक्षण में समानता आना-यह निशानी है समान बनने की। समय प्रमाण, सरकमस्टांश प्रमाण, समस्या प्रमाण कई बच्चे पुरुषार्थ द्वारा अपने लक्ष्य और लक्षण को समान भी बनाते हैं। लेकिन यह नेचुरल और नेचर हो जाये, उसमें अभी और अटेन्शन चाहिए।

अव्यक्त फरिश्ता स्थिति

यह वर्ष अव्यक्त फरिश्ता स्थिति में स्थित रहने का मना रहे हो। बापदादा बच्चों के प्यार और पुरुषार्थ-दोनों को देख-देख खुश होते हैं, "वाह बच्चे, वाह" का गीत भी गाते हैं। साथ-साथ अभी और आगे सर्व बच्चों के लक्ष्य और लक्षण में समानता देखना चाहते हैं।



निरहंकारी बनना

मूल आधार

चाहे आकारी फरिश्ता, चाहे
निराकारी निरन्तर, नेचुरल नेचर
हो जाये-इसका मूल आधार है
निरहंकारी बनना।

अहंकार के प्रकार

अहंकार अनेक प्रकार का है।
सबसे विशेष कहने में भल एक
शब्द 'देह-अभिमान' है लेकिन
देह-अभिमान का विस्तार बहुत
है।

सूक्ष्म अहंकार

देह के सम्बन्ध से अपने
संस्कार विशेष हैं, बुद्धि विशेष है, गुण विशेष हैं,
कोई कलायें विशेष हैं, कोई शक्ति विशेष है-उसका अभिमान अर्थात्
अहंकार, नशा, रोब-ये सूक्ष्म देह-अभिमान हैं।

आकारी और निराकारी स्थिति

अगर इन सूक्ष्म अभिमान में से कोई भी अभिमान है तो न आकारी फरिश्ता नेचुरल-निरन्तर बन सकते, न निराकारी बन सकते। क्योंकि आकारी फरिश्ते में भी देहभान नहीं है, डबल लाइट है। देह-अहंकार निराकारी बनने नहीं देगा।

अटेन्शन और चेकिंग

- 1
- 2
- 3

अटेन्शन रखना

सभी ने इस वर्ष अटेन्शन अच्छा रखा है, उमंग-उत्साह भी है, चाहना भी बहुत अच्छी है।

चेक करना

चेक करो-किसी भी प्रकार का अभिमान वा अहंकार नेचुरल स्वरूप से पुरुषार्थी स्वरूप तो नहीं बना देता है?

सूक्ष्म अहंकार

कोई भी सूक्ष्म अभिमान अंश रूप में भी रहा हुआ तो नहीं है जो समय प्रमाण और कहाँ सेवा प्रमाण भी इमर्ज हो जाता है?



अंश-मात्र का प्रभाव

अंश-मात्र ही समय पर धोखा देने वाला है। इसलिए इस वर्ष में जो लक्ष्य रखा है, बापदादा यहीं चाहते हैं कि लक्ष्य सम्पन्न होना ही है। शक्तिशाली बनो जो माया की हिम्मत नहीं।

सूक्ष्म अहंकार के प्रभाव

अकेलापन

कभी-कभी अकेलापन महसूस होता है।

निराशा

निराशा का अनुभव होता है।

व्यर्थ संकल्प

व्यर्थ संकल्पों का अचानक तूफान आता है।

दिल न लगना

किसी भी काम में दिल नहीं लगता।

निरहंकारी बनने का महत्व

सम्पूर्ण निरहंकारी बनना अर्थात् आकारी-निराकारी सहज बनना। जब निरहंकारी बन जायेंगे तो आकारी और निराकारी स्थिति से नीचे आने की दिल नहीं होगी। उसी में ही लवलीन अनुभव करेंगे।

आत्मा का ओरीजिनल स्वरूप

1

निराकार आत्मा

आपकी ओरीजिनल अनादि स्टेज तो निराकारी है।

2

शरीर में प्रवेश

निराकार आत्मा ने इस शरीर में प्रवेश किया है।

3

शरीर का आधार

शरीर का आधार लिया लेकिन लिया किसने? आप आत्मा ने, निराकार ने साकार शरीर का आधार लिया।



'मैं' शब्द का महत्व

अहंकार आने का दरवाजा एक शब्द है, वो कौनसा? 'मैं'।

तो यह अभ्यास करो-जब भी 'मैं' शब्द आता है तो ओरीजिनल स्वरूप सामने लाओ-'मैं' कौन?
मैं आत्मा या फलाना-फलानी?

'मैं' शब्द का सही प्रयोग

1 स्मृति

'मैं' कहने से ओरीजिनल
निराकार स्वरूप याद आ जाये,
ये नेचुरल हो जाये।

2 अभ्यास

इसी को चेक करो, आदत
डालो-'मैं' सोचा और निराकारी
स्वरूप स्मृति में आ जाये।

3 बार-बार प्रयोग

कितनी बार 'मैं' शब्द कहते हो! मैंने यह कहा, 'मैं' यह करूँगी, 'मैं' यह
सोचती हूँ.....-अनेक बार 'मैं' शब्द यूज़ करते हो।

निराकारी बनने की सहज विधि

सहज विधि यह है निराकारी वा आकारी बनने की-जब भी 'मैं' शब्द यूज़ करो, फौरन अपना निराकारी ओरीजिनल स्वरूप सामने आये। ये मुश्किल है वा सहज है? फिर तो लक्ष्य और लक्षण समान हुआ ही पड़ा है।

देहभान से मुक्ति

- 1
- 2
- 3

देहभान का 'मैं'

'मैं' शब्द ही देह-अहंकार में लाता है।

निराकारी स्मृति

'मैं' निराकारी आत्मा स्वरूप हूँ- यह स्मृति में लायेंगे।

देह-भान से परे

यह 'मैं' शब्द ही देह-भान से परे ले जायेगा।

निराकारी से आकारी फरिश्ता

निराकारी बन, आकारी फरिश्ता बन कार्य किया और फिर निराकारी!
कर्म-सम्बन्ध के स्वरूप से सम्बन्ध में आओ, सम्बन्ध को बन्धन में नहीं लाओ।

देह-अभिमान और कर्म-बन्धन

देह-अभिमान

देह-अभिमान में आना अर्थात् कर्म-बन्धन में आना।

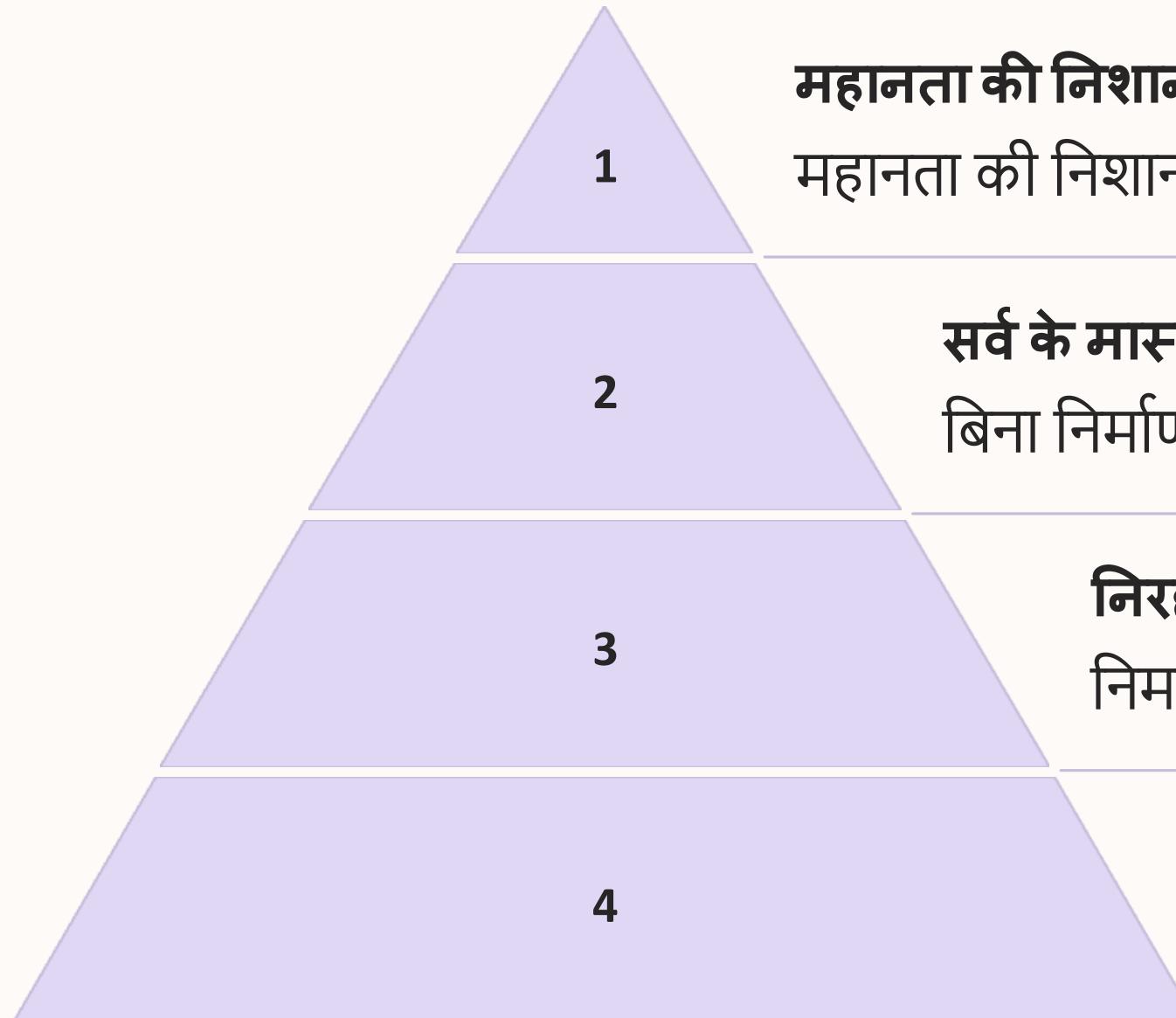
देह सम्बन्ध

देह सम्बन्ध में आना अर्थात् कर्म-सम्बन्ध में आना।

देह का आधार और बंधन

देह का आधार लेना और देह के वश होना-दोनों में अन्तर है। फरिश्ता वा निराकारी आत्मा देह का आधार लेकर देह के बंधन में नहीं आयेगी, सम्बन्ध रखेगी लेकिन बन्धन में नहीं आयेगी।

निर्माणता का महत्व





निर्माणता के लाभ

दुआयें प्राप्त

निर्माणता सबके दिल में
दुआयें प्राप्त कराने का
सहज साधन है।

प्यार का स्थान

निर्माणता सबके मन में
निर्माण आत्मा के प्रति
सहज प्यार का स्थान बना
देती है।

महिमा योग्य

निर्माणता महिमा योग्य स्वतः ही बनाती है।

निर्माणता के विभिन्न आयाम



वृत्ति में निर्माणता



दृष्टि में निर्माणता



वाणी में निर्माणता



सम्बन्ध-सम्पर्क में निर्माणता

निर्माणता के ये सभी आयाम एक साथ होने चाहिए।
तीन में है, एक में नहीं है-तो भी अहंकार आने की मार्जिन है।

सेवा की नई योजनाएँ

आगे सेवा के नये-नये प्लैन क्या बनायेंगे? कुछ बनाया है, कुछ बनायेंगे। चाहे यह वर्ष, चाहे आगे का वर्ष-जैसे और प्लैन सोचते हो कि भाषण भी करेंगे, सम्बन्ध-सम्पर्क भी बढ़ायेंगे, बड़े प्रोग्राम भी करेंगे, छोटे प्रोग्राम भी करेंगे।

सेवा की फास्ट गति

वर्त-मान समय के गति प्रमाण अभी सेवा की भी फास्ट गति चाहिए। वो कैसे होगी? वाणी द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा तो सेवा कर ही रहे हो, मन्सा-सेवा भी करते हो लेकिन अभी चाहिए-थोड़े समय में सेवा की सफलता ज्यादा हो।

वायब्रेशन्स की शक्ति

पॉवरफुल वायब्रेशन्स

वाणी के साथ-साथ पहले अपनी स्थिति और स्थान के वायब्रेशन्स पॉवरफुल बनाओ।

जड़ चित्रों की सेवा

जैसे आपके जड़ चित्र क्या सेवा कर रहे हैं? वायब्रेशन्स द्वारा कितने भक्तों को प्रसन्न करते हैं!

डबल सेवा

वाणी और वायब्रेशन डबल काम करे।

वायब्रेशन्स का प्रभाव

वायब्रेशन बहुतकाल रहता है। वाणी से सुना हुआ कभी-कभी कइयों को भूल भी जाता है लेकिन वायब्रेशन की छाप ज्यादा समय चलती है। वायब्रेशन अन्दर बैठ जाता है और कितना समय उसी वायब्रेशन के वश, उस व्यक्ति से व्यवहार में आते हो?

रुहानी वायब्रेशन्स फैलाना

रुहानी वायब्रेशन्स फैलाने के लिए पहले अपने मन में, बुद्धि में व्यर्थ वायब्रेशन्स समाप्त करेंगे तब रुहानी वायब्रेशन फैला सकेंगे।

किसी के भी प्रति अगर व्यर्थ वायब्रेशन्स धारण किये हुए हैं तो रुहानी वायब्रेशन्स नहीं फैला सकते।

व्यर्थ वायब्रेशन्स का प्रभाव

1

दीवार बनना

व्यर्थ वायब्रेशन रूहानी वायब्रेशन के आगे एक दीवार बन जाती है।

2

प्रकाश रोकना

जैसे बादल सूर्य के प्रकाश को प्रज्वलित होने नहीं देते।

3

रूहानी वायब्रेशन्स रोकना

व्यर्थ वायब्रेशन्स रूहानी वायब्रेशन्स को आत्माओं तक पहुँचने नहीं देंगे।



वायब्रेशन्स द्वारा सेवा

वायब्रेशन्स एक ही समय पर अनेक आत्माओं को आकर्षित कर सकते हैं। वायब्रेशन्स वायुमण्डल बनाते हैं। तो आगे की सेवा में वृत्ति द्वारा रूहानी वायब्रेशन से साथ-साथ सेवा करो, तभी फास्ट होगी।

सेवा के विभिन्न माध्यम



वाणी

भाषण और प्रवचन
द्वारा सेवा



सम्बन्ध-सम्पर्क

व्यक्तिगत संबंधों
द्वारा सेवा



प्रोग्राम

बड़े और छोटे कार्यक्रमों
द्वारा सेवा



मन्सा-सेवा

संकल्पों
द्वारा सेवा

सहयोगियों का महत्व

सहयोगियों का सहयोग किसी भी विधि से बढ़ाते चलो तो स्वतः ही सेवा में सह-योगी बनने से सहज योगी बन जायेंगे। कई ऐसी आत्मायें होती हैं जो सीधा सहजयोगी नहीं बनेंगी लेकिन सहयोग लेते जाओ, सह-योगी बनाते जाओ।



वर्ष की योजना

- 1** तपस्या के मास
दो मास तपस्या के लिए निर्धारित करें।
- 2** छोटी सेवाओं के मास
दो मास छोटी-छोटी सेवाओं के लिए रखें।
- 3** बड़ी सेवाओं के मास
दो मास बड़े रूप की सेवाओं के लिए निर्धारित करें।

स्व की प्रगति और सेवा का संतुलन

समय का विभाजन

ऐसे नहीं कि 12 मास सेवा में इतने बिजी हो जाओ जो स्व की प्रगति के लिए टाइम कम मिले। जैसा देश का सीज़न हो, कई समय ऐसे होते हैं जिसमें बाहर की विशेष सेवा नहीं कर सकते, वो समय अपने प्रगति के प्रति विशेष रूप से रखो।

संतुलित दृष्टिकोण

सारा साल सेवा नहीं करो-यह भी नहीं हो सकता, सारा साल सिर्फ तपस्या करो-यह भी नहीं हो सकता। इसलिये दोनों को साथ-साथ लक्ष्य में रखते हुए अपने स्थान के प्रमाण मुकर करो जिसमें सेवा और स्व की प्रगति-दोनों साथ-साथ चलें।

सीज़न की समाप्ति

इस वर्ष की सीज़न की समाप्ति है। समाप्ति में एक तो समारोह किया जाता है और दूसरा आध्यात्मिक बातों में स्वाहा किया जाता है। समारोह तो कल मना लिया है।

अभी स्वाहा क्या करेंगे?

एक बात विशेष मन-बुद्धि से स्वाहा करो, वाणी से नहीं, सिर्फ पढ़ लिया वह नहीं, मन-बुद्धि से स्वाहा करो।

व्यर्थ वायब्रेशन को स्वाहा करना

आज की लहर है-किसी भी आत्मा के प्रति व्यर्थ वायब्रेशन को स्वाहा करो। स्वाहा कर सकते हो? कि थोड़ा-थोड़ा रहेगा? ऐसे नहीं समझो कि यह है ही ऐसा तो वायब्रेशन तो रहेगा ना! कैसा भी हो लेकिन आप नैगेटिव वायब्रेशन को बदल पॉजिटिव वायब्रेशन रखेंगे तो वह आत्मा भी नैगेटिव से पॉजिटिव में आ ही जायेगी, आनी ही है।

रुहानी रॉकेट: वृत्ति द्वारा सेवा

वृत्ति की शक्ति

वृत्ति द्वारा रुहानी वायब्रेशन्स फैलाने हैं। वृत्ति है रॉकेट, जो यहाँ बैठे-बैठे जहाँ भी चाहो, जितना भी पाँवरफुल परिवर्तन करने चाहो वह कर सकते हो।

सकारात्मक दृष्टिकोण

चाहे वो रीयल में रांग भी हो लेकिन आप उसका रांग धारण नहीं करो। रांग को आप क्यों धारण करते हो?

व्यापक प्रभाव

जहाँ तक जितनों को पहुँचाने चाहो, उतना पावरफुल वृत्ति से वायब्रेशन, वायब्रेशन से वायुमण्डल बना सकते हो।



पुराने संस्कारों को खत्म कर अपने निजी संस्कार धारण करने वाले एवररेडी बनो

3 APRIL 1997

आज बापदादा अपने चारों ओर से विश्व के बाप के लव में लवलीन और लक्की बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चे के भाग्य पर बाप को भी नाज़ है कि मेरे बच्चे वर्तमान समय इतने महान हैं जो सारे कल्प में चाहे देवता स्वरूप में, चाहे धर्म नेताओं के रूप में, चाहे महात्माओं के रूप में, चाहे पदमपति आत्माओं के रूप में किसी का भी इतना भाग्य नहीं है जितना आप ब्राह्मणों का भाग्य है।

अव्यक्त बापदादा

अपने श्रेष्ठ भाग्य को सदा स्मृति में रखो

भाग्य का गीत

सदा यह अनहृद गीत मन
में गाते रहते हो कि वाह
भाग्य विधाता बाप और वाह
मुझ श्रेष्ठ आत्मा का भाग्य!

स्मृति स्वरूप बनो

बापदादा सभी बच्चों को सदा ही भाग्य के स्मृति स्वरूप देखने चाहते हैं।

हर्षित रहो

बाप बच्चों को देख-देख
सदा हर्षित होते हैं। बच्चे
भी हर्षित होते हैं लेकिन
कभी-कभी बीच में अपने
भाग्य को इमर्ज करने के
बजाए मर्ज कर देते हैं।

लक्ष्य और लक्षण में अंतर क्यों?

श्रेष्ठ लक्ष्य

सब बच्चे यही लक्ष्य रख करके चल रहे हैं कि मुझे बाप समान बनना ही है। लक्ष्य बहुत अच्छा है।

अंतर का कारण

जब लक्ष्य श्रेष्ठ है, बहुत अच्छा है फिर कभी इमर्ज रूप, कभी मर्ज रूप क्यों? कारण क्या?



तीन महत्वपूर्ण बातें

- 1 सोचना
संकल्प करना
- 2 बोलना
वर्णन करना
- 3 करना
कर्म में प्रैक्टिकल अनुभव में और चलन में लाना



तीनों का बैलेंस आवश्यक

बैलेंस का महत्व

जब बैलेंस होता है तो निश्चय और नशा इमर्ज होता है और जब बैलेंस कम है तो निश्चय और नशा मर्ज हो जाता है।

सोचने और बोलने में प्रगति

सोचने की गति बहुत अच्छी भी है और फास्ट भी है। बोलने में रफ्तार और नशा वह भी 75 परसेंट ठीक है।

प्रैक्टिकल में कमी

प्रैक्टिकल चलन में लाने में टोटल मार्क्स कम हैं। तो दो बातों में ठीक हैं लेकिन तीसरी बात में बहुत कम हैं।



प्रैक्टिकल में कमी का कारण

1

संकल्प और बोल अच्छे

जब संकल्प भी अच्छा है, बोल भी बहुत सुन्दर रूप में हैं

2

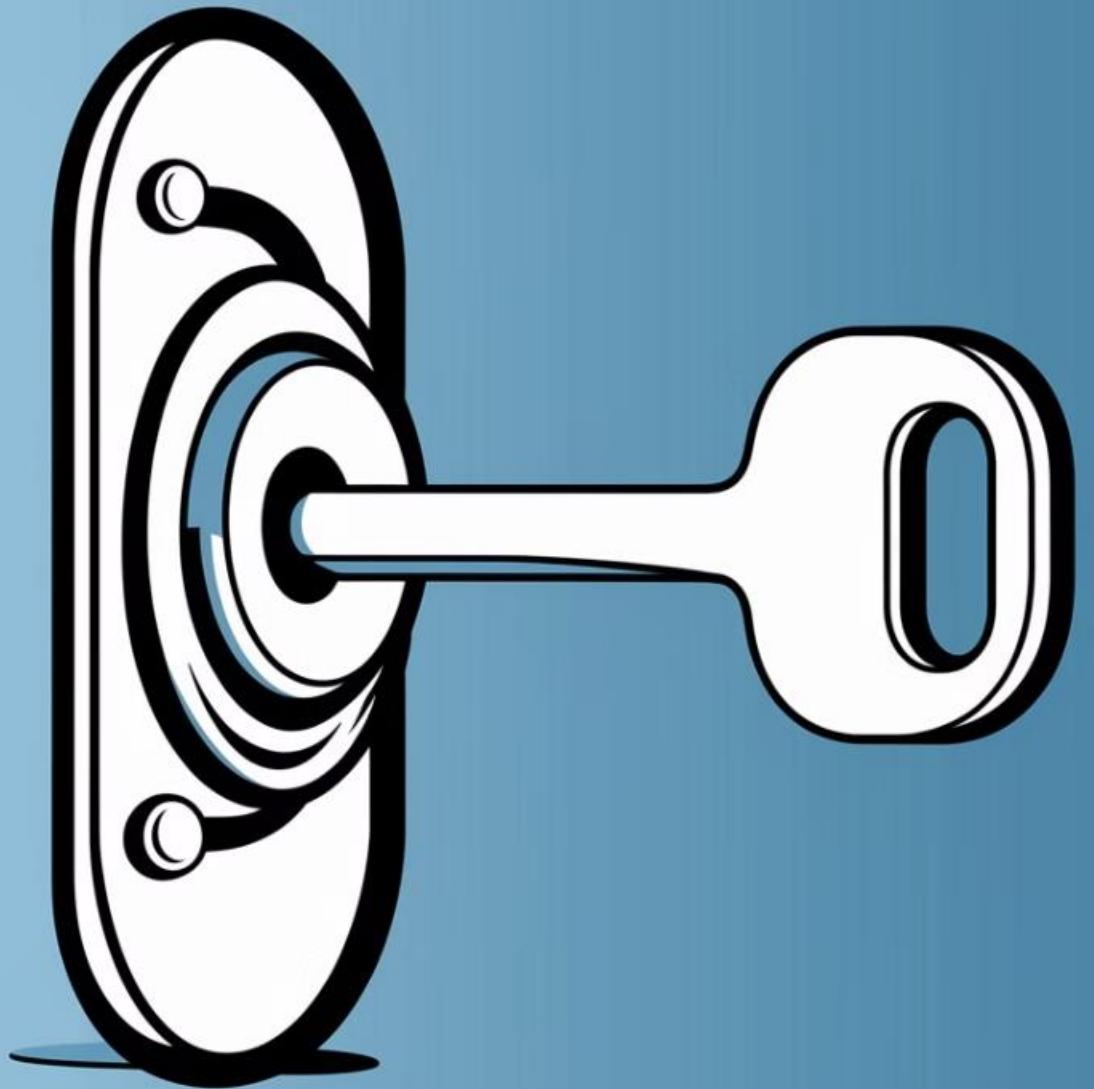
प्रैक्टिकल में कमी

फिर प्रैक्टिकल में कम क्यों होता है?

3

कारण की खोज

कारण क्या, जानते हो?



एक ही कारण

बापदादा ने पहले भी सुनाया है यह रिवाइज कोर्स चल रहा है। तो बाप कहते हैं कि कारण एक ही है, ज्यादा भी नहीं है, एक ही कारण है और बापदादा समझते हैं कि कारण को निवारण करना मुश्किल भी नहीं है, बहुत सहज है।

लेकिन सहज को मुश्किल बना देते हैं। मुश्किल है नहीं, बना देते हैं, क्यों? नशा मर्ज हो जाता है।

धारणा की बातें

अच्छी धारणा

जो भी धारणा की बातें सुनते हो, करते भी हो, चाहे शक्तियों के रूप में, चाहे गुणों के रूप में, धारणा की बातें बहुत अच्छी-अच्छी करते हो

प्रशंसा

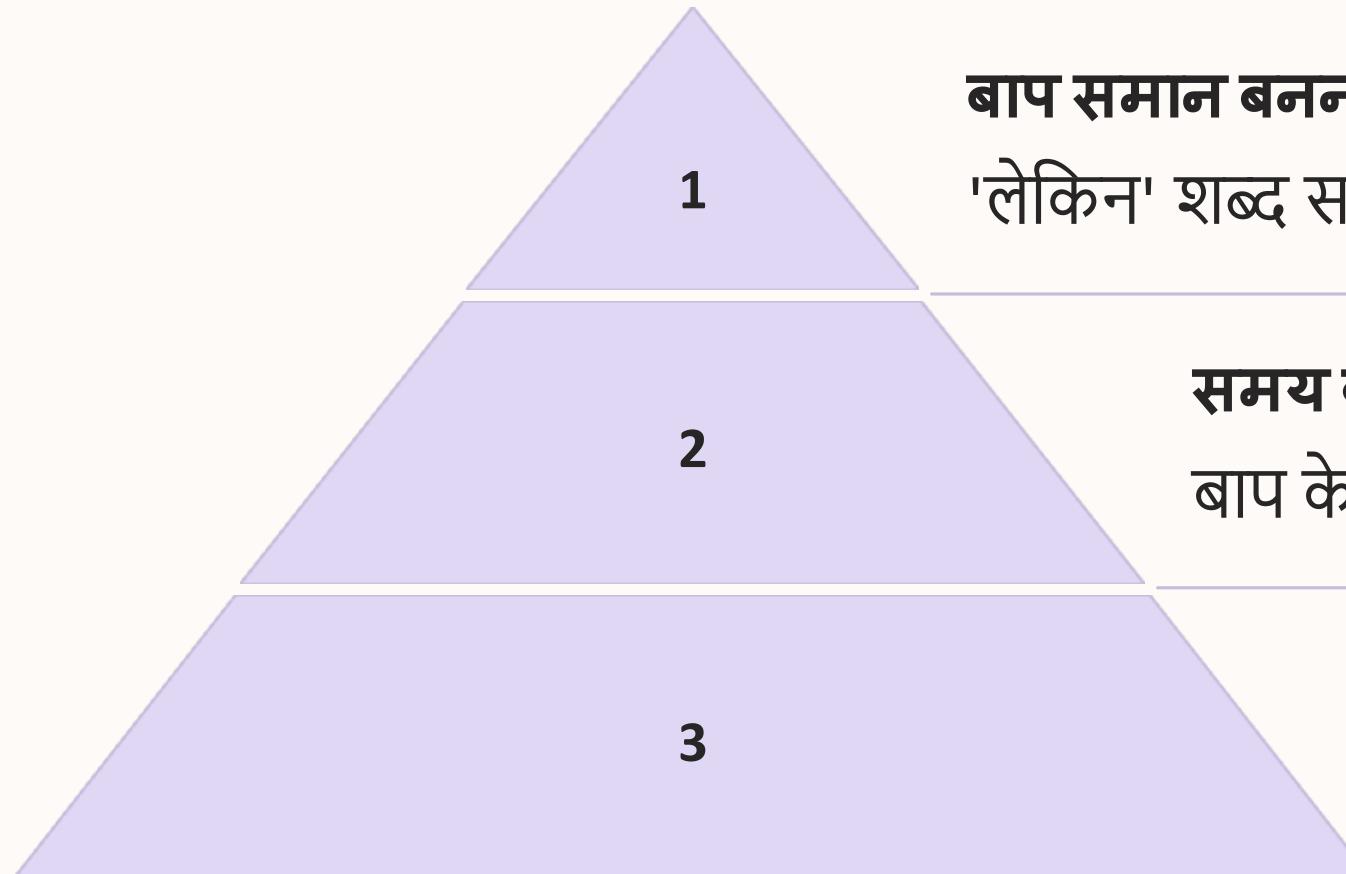
इतनी अच्छी करते हो जो सुनने वाले चाहे अज्ञानी, चाहे ज्ञानी सुनकर बहुत अच्छा, बहुत अच्छा कहकर खूब तालियां बजाते हैं

'लेकिन' का विघ्न

लेकिन, कितने बार 'लेकिन' आया? यह 'लेकिन' ही विघ्न डाल देता है।



'लेकिन' शब्द को समाप्त करो



बाप समान बनना

'लेकिन' शब्द समाप्त होना अर्थात् बाप समान-समीप आना

समय को समीप लाना

बाप के समीप आना अर्थात् समय को समीप लाना

'लेकिन' को समाप्त करो

अभी तक 'लेकिन' शब्द कहना पड़ता है

संस्कार की शक्ति

पुराने संस्कार

द्वापर से लेकर अन्तिम जन्म तक जो भी अवगुण वा क्रमजोरियां हैं उसकी धारणा संस्कार रूप में बन गई हैं और संस्कार बनने के कारण मेहनत नहीं करना पड़ता।

संस्कार का प्रभाव

छोड़ना भी चाहते हैं, अच्छा नहीं लगता है फिर भी कहते हैं क्या करें, मेरा संस्कार ऐसा है। आप बुरा नहीं मानना, मेरा संस्कार ऐसा है।



गुणों को संस्कार बनाओ

अवगुण का संस्कार

क्रोध को संस्कार बनाया,
अवगुण को संस्कार बनाया

गुणों का संस्कार

गुणों को संस्कार क्यों नहीं बनाया है?

शक्तियों का संतुलन

जैसे क्रोध अज्ञान की शक्ति है
और ज्ञान की शक्ति शान्ति है।
सहन शक्ति है।

ब्राह्मण आत्माओं के निजी संस्कार



शान्ति

शान्ति की शक्ति ब्राह्मण आत्माओं का निजी संस्कार है



सहनशक्ति

सहनशक्ति ब्राह्मण आत्माओं का विशेष गुण है



प्रेम

प्रेम और करुणा ब्राह्मण आत्माओं का स्वभाव है

रावण की जायदाद को छोड़ो

रावण की जायदाद

वह तो रावण की जायदाद संस्कार बना दिया।
पराये माल को अपना बना लिया।

बाप का खजाना

अब बाप के खजाने को अपना बनाओ।
रावण की चीज़ को सम्भाल कर रखा है और
बाप की चीज़ को गुम कर देते हो, क्यों?



दिल का प्यार

बाप से प्यार

कहेंगे तो सभी बाप अच्छा
लगता है, यही मन से कह रहे हैं
ना?

दिल की बात

जो अच्छा लगता है उसकी बात
निश्चय की स्थाही से दिल में समा
जाती है।

बाप का वायदा

बाप का सभी बच्चों से वायदा है - कि
दिल से अगर एक बार भी "मेरा बाबा"
बोल दिया, फिर भले बीच-बीच में भूल
जाते हो लेकिन एक बार भी दिल से
बोला "मेरा बाबा", तो बाप भी कहते हैं
जो भी हो, जैसे भी हो मेरे ही हो।



सज़नी बनकर चलना

बाप चाहते हैं कि बराती बनकर नहीं चलना, सज़नी बनकर चलना।
सुनकर के तो सभी बहुत खुश हो रहे हैं। अपने ऊपर हंसी भी आ रही है।

अभी सुनने के समय अपने ऊपर हंसते हो ना! अपने ऊपर हंसी आती है और जब जोश करते हो तब लाल, पीले हो जाते हो।

बच्चों की विशेषता

पवित्रता

पवित्रता में रहना, इसके लिए कितना भी सहन करना पड़ा है, कितना भी आपोजीशन करने वाले सामने आये हैं लेकिन इस बात में 75 परसेंट अच्छे हैं।

क्रोध पर विजय

क्रोध की सबजेक्ट में बहुत कम पास हैं। ऐसे समझते हैं कि शायद क्रोध कोई विकार नहीं है, यह शास्त्र है, विकार नहीं है।

देह-भान से मुक्ति

देह-भान तो टोटल है ही।



क्रोध - महाशत्रु

क्रोध का प्रभाव

क्रोध ज्ञानी तू आत्मा के लिए महाशत्रु है। क्योंकि क्रोध अनेक आत्माओं के सम्बन्ध, सम्पर्क में आने से प्रसिद्ध हो जाता है

बाप के नाम की ग्लानि

क्रोध को देख करके बाप के नाम की बहुत ग्लानि होती है। कहने वाले यही कहते हैं, देख लिया ज्ञानी तू आत्मा बच्चों को।

क्रोध के रूप

क्रोध के बहुत रूप हैं। एक तो महान रूप आप अच्छी तरह से जानते हो, दिखाई देता है - यह क्रोध कर रहा है।

क्रोध के सूक्ष्म रूप

अंदरूनी अग्नि

क्रोध का सूक्ष्म स्वरूप अन्दर में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा होती है। इस स्वरूप में जोर से बोलना या बाहर से कोई रूप नहीं दिखाई देता है, लेकिन जैसे बाहर क्रोध होता है तभी क्रोध अग्नि रूप है ना, वह अन्दर खुद भी जलता रहता है और दूसरे को भी जलाता है।

आंतरिक जलन

ऐसे ईर्ष्या, द्वेष, घृणा - यह जिसमें है, वह इस अग्नि में अन्दर ही अन्दर जलता रहता है। बाहर से लाल, पीला नहीं होता, लाल पीला फिर भी ठीक है लेकिन वह काला होता है।



क्रोध की चतुराई

सीरियसनेस का बहाना

कहने में समझने में ऐसे समझते हैं वा कहते हैं कि कहाँ-कहाँ सीरियस होना ही पड़ता है।

बाप की आज्ञा

बापदादा ने किसी को भी अपने हाथ में ला (Law) उठाने की छुट्टी नह

कल्याण का बहाना

कहाँ-कहाँ ला उठाना ही पड़ता है - कल्याण के लिए। अभी कल्याण है या नहीं वह अपने से पूछो।



क्रोध को विदाई दो

1

क्रोध की समाप्ति

अभी से क्रोध को क्या करेंगे? विदाई देंगे?

2

वायदे की दृढ़ता

देखो, ताली बजाना बहुत सहज है लेकिन क्रोध की ताली नहीं बजे।

3

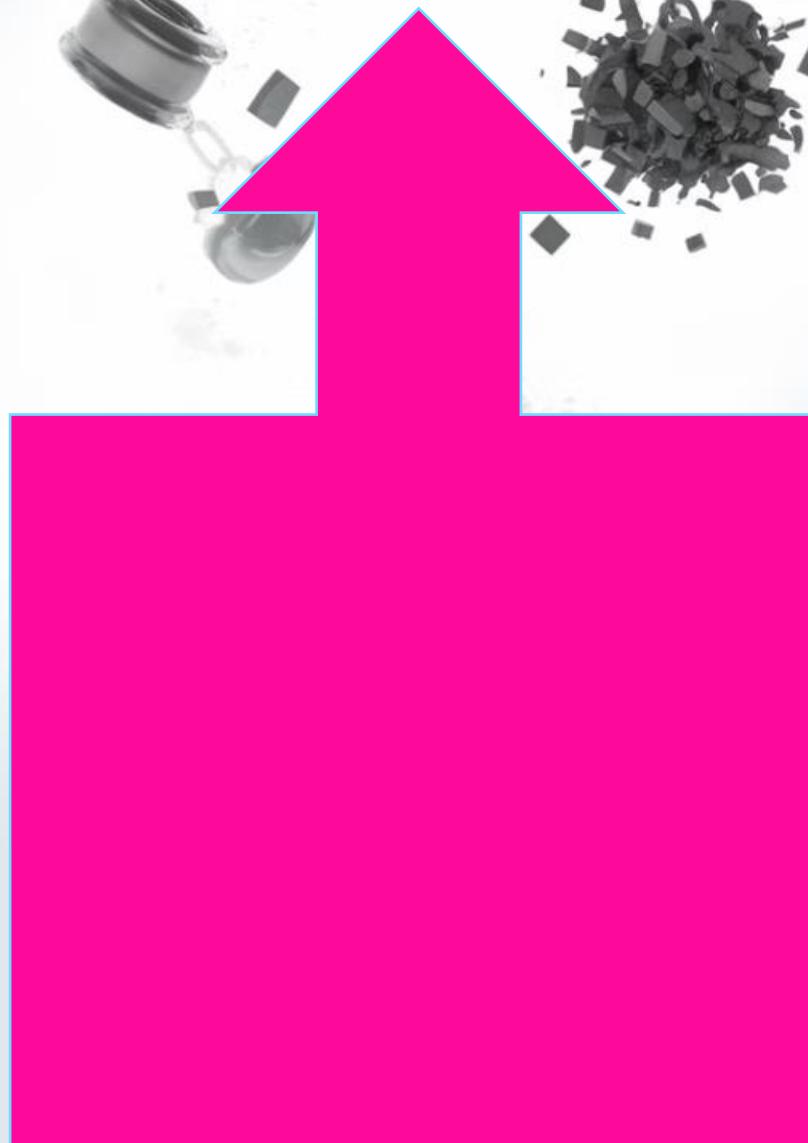
बहाने न बनाएं

अब से यह नहीं कहना कि बाबा वायदा तो किया लेकिन.... फिर-फिर आ गया, क्या करें!

4

स्वयं का पुरुषार्थ

तो यह पुरुषार्थ भी बाप करे और प्रालब्ध बच्चे लेंगे? यह भी मेहनत बाप करे?



क्रोध पर विजय का महत्व

क्रोध का प्रभाव

बापदादा क्रोध के लिए क्यों विशेष कह रहा है? क्योंकि अगर क्रोध को आपने विदाई दे दी तो इसमें लोभ, इच्छा सब आ जाता।

लोभ के विभिन्न रूप

लोभ सिर्फ पैसे और खाने का नहीं होता है, भिन्न-भिन्न प्रकार की, चाहे ज्ञान की, चाहे अज्ञान की कोई भी इच्छा - यह भी लोभ है।

अहंकार का अंत

तो क्रोध को खत्म करने से लोभ स्वतः खत्म होता जायेगा, अहंकार भी खत्म हो जायेगा।

अहंकार और क्रोध का संबंध

- 1
- 2
- 3

अहंकार

अभिमान आता है ना - मैं बड़ा, मैं समझदार, मैं जानता गूँँ - यह क्या अपने को समझते हैं!

क्रोध का उदय

तब क्रोध आता है।

दोनों का अंत

तो अभिमान और लोभ यह भी साथ-साथ विदाई ले लेंगे।



संस्कार बदलने का संकल्प

दृढ़ संकल्प

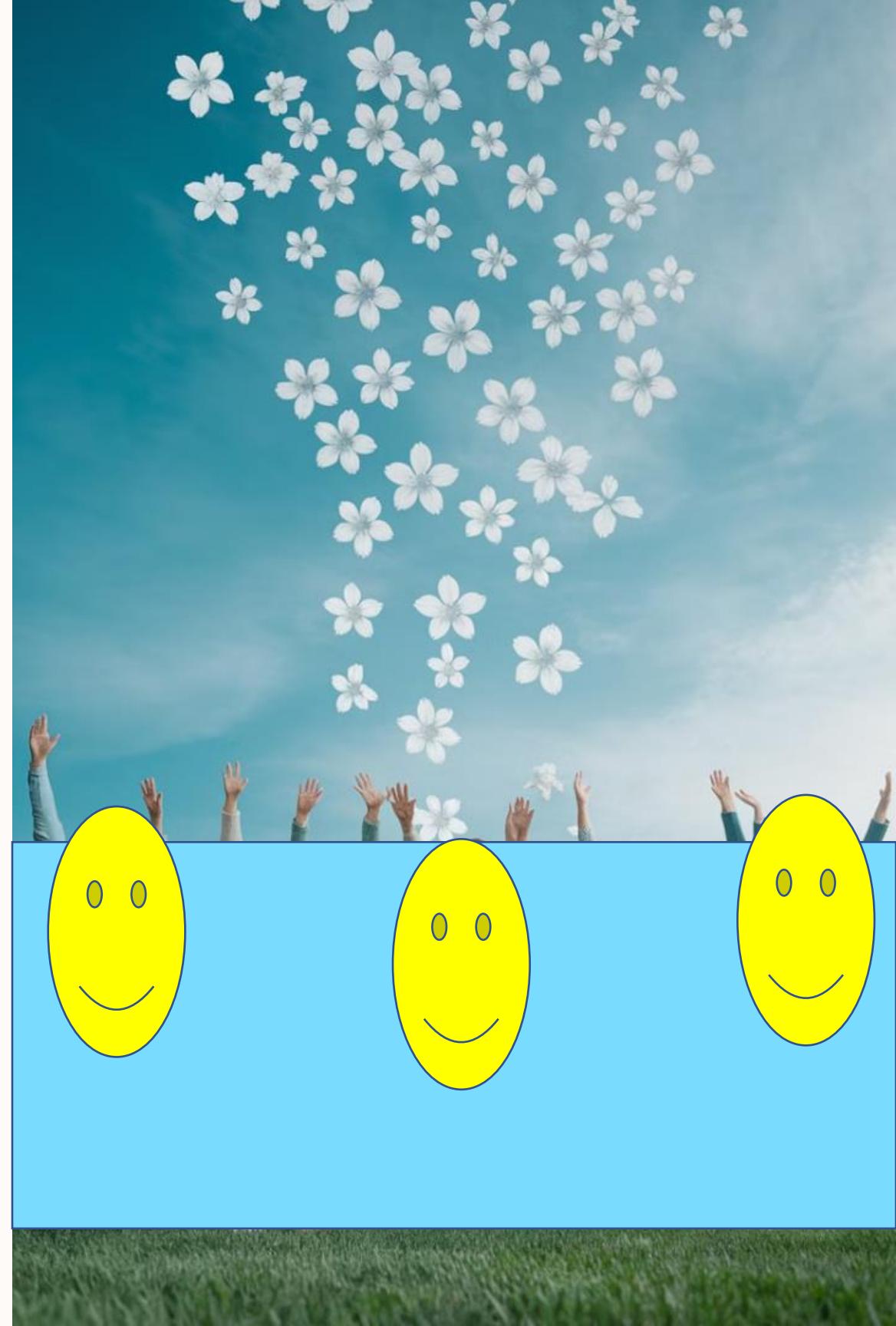
तो संस्कार बनायेंगे? अभी सब हाथ उठाओ और सबका फोटो निकालो।

मुबारक

अभी थोड़ी सी मुबारक देते हैं, बहुत नहीं और जब फिर से रिजल्ट देखेंगे फिर वतन के देवतायें भी, स्वर्ग के देवतायें भी आपके ऊपर वाह, वाह के पुष्प गिरायेंगे।

स्व-परिवर्तन पर ध्यान

आज से हर एक अपने में देखे - दूसरे का नहीं देखना। दूसरे की यह बातें देखने के लिए मन की आंख बंद करना।



अंतर्मुखी बनो

दूसरों की कमजोरियां न देखें

अगर कोई विरला महारथी भी कोई ऐसी कमजोरी करे तो भी देखने के लिए और सुनने के लिए मन को अंतर्मुखी बनाना।

महारथियों की विशेषता

महारथियों की तपस्या, महारथियों के बहुतकाल का पुरुषार्थ उन्हों को एडीशन मार्क्स दिलाकर भी पास विद्यानर कर लेती है।

अच्छाई की रेस करो

महारथियों से सीखो

महारथियों से इस बात में रीस नहीं करना। अच्छाई की रेस करो, बुराई की रीस नहीं करो, नहीं तो धोखा खा लेंगे।

महारथियों का फाउन्डेशन

महारथियों का फाउन्डेशन निश्चय, अटूट-अचल है, उसकी दुआयें एकस्टा महारथियों को मिलती हैं।

मन को अन्तर्मुखी रखो

इसलिए कभी भी मन की आंख को इस बात के लिए नहीं खोलना। बंद रखो। सुनने के बजाए मन को अन्तर्मुखी रखो।

निजी संस्कार बनाओ

मेहनत से मुक्ति

मेहनत करते हो, वह भी बापदादा को अच्छा नहीं लगता। निजी संस्कार बनाने से सहज मेहनत से छूट जायेंगे।

स्वतः योगी जीवन

निरन्तर योगी, सहज योगी, कर्मयोगी, राजयोगी स्वतः ही बन जायेंगे। योग लगाना नहीं पड़ेगा लेकिन हर सेकण्ड, हर समय योगी जीवन स्वतः ही होगी।

चार सबजेक्ट का सार

ज्ञान

बाप ही मेरा संसार है।

धारणा

संसार और संस्कार दो शब्द याद रखना।

योग

हर गुण, हर शक्ति मेरा निज़ी संस्कार है।

सेवा

सेवा में सरेन्दर होना।



बात बड़ी या बाप बड़ा?

बात का प्रभाव

जब बात आ जाती है फिर तो मुश्किल है? लेकिन बात आपके आगे क्या है? बात बड़ी या बाप बड़ा? कौन बड़ा है?

दृष्टिकोण बदलो

लेकिन उस समय बात बड़ी लगती है। बापदादा के पास ऐसे समय के बच्चों के फोटो बहुत हैं। म्यूजियम लगा हुआ है।

समाप्ति समारोह मनाओ

अभी समाप्ति समारोह मनाओ। जब आप यह समाप्ति समारोह मनायेंगे तब विश्व परिवर्तन का समारोह आपके सामने आयेगा।

बेहद का हाल है ना। देखो जैसे रूण्ड माला दिखाई है ना। वैसे यहाँ आकर देखो तो रूण्ड माला ही लगती है। सिर्फ आपको फेस दिखाई देगा, बस।

एवररेडी रहो

रिहर्सल का महत्व

लास्ट समय में तो बहुत कुछ होने वाला है। अगर थोड़ी सी रिहर्सल कर ली तो अच्छा है। थोड़ी रिहर्सल होनी चाहिए।

तैयारी का अभ्यास

बैग बैगेज समेटना और भागना, दौड़ना - यह तो एक्सरसाइज कराई। वैसे तो बूढ़ी-बूढ़ी मातायें भागती नहीं हैं लेकिन रात को बिस्तर और अटैची लेकर तो भागी।

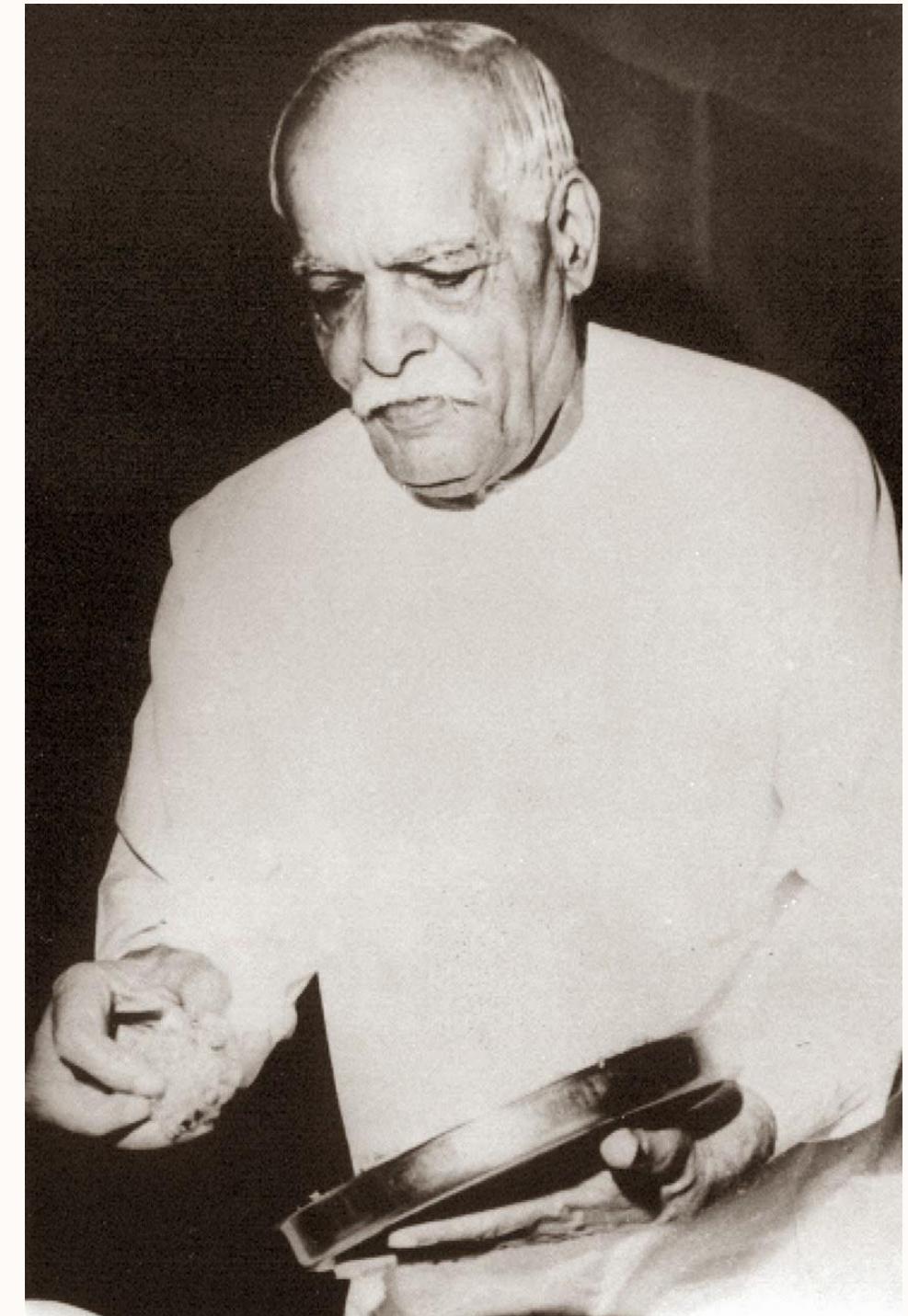
सदा तैयार रहो

बापदादा ने कहा है एवररेडी रहो। इसमें भी एवररेडी, बारिस पड़ी सेकण्ड में चल पड़े।

बच्चों का स्नेह

बापदादा को बच्चों का स्नेह देखकर खुशी होती है और सदा यही बच्चों को कहते हैं - आओ बच्चे, आओ। नहीं आओ, कैसे कहेंगे! कह सकते हैं?

तो सभी जितने भी आये हो, खुशी से आये हो और खुशी लेकर जाना और टोली के साथ-साथ पहले खुशी बांटना - उसके साथ टोली बांटना।



एडवांस पार्टी की सेवा

एडवांस पार्टी का कार्य

कल वतन में एडवांस पार्टी इमर्ज हुई थी। बापदादा से रूहरिहान कर रहे थे और बापदादा से पूछ रहे थे कि हमें जिस सेवा के अर्थ निमित्त बनाकर भेजा है, वह सेवा कब शुरू होगी?

नई सृष्टि की स्थापना

विशेष योग की सबजेक्ट में आगे रहने वाली ऐसी आत्मायें, योगबल से जन्म देने के निमित्त बन नई सृष्टि की स्थापना करेंगी।

एवररेडी की आवश्यकता

जब आप कहेंगे एवररेडी, तब उन्हों की सेवा आरम्भ होगी।

अचानक परिवर्तन

विनाश का समय

इसीलिए विनाश का समय कभी भी फिक्स नहीं होना है। अचानक होना है। बापदादा ने पहले से ही इशारा दे दिया है, उस समय नहीं उल्हना देना कि बाबा थोड़ा इशारा तो देते।

एवररेडी रहना

अचानक होना है, एवररेडी रहना है। इसके लिए एक निमित्त महारथी को एकजैम्पल बनाया (दादी चन्द्रमणी को)।

मन से वायदा

दृढ़ संकल्प

जब बापदादा मिले तो सब मन से कहना, कागज का वायदा या मुख का वायदा नहीं, मन से वायदा करके दिखाना

पुराने संस्कार का त्याग

हम सब पुराने संस्कार खत्म कर अपने निजी संस्कार धारण करने वाले एवररेडी आत्मायें हैं।

छोटी बातों से मुक्ति

छोटी-छोटी बातें खत्म करो। ऐसे लगता है जैसे 60 साल का बुजुर्ग और बच्चे माफिक गेंद से खेलें। अच्छा नहीं लगता।

ज्ञान रत्नों से खेलो

1

मिट्टी से खेलना छोड़ो

गेंद क्या, मिट्टी से खेलते हो। देह- अभिमान की मिट्टी से खेलते हो।

2

ज्ञान रत्नों से खेलो

अभी ज्ञान रत्नों से खेलो, गुणों से खेलो, शक्तियों से खेलो, मिट्टी से नहीं।

3

देह-अभिमान त्यागो

किसी भी प्रकार का देह-अभिमान, मिट्टी से खेलना है।

होली मनाना अर्थात् सम्पूर्ण पवित्र बनकर संस्कार मिलन

मनाना 1 MARCH 1999

बापदादा चारों ओर के अपने होलीएस्ट और हाइएस्ट बच्चों को देख रहे हैं। विश्व में सबसे हाइएस्ट ऊँचे-ते-ऊँचे श्रेष्ठ आत्मायें आप बच्चों के सिवाए और कोई है? क्योंकि आप सभी ऊँचे-ते-ऊँचे बाप के बच्चे हैं।

अव्यक्त बापदादा



आप हैं सबसे ऊँचे मर्तबे वाले

1

राज्य-अधिकारी स्वरूप

आपसे ऊँचे राज्य अधिकारी कोई नहीं बने हैं।

2

पूजन और गायन

आप आत्माओं की जितनी विधिपूर्वक पूजा होती है उससे ज्यादा और किसी की नहीं होती।

3

चैतन्य और जड़ रूप

आप चैतन्य आत्मायें हैं और दूसरे तरफ आपके जड़ चित्र पूज्य रूप में हैं।

आपका राज्य है सबसे श्रेष्ठ

निर्विघ्न राज्य

सारे कल्प में निर्विघ्न, अखण्ड-अटल राज्य एक आप आत्माओं का ही चलता है।

विश्वराजन

आप विश्वराजन वा विश्वराजन की रॉयल फैमिली सबसे श्रेष्ठ हैं।

परमात्म वर्से के अधिकारी

आप परमात्म-वर्से के अधिकारी, परमात्म मिलन के अधिकारी, परमात्म-प्यार के अधिकारी हैं।



संगमयुग का सुख और सुहावना समय

संगम का प्यारा समय

संगमयुग का समय राज्य के समय से भी प्यारा लगता है। यह सुख, प्राप्तियाँ और सुहाना समय बहुत प्यारा लगता है।

बाप के साथ सुरक्षित

कोई भी परिस्थिति आवे तो बाप के साथ रहने से सुरक्षित रहेंगे। जैसे बिल्ली के पूँगरे भट्टी में होते हुए भी सेफ रहे।

बाप को साथी बनाएं

- 1 अकेलेपन से बचें
कभी-कभी कामकाज़ या सेवा में अकेले अनुभव न करें।
- 2 बाप को साथी बनाएं
हज़ार भुजा वाले बाप को साथी बनाएं, जो ज्यादा सहयोग देगा।
- 3 सदा साथ का अनुभव
बापदादा सदा साथ देने के लिए आए हैं,
इस अनुभव को सदा याद रखें।





संगमयुग पर ब्रह्माकुमार वा ब्रह्माकुमारी अकेले नहीं



सेवा में बिजी न हों

सेवा में बहुत बिजी होने से बाप का साथ न भूलें और न थकें।



बाप का सहयोग

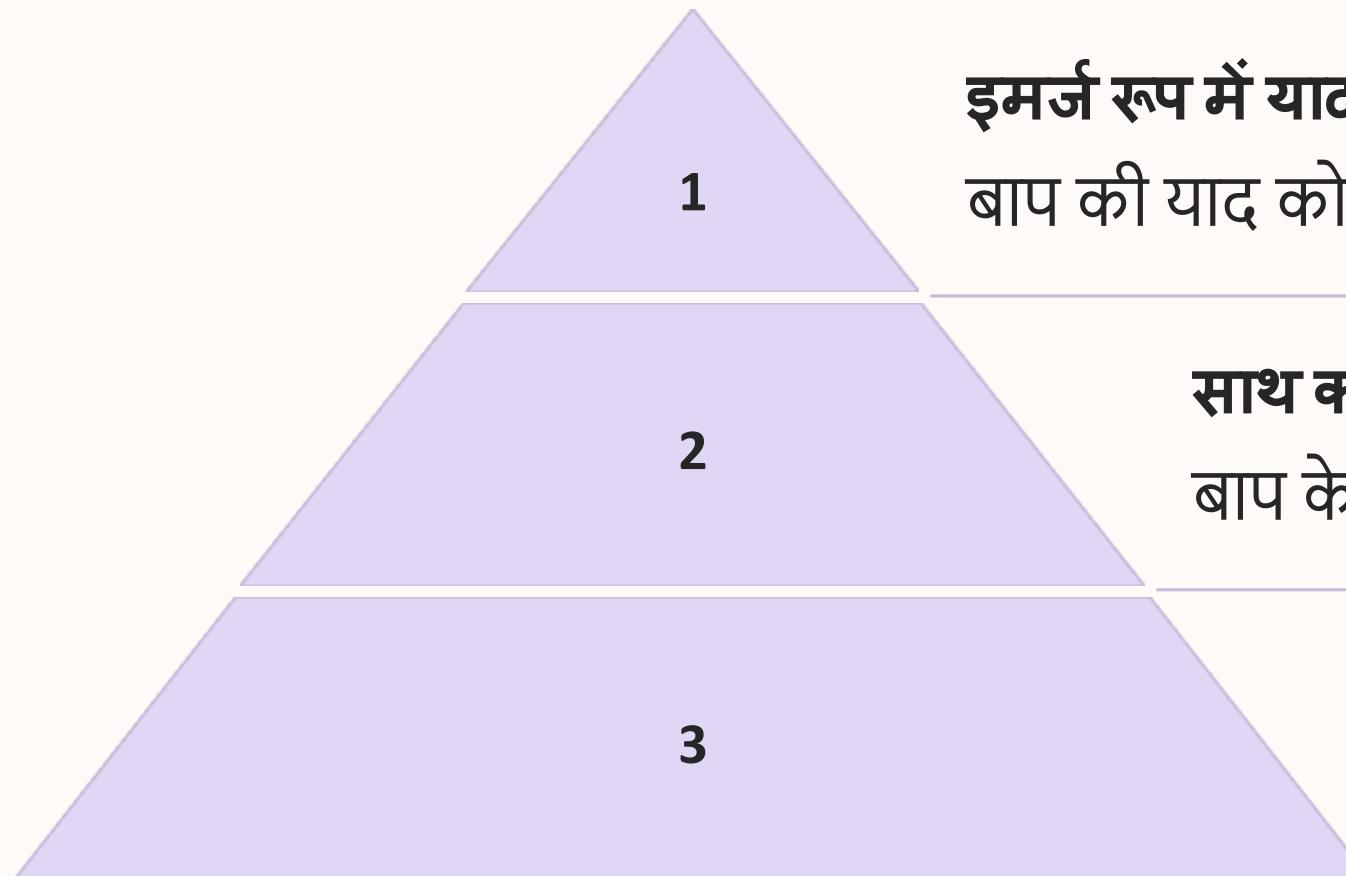
शिव बाप और ब्रह्मा बाप दोनों हर समय सहयोग देने के लिए सदा हाज़र हैं।



स्नेह और अधिकार

अपने अधिकार और प्रेम की सूक्ष्म रस्सी से बाप को बाँधकर रखें।

संगमयुग के सुख और सुहेजों को इमर्ज रखें



इमर्ज रूप में याद

बाप की याद को इमर्ज रूप में रखें, मर्ज रूप में नहीं।

साथ का अनुभव

बाप के साथ का अनुभव सदा इमर्ज रखें।

प्यार का फायदा

बाप से प्यार टूट नहीं सकता, इसलिए प्यार का फायदा उठाएं।

मधुबन का प्यार और सहयोग



मधुबन का आकर्षण

प्यार ही मधुबन निवासी बनाता है। चाहे अपने स्थान पर कैसे भी रहें, कितना भी मेहनत करें लेकिन फिर भी मधुबन में पहुंच जाते हैं।

सरकमस्टांश की दीवार

बाप का प्यार सरकमस्टांश की दीवार पार करा लेता है। चाहे डबल फॉरेन्स हों, चाहे भारतवासी, सबको यह बाप का प्यार मदद करता है।

होली मनाने का अर्थ

1

होलीएस्ट बनना

सभी बच्चों का एक ही टाइटल है होलीएस्ट।

2

पवित्रता का आधार

पवित्रता ब्राह्मण जीवन का मुख्य आधार है।

3

योगी जीवन

पवित्रता ही योगी जीवन का आधार है।



पवित्रता का महत्व

मन्सा पवित्रता

मन्सा में भी अपवित्रता का अंश धोखा दे देगा। इसलिए मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें पवित्रता अति आवश्यक है।

आन्तरिक वर्सा

ब्राह्मण जीवन का आन्तरिक वर्सा सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप, मन की सन्तुष्टता है, उसका अनुभव करने के लिए मन्सा की पवित्रता चाहिए।

धोखा न दें

बाहर के साधनों द्वारा या सेवा द्वारा अपने आपको खुश करना - यह भी अपने को धोखा देना है।

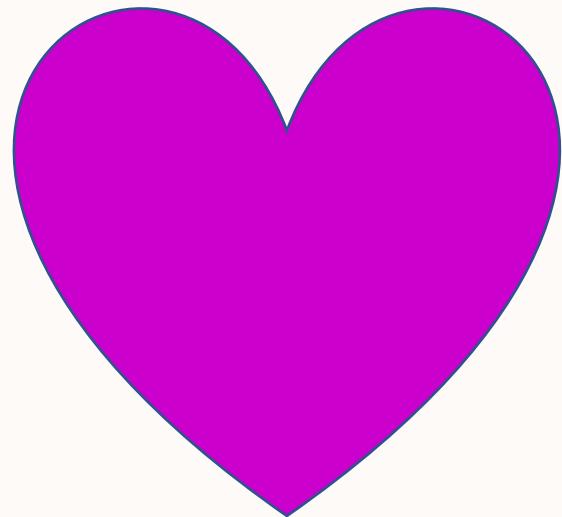
सेवा और पवित्रता का संतुलन

सेवा का फल

सेवा युक्तियुक्त नहीं भी है, मिक्स है, कुछ याद और कुछ बाहर के साधनों वा खुशी के आधार पर है, दिल के आधार पर नहीं लेकिन दिमाग के आधार पर सेवा करते हैं तो सेवा का प्रत्यक्ष फल उन्हों को भी मिलता है।

जमा करने की विधि

जमा करने की विधि है - मन्त्रा, वाचा, कर्मणा - पवित्रता। फाउण्डेशन पवित्रता है। सेवा में भी फाउण्डेशन पवित्रता है। स्वच्छ हो, साफ हो।



होली का वास्तविक अर्थ

जलाना

अपवित्रता को जलाना होली का पहला चरण है।

मनाना

पवित्रता की प्राप्ति पर खुशी मनाना दूसरा चरण है।

संस्कार मिलन

पवित्र बन संस्कार मिलन मनाना होली का असली उद्देश्य है।



खुशी की महत्वता

सदा खुश रहें

जब सर्व प्राप्ति हैं, तो सदा खुशी है ही। खुशी अपनी खुराक है।

खुशी बांटें

सदा खुश रहने वाले, औरों को भी खुशी बांटते हैं।

खुशनसीब और खुशमिजाज

बापदादा सदा हर बच्चे को खुशनसीब की नज़र से देखते हैं। खुशनसीब हैं और खुशमिजाज हैं।



एकरस स्थिति का महत्व

- 1
- 2
- 3

सदा एकरस

बाप के बच्चे सदा एकरस रहते हैं। कभी किस रस में, कभी किस रस में, नहीं।

मौज में रहें

कुछ भी हो, बाप साथ है, मूँझने की क्या बात है। कनफ्युज़ होने की क्या बात है।

बाप का साथ

बाप के साथ का सहयोग लें, अकेले समझने से मौज के बजाए मूँझ जाते हैं।

सेवा का बल और मौज

सेवा का बल

सेवा का बल है तो उस बल को कार्य में लगाओ। सिर्फ सेवा नहीं करो लेकिन सेवा का बल जो बाप से मिलता है, उसको काम में लगाओ।

मौज का युग

संगमयुग मौजों का युग है या मूँझने का युग है? मौज का है तो फिर मूँझते क्यों हो? अपने जीवन की डिक्षनरी से मूँझना शब्द निकाल दो।

पेपर और मौज

पेपर है, बात नहीं

कुछ भी हो जाए, यह पेपर पास करना है। बात नहीं है, पेपर है।

पेपर पास की खुशी

पेपर पास करने में खुशी होती है। क्लास आगे बढ़ते हैं।

अनुभव में आगे बढ़ना

पेपर ही अनुभव में आगे बढ़ते हैं, इसलिए सदा मौज में रहने वाले।

मौज में रहने वाले सेवाधारी



सदा हर्षित

सभी अपने श्रेष्ठ भाग्य को देख हर्षित होते हैं। सदा हर्षित रहें।



सर्व प्राप्ति

बाप मिला सब कुछ मिला। जब सब मिला, तो जहाँ सर्व प्राप्ति हैं, वहाँ सदा खुशी है ही।



खुशी बांटना

सदा खुश रहने वाले, औरों को भी खुशी बांटते हैं। जब भी आपको कोई देखे तो खुशी की झलक दिखाई दे।



एकरस स्थिति का महत्व

सदा एकरस

बाप के बच्चे सदा एकरस रहते हैं। कभी किस रस में, कभी किस रस में, नहीं।

बाप का साथ

कुछ भी हो, बाप साथ है, मूँझने की क्या बात है। कनप्पुज़ हीने की क्या बात है।

मायाजीत

बाप का हाथ पकड़ लो तो माया भाग जायेगी। सदा मायाजीत रहें।

मधुबन निवासियों की विशेषता

मधुरता और वैराग्य

मधुबन निवासी अर्थात् कर्म में मधुरता और वृत्ति में बेहद का वैराग्य। वन में बेहद का वैराग्य होता है।

एकस्ट्रा गिफ्ट

मधुबन निवासी अर्थात् एकस्ट्रा गिफ्ट के अधिकारी। निश्चिंत होकर अपनी ऊँटी बैंजाई और मौज में रहे।



मधुबन निवासियों का दायित्व

1

पावरफुल योग

कम से कम 4 घण्टा पावरफुल योग रहता है। निरन्तर याद तो है ही लेकिन पावरफुल याद वह कम से कम 4 घण्टे है।

2

वायब्रेशन फैलाना

मधुबन निवासियों को स्पेशल अटेन्शन रखना है कि हमें चारों ओर पावरफुल याद के वायब्रेशन फैलाने हैं।

3

ऊँचे स्थान का दायित्व

आप ऊँचे-ते-ऊँचे स्थान पर बैठे हो। ऊँची टावर जो होती है, वह सकाश देती है।

मधुबन का वायुमण्डल

तेज़ प्रभाव

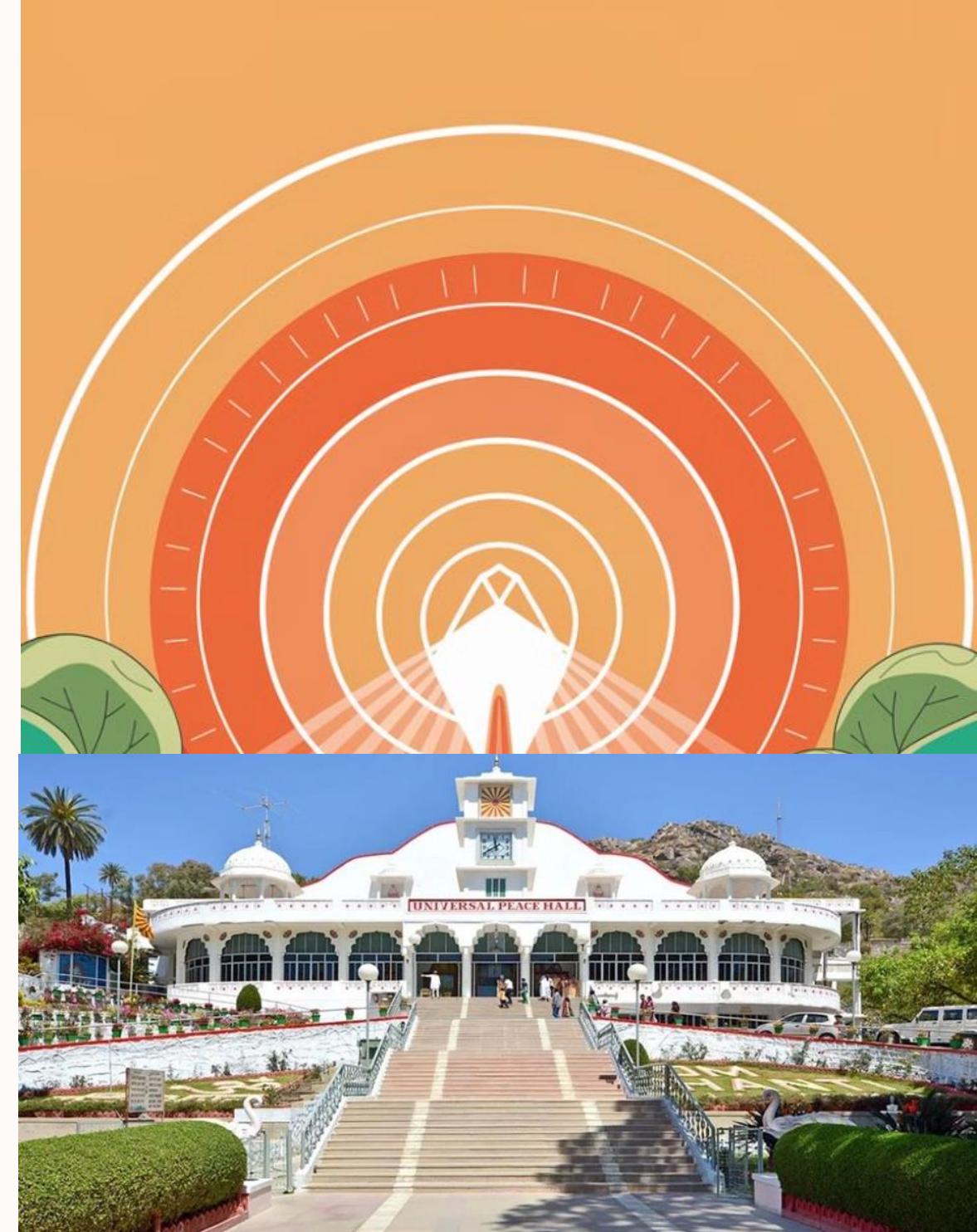
मधुबन का वायब्रेशन चाहे कमजोरी का, चाहे पावर का - दोनों ही बहुत जल्दी फैलता है।

विजय का निमित्त

मधुबन निवासी समझो विजय प्राप्त करने और कराने के निमित्त हैं।

जिम्मेवारी

मधुबन का वायुमण्डल चारों ओर वायुमण्डल बनाता है। यह आपकी जिम्मेवारी है।



MADHUBAN
SPIRITUAL CENTER

संगठन और रूहरिहान का महत्व



उन्नति के प्लैन

आपस में संगठन बनाकर उन्नति के प्लैन वा रूहरिहान करते हैं। यह बहुत अच्छा है, इसको छोड़ना नहीं।

उमंग-उत्साह

संगठन में लाभ होता है और सारा दिन समझो कर्मणा किया, थोड़ा समय भी आपस में उन्नति की रूहरिहान करने से चेंज हो जाते हैं। उमंग-उत्साह भी बढ़ता है।

वायुमण्डल को पावरफुल बनाना

आपस में ऐसी रूहरिहान करना - यह एक दो को रिफ्रेश करना है। वायुमण्डल को पावरफुल बनाना है।

पावरफुल योग का लक्ष्य

4

न्यूनतम घंटे
कम से कम 4 घण्टा
पावरफुल योग का लक्ष्य रखें।

6

बेहतर लक्ष्य
4 से 6 घंटे तक बढ़ाएं
तो और बेहतर है।

8

उत्तम लक्ष्य
8 घंटे तक पहुंचना उत्तम लक्ष्य है।



पावरफुल योग का अध्यास

1

छोटे-छोटे समय

5 मिनट 10 मिनट पावरफुल स्टेज बनाओ - टोटल में 4 घण्टा होना चाहिए।

2

लचीला समय

चाहे आधा घण्टा मिलता है, चाहे 5 मिनट मिलता है
लेकिन जमा 4 घण्टा होना चाहिए।

3

पूरा करना

एक दिन अगर 4 घण्टे नहीं हो तो दूसरे दिन 6 घण्टे करके 4 घण्टे पूरे करना।





मधुबन निवासियों की महिमा



नूरे रत्न

बापदादा मधुबन निवासियों को सदा नयनों के सामने देखते हैं। नूरे रत्न देखते हैं।



स्वमान

मधुबन वाला कहाँ भी जाता है तो किस नजर से सभी देखते हैं? मधुबन वाला आया है।



अनेक गिफ्ट

मधुबन निवासी बनना अर्थात् अनेक गिफ्ट के अधिकारी बनना।

चार्ट रखने का महत्व

नियमित चेक

15-15 दिन के बाद चार्ट की रिजल्ट देखेंगे। चार्ट में देना - हाँ या ना। ऊपर तारीख लिखना और नीचे हाँ ना, हाँ ना।

पावरफुल याद

बस दो या 3 या 4 घण्टा पावरफुल याद रही। बस, ज्यादा नहीं लिखना। पढ़ने का टाइम नहीं मिलता है ना।

मधुबन निवासियों की दुआएं

सेवा की दुआएं

जो आई.पी. भी आते हैं,
योग शिविर में आते हैं,
कांफ्रेंस में आते हैं तो
मधुबन की सेवा देख करके
दुआयें तो देते हैं ना।

दिल से निकलने वाली दुआएं

हर एक के दिल से
निकलता है - वाह सेवाधारी
वाह! तो दुआयें भी तो जमा
हो रही हैं।

कमाल करके दिखाना

तो कमाल करके दिखाना। मधुबन वालों का रिकार्ड 4 घण्टे
का जरूर हो, ज्यादा भी हो तो और अच्छा।



मधुबन की बहिनों की विशेषता

विशेषताओं को पहचानना

हर एक में विशेषतायें हैं, ऐसे नहीं कोई विशेषता नहीं है। सभी में हैं।

कार्य में लगाना

सिर्फ उसको कार्य में लगाने से कृद्धि को प्राप्त होती जायेगी।

दूसरों की विशेषता देखना

औरों की भी विशेषता देखो और अपनी विशेषता कार्य में लगाओ।

मधुबन की बहिनों का महत्व



दुआओं की पात्र

सभी के दुआओं की पात्र हो।
पुण्य का खाता जितना बनाने
चाहो उतना बना सकते हो।



समय का सदुपयोग

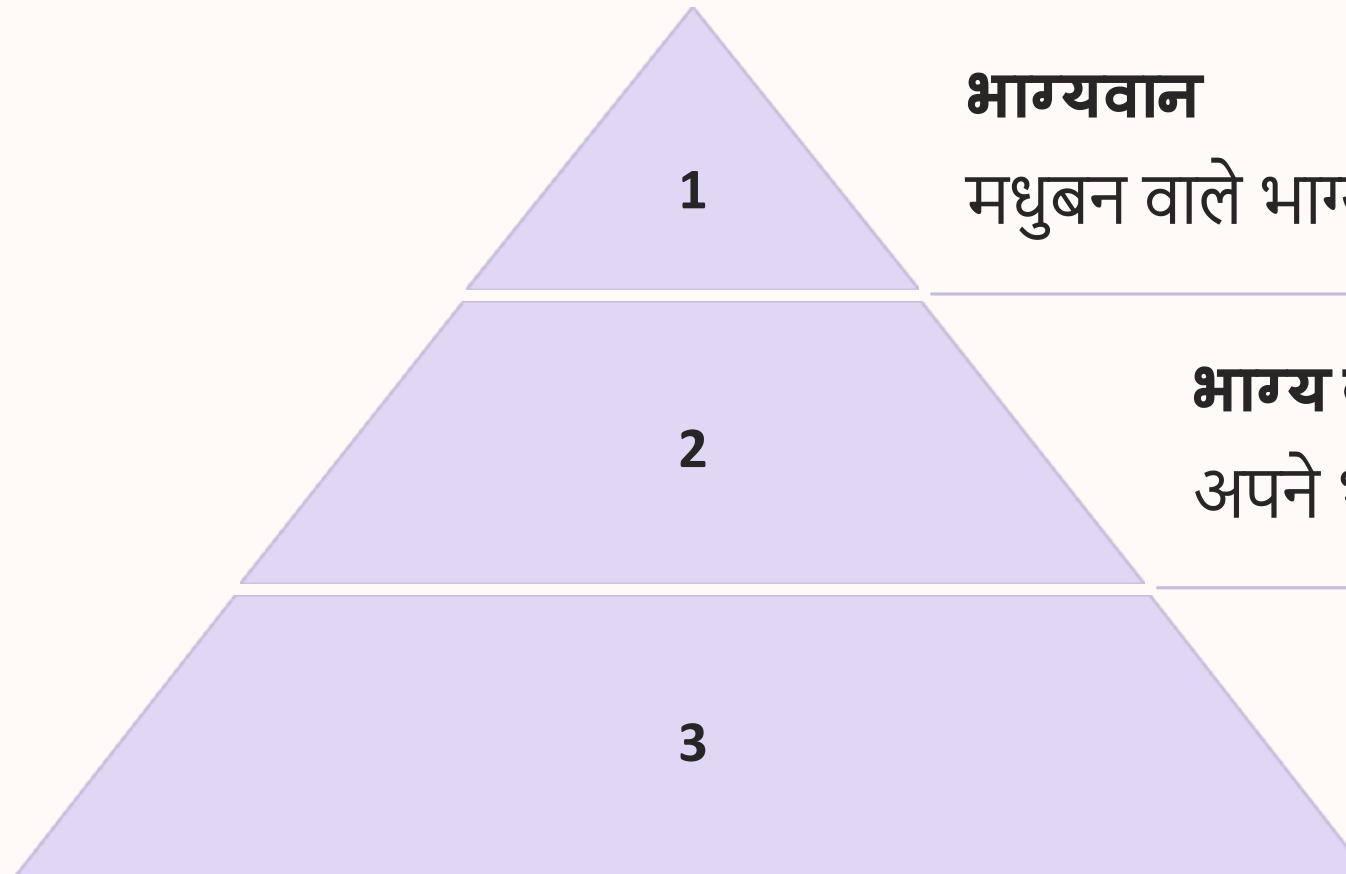
समय को जितना सफल करने
चाहो उतना कर सकते हो। चांस
तो है ना!



चांसलर बनना

चांस आपेही लो, चांस ऐसे नहीं
मिलेगा। चांस लेने से क्या बन
जायेंगे? चांसलर।

मधुबन निवासियों का भाग्य



बहिनों के लिए विशेष संदेश

पहला नम्बर

अभी 4 घण्टे में पहला नम्बर बहिनें आनी चाहिए।

दृढ़ संकल्प

ऐसे नहीं कहना - यह हो गया ना। यह होना नहीं चाहिए ना! यह नहीं। करना ही है।

मुबारक का इनाम

इन्हों को तो मुबारक का इनाम है। एडवांस में मुबारक है। इनाम को छोड़ना नहीं।

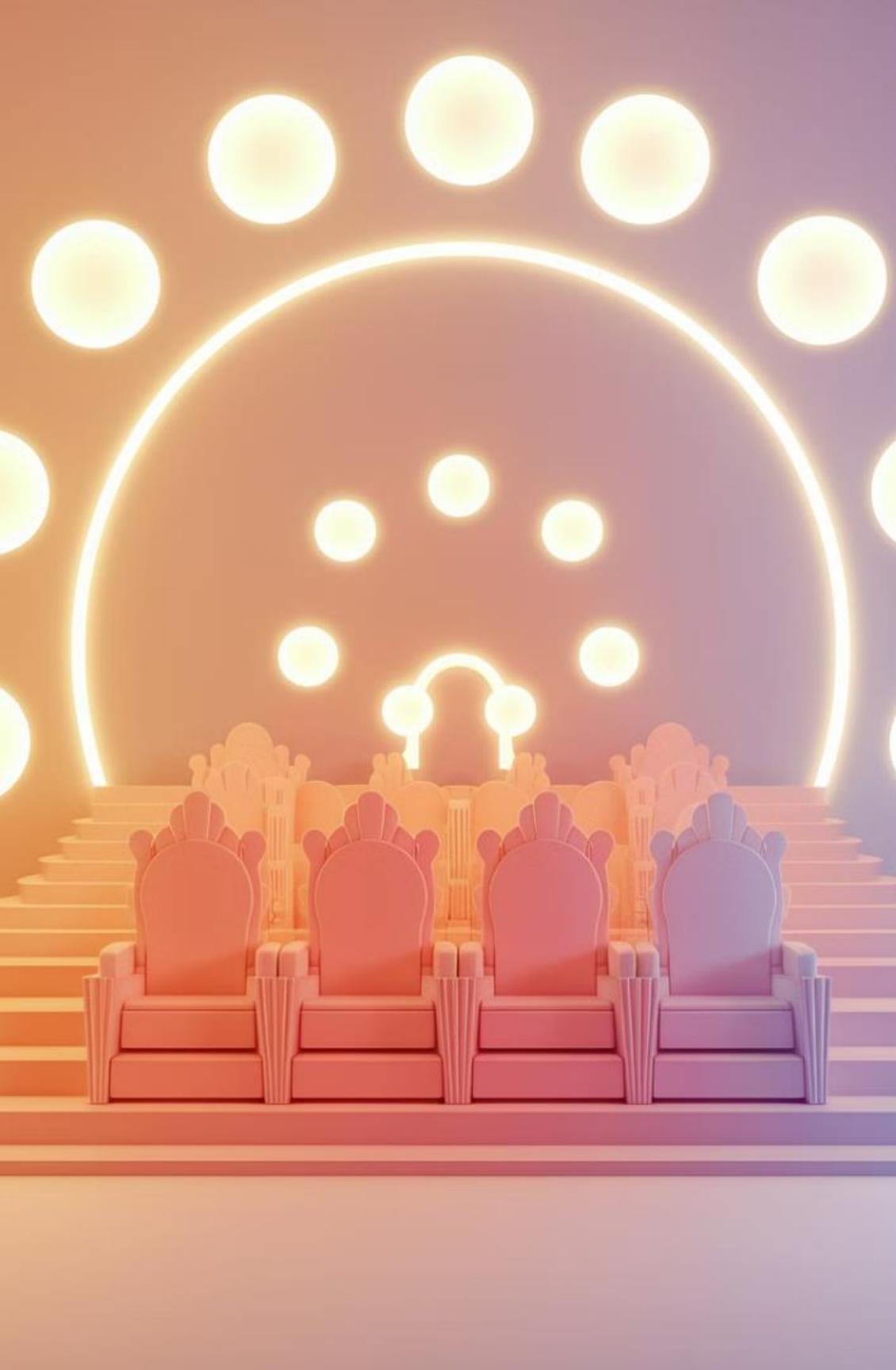
बापदादा की शुभ आशा

बहुतकाल का अभ्यास

बहुतकाल का अभ्यास चाहिए, कितना काल है वह नहीं सौचो, जितना बहुतकाल का अभ्यास होगा, उतना अन्त में भी धोखा नहीं खायेंगे।

इन्तज़ार नहीं, इन्तज़ाम

अगर किसी के भी बुद्धि में डेट का इन्तज़ार हो तो इन्तज़ार नहीं करना, इन्तज़ाम करो। बहुतकाल का इन्तज़ाम करो।



समय और तैयारी

समय की तैयारी

समय तो अभी भी एवररेडी है, कल भी हो सकता है लेकिन समय आपके लिए रुका हुआ है।

आप सम्पन्न बनो

आप सम्पन्न बनो तो समय का पर्दा अवश्य हटना ही है। आपके रोकने से रुका हुआ है।

राज्य-अधिकारी तैयारी

राज्य-अधिकारी तो तैयार हो ना? तख्त तो खाली नहीं रहना चाहिए ना!



बहुतकाल का अभ्यास

1

हर एक बच्चा तैयार हो

बापदादा की एक ही शुभ आशा है कि सब बच्चे चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं, जो भी अपने को ब्रह्माकुमारी या ब्रह्माकुमार कहलाते हैं, बहुतकाल का अभ्यास करें।

2

बहुतकाल के अधिकारी बनें

हर एक बच्चा बहुतकाल का अभ्यास कर बहुतकाल के अधिकारी बनें। कभी-कभी के नहीं।

3

दृढ़ संकल्प

दृढ़ संकल्प का हाथ सदा के लिए उठाओ।
मन का हाथ भी उठाओ।

पवित्रता की झलक

मस्तक में पवित्रता की मणी

बापदादा एक-एक बच्चे के मस्तक में सम्पूर्ण पवित्रता की चमकती हुई मणी देखने चाहते हैं।

नयनों में पवित्रता

नयनों में पवित्रता की झलक, पवित्रता के दो नयनों के तारे, रूहानियत से चमकते हुए देखने चाहते हैं।

बोल और कर्म में पवित्रता

बोल में मधुरता, विशेषता, अमूल्य बोल सुनने चाहते हैं। कर्म में सन्तुष्टता, निर्माणता सदा देखने चाहते हैं।



सेवा करते उपराम और बेहद द्वारा एवररेडी बन, बह्मा बाप समान सम्पन्न बनो

3 FEB 2005

आज ग्रेट ग्रेट ग्रैण्ड फादर अपने चारों ओर के कोटों में कोई और कोई में भी कोई बच्चों के भाग्य को देख हर्षित हो रहे हैं। इतना विशेष भाग्य और किसी को भी मिल नहीं सकता। हर एक बच्चे की विशेषता को देख हर्षित होते हैं।

SB

अव्यक्त बापदादा

बच्चों की विशेषताएं

बाप को पहचानना

साधारण रूप में आये हुए बाप को पहचान "मेरा बाबा" मान लिया। यह पहचान सबसे बड़ी विशेषता है।

दिल से माना

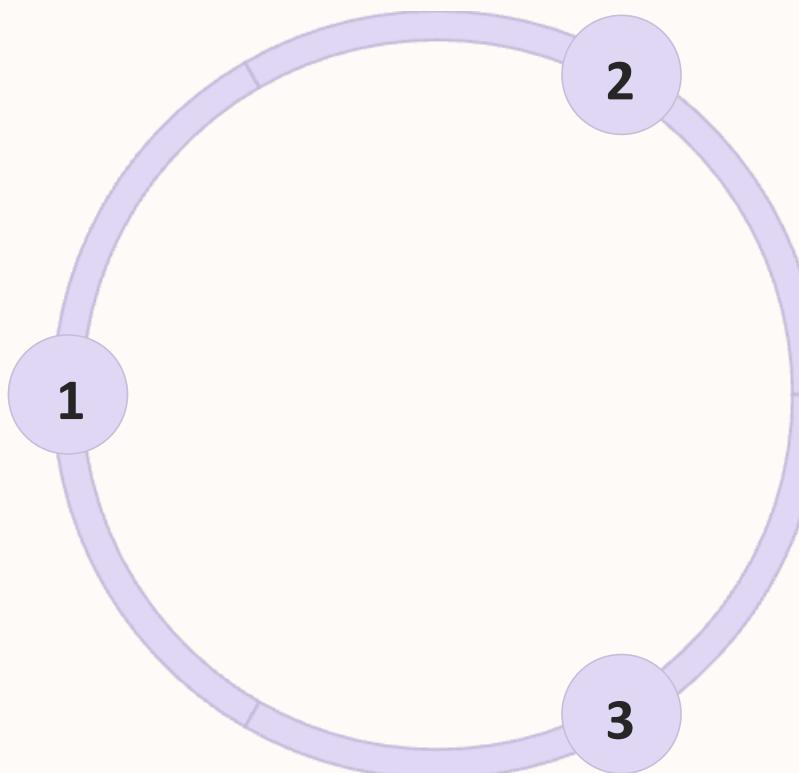
दिल से माना मेरा बाबा, बाप ने माना मेरा बच्चा।

अधिकार लेना

जो बड़े-बड़े फिलासोफर साइंसदान धर्मात्मा नहीं पहचान सके, वह साधारण बच्चों ने पहचान अपना अधिकार ले लिया।

बच्चों का भाग्य

पहचानना
बाप को पहचान अपना बनाना, यह आप कोटों में कोई बच्चों का भाग्य है।



दिल से स्वीकार
सभी बच्चों ने दिल से पहचान लिया है!

मुबारक
बापदादा पहचानने के विशेषता की हर एक बच्चे को मुबारक दे रहे हैं।

बच्चों का गीत

पाना था वो पा लिया।

बच्चों के दिल का गीत बापदादा सुनते रहते हैं। बाप भी कहते ओ लाडले बच्चे, जो बाप से लेना था वो ले लिया। हर एक बच्चा अनेक रुहानी खज़ानों के बालक सो मालिक बन गये।



खज़ानों का पोतामेल

आज बापदादा खज़ानों के मालिक बच्चों के खज़ाना का पोतामेल देख रहे थे। बाप ने खज़ाना तो सबको एक जैसा, एक जितना दिया है। किसको पदम, किसको लाख नहीं दिया है।

1

जानना

खज़ानों को जानना

2

प्राप्त करना

खज़ानों को प्राप्त करना

3

जीवन में समाना

खज़ानों को जीवन में समाना





समय की समीपता

बापदादा आजकल बार-बार भिन्न-भिन्न प्रकार से बच्चों को अटेंशन दिला रहे हैं - समय की समीपता को देख अपने आपको सूक्ष्म विशाल बुद्धि से चेक करो क्या मिला, क्या लिया और निरन्तर उन खजानों में पलते रहते हैं?

1

चेकिंग

चेकिंग बहुत आवश्यक है

2

माया की ट्रायल

माया वर्तमान समय भिन्न-भिन्न रॉयल प्रकार के अलबेलापन और रॉयल आलस्य के रूप में ट्रायल करती रहती है।

3

निरंतर अटेंशन

इसलिए अपनी चेकिंग सदा करते चलो।

गहन चेकिंग की आवश्यकता

साधारण चेकिंग

बुरा नहीं किया,
दुख नहीं दिया.
बुरी वृष्टि नहीं हुई,
यह चेकिंग तो हुई

गहन चेकिंग

अच्छे ते अच्छा क्या किया?
सदा आत्मिक वृष्टि नेचरल रही?
या विस्मृति स्मृति का खेल किया?



जमा का खाता

कितनो को शुभ भावना, शुभ कामना, दुआयें दी? ऐसे जमा का खाता कितना और कैसे रहा? क्योंकि अच्छी तरह से जानते हो कि जमा का खाता सिर्फ अभी कर सकते हैं।

फुल सीजन

यह समय, फुल सीजन खाता जमा करने की है।

राज्य भाग्य

फिर सारा समय जमा प्रमाण राज्य भाग्य और पूज्य देवी-देवता बनने का है।

जमा का महत्व

जमा कम तो राज्य भाग्य भी कम और पूज्य बनने में भी नम्बरवार होता है।

बापदादा की इच्छा

बापदादा का हर एक बच्चे से अति प्यार है, तो बापदादा यहीं चाहते कि हर एक बच्चा सम्पन्न बने, समान बने। सेवा करो लेकिन सेवा में भी उपराम बेहद।



प्यार

बापदादा का हर एक बच्चे से
अति प्यार



सम्पन्नता

हर एक बच्चा सम्पन्न बने



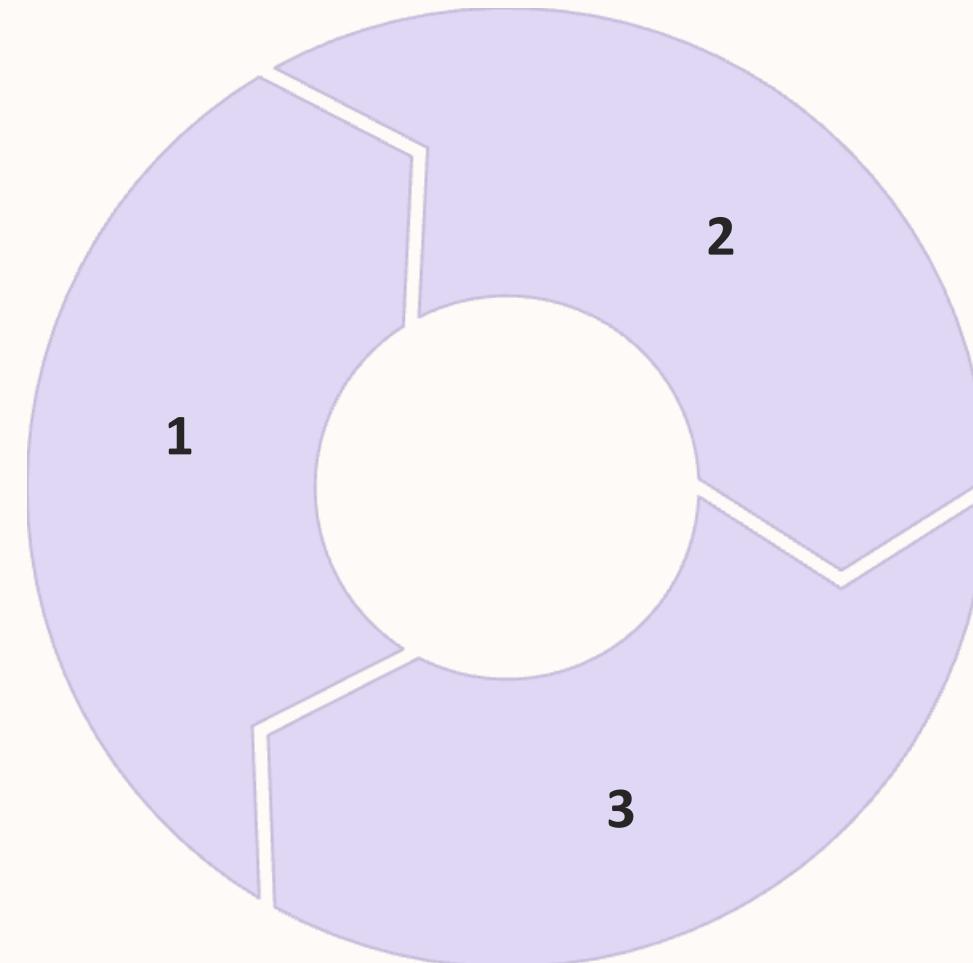
सेवा

सेवा करो लेकिन उपराम बेहद

योग और सेवा का संतुलन

बापदादा ने देखा है मैजारिटी बच्चों की योंग अर्थात् याद की सबजेक्ट में रुचि वा अटेंशन कम होता है, सेवा में ज्यादा है। लेकिन बिना याद के सेवा में ज्यादा है तो उसमें हद आ जाती है।

योग
याद की सबजेक्ट में रुचि बढ़ाएं



सेवा
सेवा में उपराम रहें

संतुलन
योग और सेवा का संतुलन बनाएं

उपराम वृत्ति की आवश्यकता

हद की वृत्ति

उपराम वृत्ति नहीं होती। नाम और मान का, पोजीशन का मिक्स हो जाता है। बेहद की वृत्ति कम हो जाती है।

बेहद की वृत्ति

इसलिए बापदादा चाहते हैं कि कोटों में कोई, कोई में कोई मेरे बच्चे अभी से एवररेडी हो जायें

एवररेडी बनने का महत्व

1 समय का महत्व

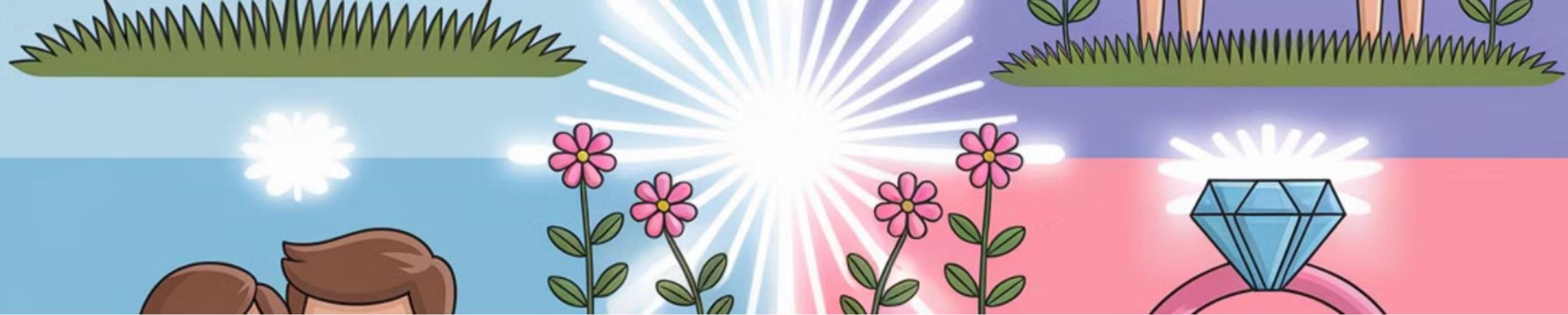
समय आपकी क्रियेंशन है,
क्या क्रियेंशन को अपना
शिक्षक बनायेंगे?

2 बहुतकाल का हिसाब

बहुतकाल का हिसाब है,
बहुतकाल की सम्पत्ता
बहुतकाल की प्राप्ति कराती है।

3 अभी से तैयारी

तो अभी समय की समीपता
प्रमाण बहुतकाल का जमा
होना आवश्यक है



बच्चों की सम्पूर्णता

बापदादा यही चाहते कि बच्चे में भी किमी भी एक सब्जेक्ट की कमी नहीं रह जाए।
ब्रह्मा बाप से तो प्यार है ना! प्यार का रिटर्न तो देंगे ना!

1

प्यार

ब्रह्मा बाप से प्यार

2

रिटर्न

प्यार का रिटर्न देना

3

कमी को चेक

अपनी कमी को चेक करो और रिटर्न दो

4

टर्न करना

अपने आपको टर्न करना,
यह रिटर्न है

शिवरात्रि की तैयारी

अभी शिवरात्रि आ रही है ना! तो सभी बच्चों को बाप की जयन्ती सो अपनी जयन्ती मनाने का उमंग बहुत प्यार से आता है। अच्छे-अच्छे प्रोग्राम बना रहे हैं।

उमंग-उत्साह

बाप की जयन्ती मनाने का उमंग

प्रोग्राम

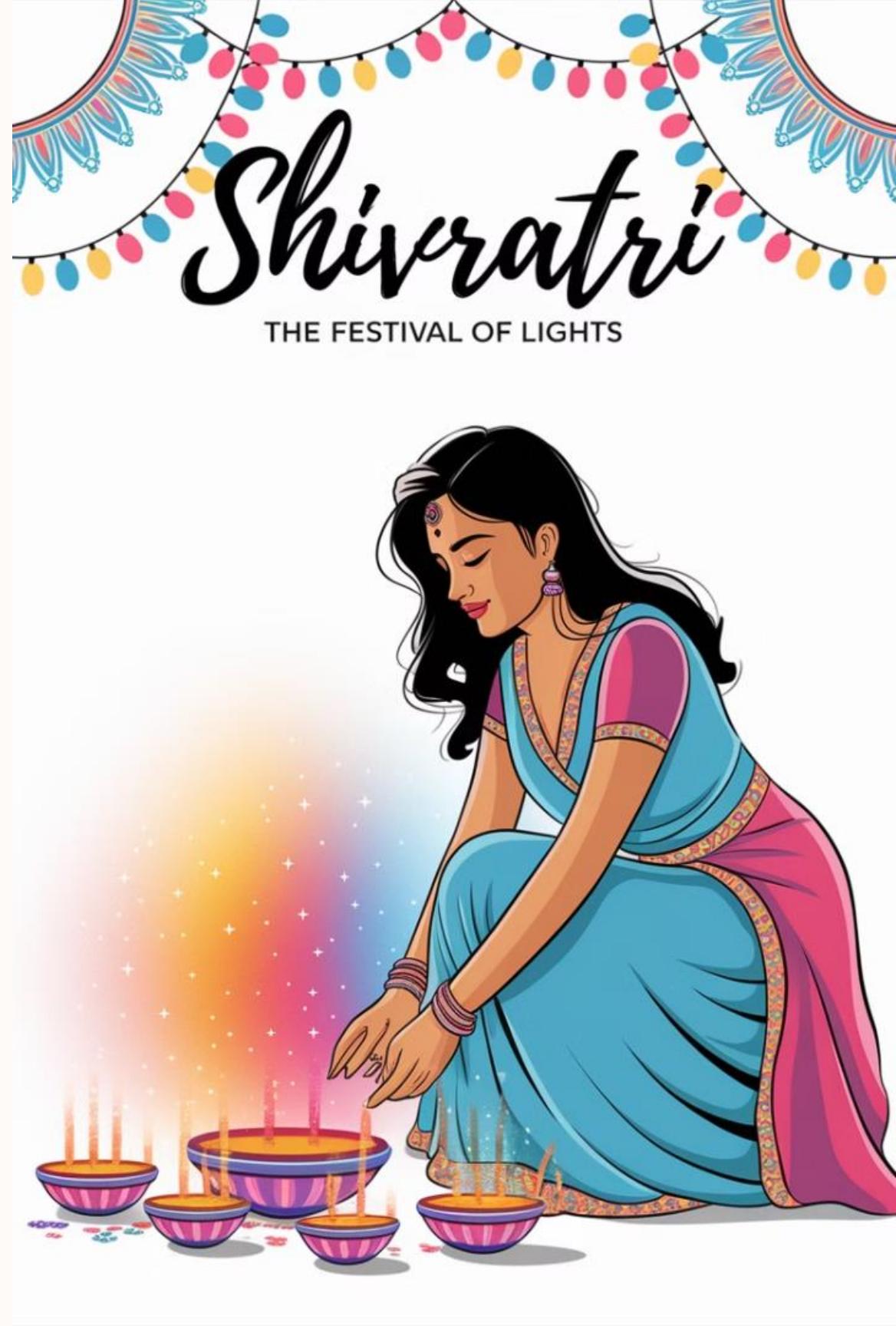
अच्छे-अच्छे प्रोग्राम बनाना

सेवा के प्लैन

सेवा के प्लैन बनाना

व्रत लेना

व्रत लेने का भी प्रोग्राम बनाना



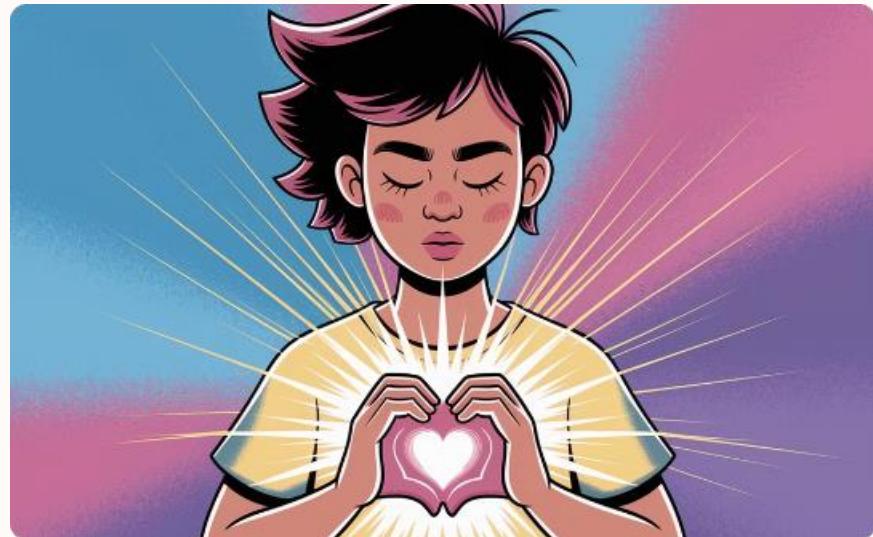
रिटर्न देने का संकल्प

रिटर्न देने की हिम्मत है? हाथ तो उठा लेते हो, बहुत खुश कर लेते हो। हाथ देखकर तो बापदादा खुश हो जाते हैं, अभी दिल में पक्का-पक्का एक परसेन्ट भी कच्चा नहीं, पक्का व्रत लो - रिटर्न देना ही है। अपने आपको टर्न करना है।



हिम्मत

रिटर्न देने की हिम्मत दिखाना



पक्का व्रत

दिल में पक्का व्रत लेना

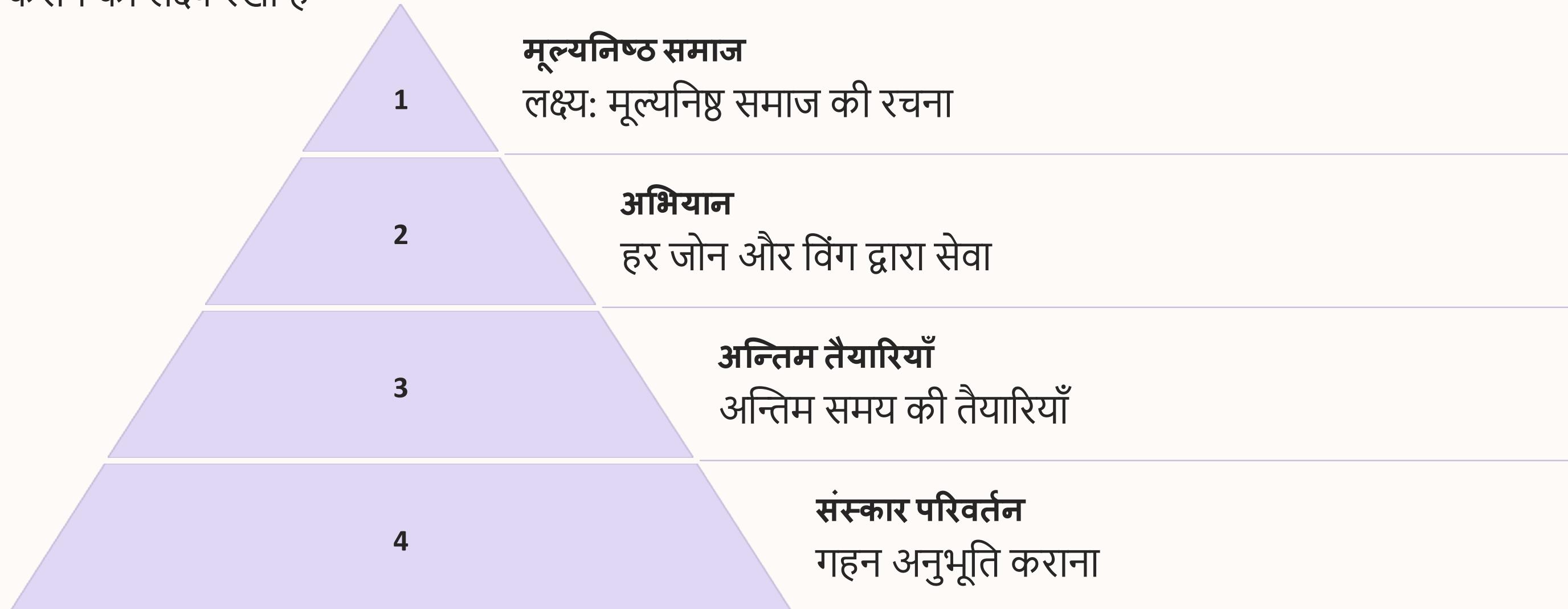


टर्न करना

अपने आपको टर्न करना

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना

स्पार्क ग्रुप ने मूल्यनिष्ठ समाज की रचना करने का लक्ष्य रख अभियान निकालने का सोचा है, जिसमें हर जोन हर विंग इसी के अन्तर्गत सेवा करे, साथ- साथ अन्तिम समय की तैयारियाँ तथा संस्कार परिवर्तन के विषय पर गहन अनुभूति कराने का लक्ष्य रखा है



यूथ ग्रुप की सेवा

यूथ ग्रुप भी सेवा करके आये हैं। सेवा में खुशी का मेवा खाया क्योंकि सेवा का मेवा मिलता है खुशी, उमंग-उत्साह। तो सिर्फ सेवा की, सेवा के साथ मेवा खाया, कितनी खुशी रही?

खुशी का मेवा

सेवा में खुशी का मेवा खाया

उमंग-उत्साह

सेवा का मेवा मिलता है उमंग-उत्साह

आगे बढ़ना

ऐसे ही आगे बढ़ते चलो



डबल विदेशी: मधुबन के श्रृंगार

डबल विदेशियों से मधुबन सज जाता है। चाहे ज्ञान सरोवर में रहो, चाहे नीचे रहो लेकिन आप मधुबन के डबल श्रृंगार हो। सब



मधुबन का श्रृंगार

डबल विदेशी मधुबन के श्रृंगार हैं

विश्व कल्याणकारी

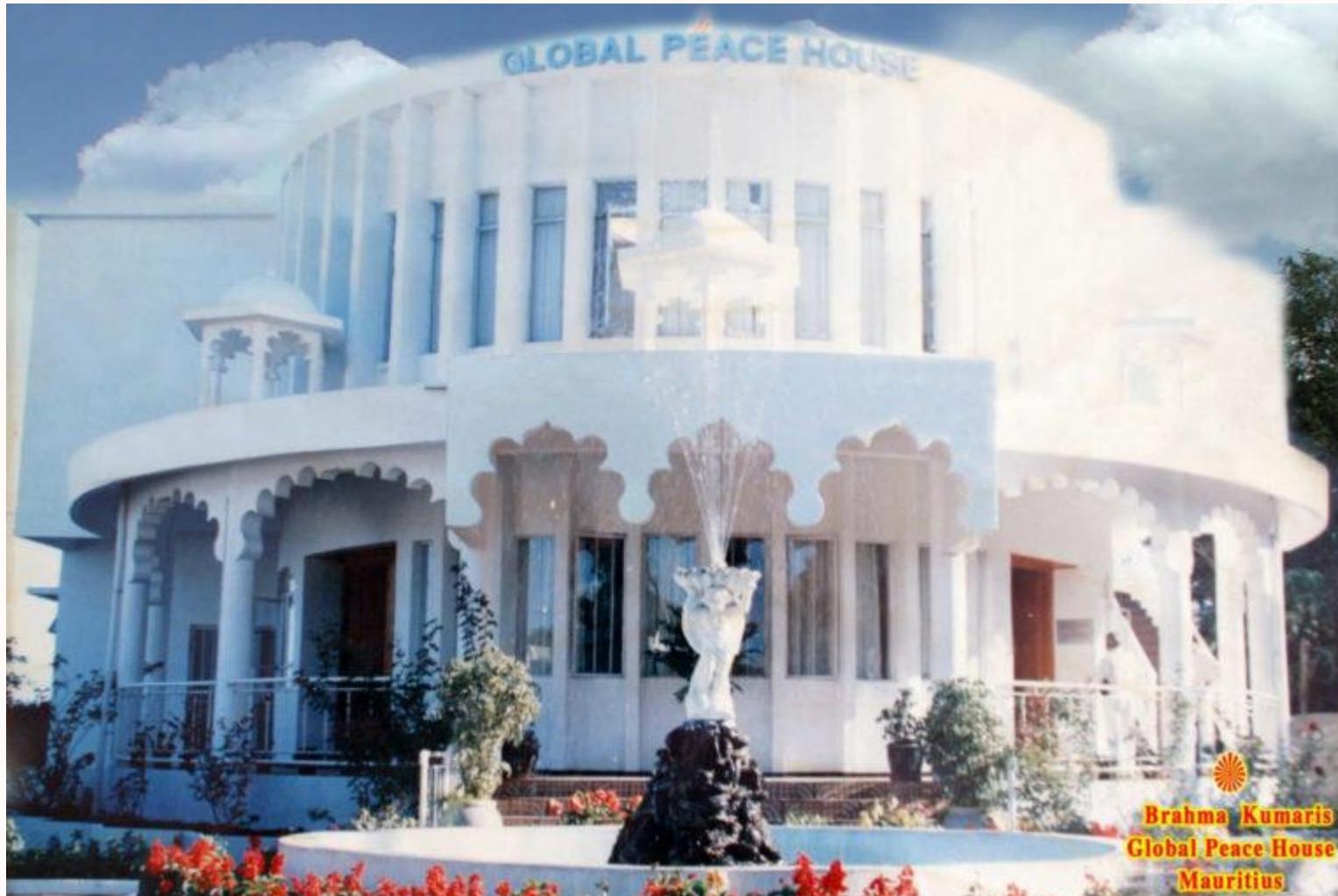
विश्व कल्याणकारी का टाइटल डबल फॉरिन सेवा से सिद्ध हुआ

सच्चाई सफाई

डबल फरिनस की विशेषता: सच्चाई सफाई

विदेश सेवा का महत्व

विश्व में कोने-कोने में सेवाकेन्द्र हैं। हर खण्ड में अनेक सेवाकेन्द्र हैं। एक यू.के., यूरोप में कितने होंगे, आस्ट्रेलिया में कितने होंगे?



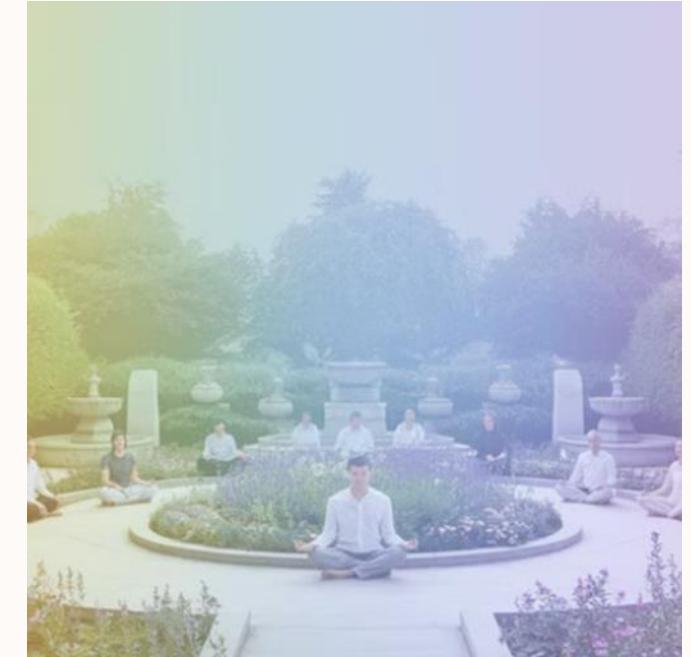
विदेशी सेवाधारियों की विशेषता

सच्चाई सफाई

बापदादा को एक डबल फरिनस की विशेषता बहुत अच्छी लगती है। सच्चाई सफाई। बता देते हैं। हिम्मत थोड़ी- थोड़ी भले कम हो लेकिन बता देते हैं। छिपाने की आदत नहीं है।

सत्यता का महत्व

तो सच्चाई बाप को प्रिय है। सत्यता, महानता को प्राप्त कराने वाली होती है।



विदेश सेवा का सबूत

बहुत अच्छा किया है, जिस देश से निकले उसी देश के सेवाधारी बन गये। नहीं तो भारतवासी बच्चों को कितनी भाषायें सीखनी पड़ती। पहले तो यह पढ़ाई पढ़नी पड़ती लेकिन आप आये सेवाधारी बन गये।

1

देश से निकलना

अपने देश से आना

2

सेवाधारी बनना

उसी देश के सेवाधारी बनना

3

भाषा की सुविधा

भाषा सीखने की आवश्यकता नहीं

4

तुरंत सेवा

आते ही सेवाधारी बन जाना

विदेश को नम्बरवन बनाना

विदेश को नम्बरवन लेना है। विन करके वन लेना है। ठीक है ना! विन करने वाले वन नम्बर लेने वाले। ठीक है? ऐसे हैं? टू नम्बर नहीं ना! वन।

1

विन करना

विजय प्राप्त करना

1

वन नम्बर

पहला स्थान प्राप्त करना





मधुबन निवासियों का महत्व

मधुबन वाले होस्ट हैं और तो गेस्ट होकर आते हैं चले जाते हैं लेकिन मधुबन वाले होस्ट हैं। नियरेस्ट भी हैं, डियरेस्ट भी हैं। मधुबन वालों को देखकर सब खुश होते हैं ना।



होस्ट

मधुबन वाले होस्ट हैं



नियरेस्ट

मधुबन वाले नियरेस्ट हैं मधुबन वाले डियरेस्ट हैं



डियरेस्ट

ग्लोबल हॉस्पिटल की सेवा

हॉस्पिटल वाले भी अच्छी सेवा कर रहे हैं। देखो आईवेल में तो फिर भी हॉस्पिटल ही काम में आती है ना। और जब से हॉस्पिटल खुली है तब से सबकी नजर में यह आया है कि ब्रह्माकुमारियाँ सिर्फ ज्ञान नहीं देती, लेकिन समय पर मदद भी करती है, सोशल सेवा भी करती है।

ज्ञान के साथ सेवा

ब्रह्माकुमारियाँ सिर्फ ज्ञान नहीं देती

समय पर मदद

समय पर मदद भी करती है

सोशल सेवा

सोशल सेवा भी करती है



सम्पन्न बनने का संकल्प

आज की बात याद रही? सम्पन्न बनना ही है, कुछ भी हो जाए, सम्पन्न बनना ही है।
यह धुन लग जाए, सम्पन्न बनना है, समान बनना है।

- 1 **संकल्प**
सम्पन्न बनने का दृढ़ संकल्प
- 2 **धुन**
सम्पन्न बनने की धुन लगाना
- 3 **समानता**
बाप समान बनने का लक्ष्य
- 4 **निरंतरता**
कुछ भी हो जाए, सम्पन्न बनना ही है

परमात्म संग में, ज्ञान का गुलाल

3 MARCH 2007

आज बापदादा अपने लकीएस्ट और होलीएस्ट बच्चों से होली मनाने आये हैं। दुनिया वाले तो कोई भी उत्सव सिर्फ मनाते हैं लेकिन आप बच्चे सिर्फ मनाते नहीं, मनाना अर्थात् बनना। तो आप होली अर्थात् पवित्र आत्मायें बन गये।

अव्यक्त बापदादा

होली का अर्थ



पवित्र आत्मायें

आप सभी होली अर्थात् महान पवित्र आत्मायें हैं।



परमात्म संग का रंग

आप सबने परमात्म संग का रंग आत्मा को लगाया जिससे आत्मा पवित्रता के रंग में रंग गई।



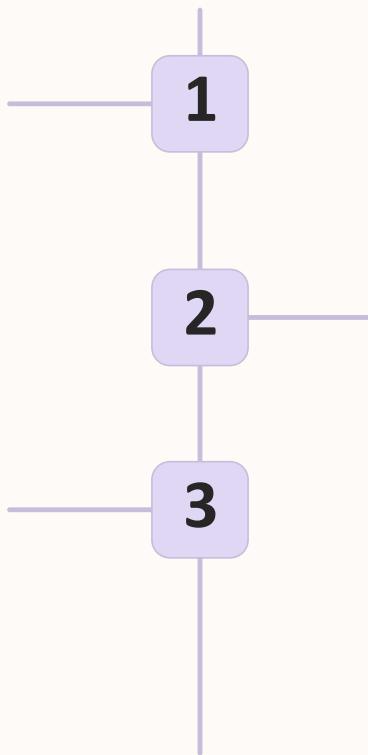
ऊंचे ते ऊंचे संग

परमात्म संग में रहने से आप बच्चे भी ऊंचे ते ऊंचे पवित्र महान आत्मायें पूज्य आत्मायें बन गईं।

परमात्म संग का महत्व

परमात्म संग का महत्व अभी अन्त में भी सतसंग का महत्व होता है।

संग में रहना और ऊंचे ते ऊंचे संग में रहना क्या मुश्किल है क्या?



सतसंग का अर्थ ही है परमात्म संग, जो सबसे सहज है।

परमात्म संग का रंग

ज्ञान का गुलाल

बाप ने ज्ञान का गुलाल लगाया,
जिससे आप देवता बन गये।

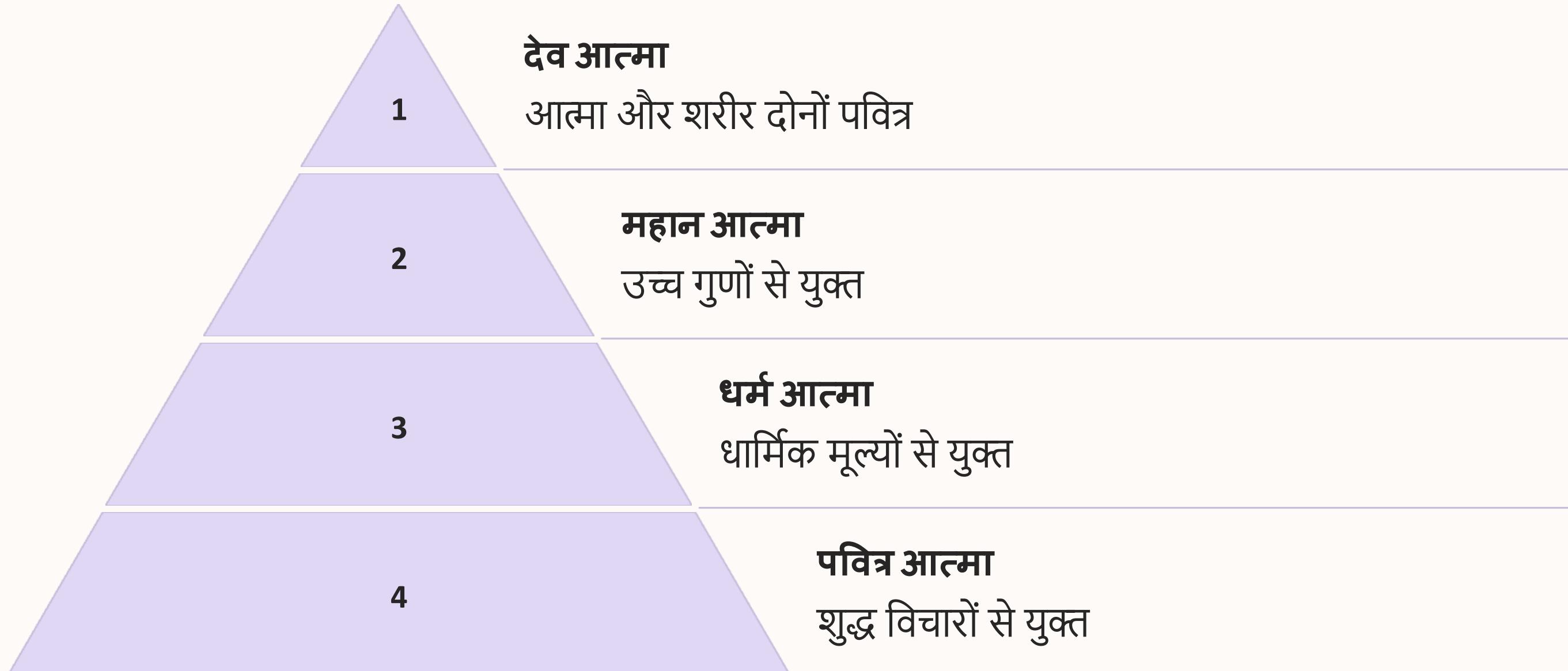
गुणों का रंग

बाप ने गुणों का रंग लगाया,
जो आपको श्रेष्ठ बनाता है।

शक्तियों का रंग

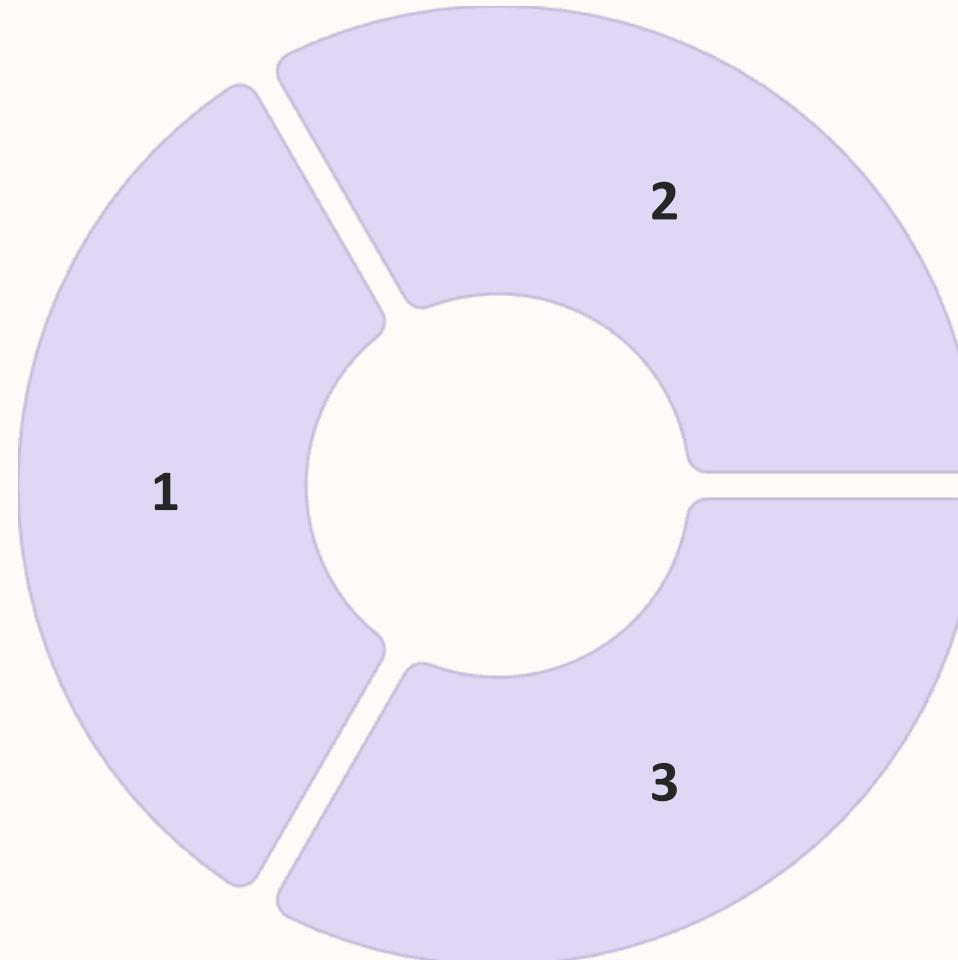
बाप ने शक्तियों का रंग लगाया,
जो आपको सामर्थ्यवान बनाता है।

पवित्रता की श्रेष्ठता



परमात्मा का निवास

परमधाम
परमात्मा का मूल निवास स्थान



संगमयुग

वर्तमान समय में परमात्मा का कार्यक्षेत्र

दिलतख्त

पवित्र आत्माओं के दिल में परमात्मा का निवास



कम्बाइण्ड रहने का महत्व

निरंतर साथ

परमात्मा के साथ हर पल जुड़े
रहना

शक्तिशाली अनुभव

कम्पनी का लाभ हर समय
उठाना

वायद्वेशन का प्रभाव

शक्तिशाली वायुमंडल का निर्माण करना



पुराने संस्कारों से मुक्ति

पहचान

पुराने संस्कारों को पराया मानना

त्याग

पुराने संस्कारों को निकालना

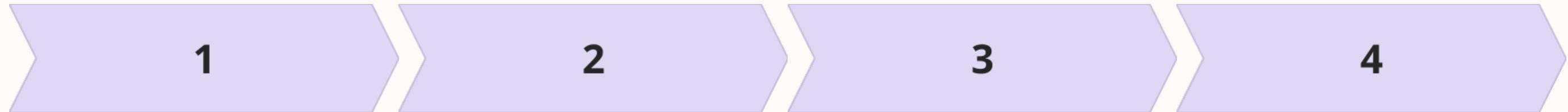
धारणा

नए दैवी संस्कारों को अपनाना

स्थिरता

नए संस्कारों में स्थिर होना

बाप समान बनने का लक्ष्य



दृढ़ संकल्प
बाप समान बनने का
निश्चय करना

गुणों का धारण
बाप के गुणों को
अपने में समाना

कर्मों की श्रेष्ठता
बाप समान श्रेष्ठ कर्म
करना

स्थिति की समानता
बाप समान निराकारी स्थिति में
रहना

स्वराज्य अधिकारी की स्थिति



भूकुटी के तख्तनशीन
आत्मिक स्थिति में
स्थित रहना



कंट्रोलिंग पावर
मन-बुद्धि पर
नियंत्रण रखना



रुलिंग पावर
स्वयं पर शासन
करने की शक्ति



मास्टर सर्वशक्तिवान
सर्व शक्तियों का
मालिक बनना



मन का विमान

तीन लोकों की यात्रा

मन के विमान द्वारा तीनों लोकों में सेकण्ड में जा सकते हैं।

हिम्मत और उमंग-उत्साह के पंख

इन दोनों पंखों से विमान को उड़ाया जा सकता है।

स्टार्ट करने की चाबी

"मेरा बाबा" कहने से विमान तुरंत स्टार्ट हो जाता है।



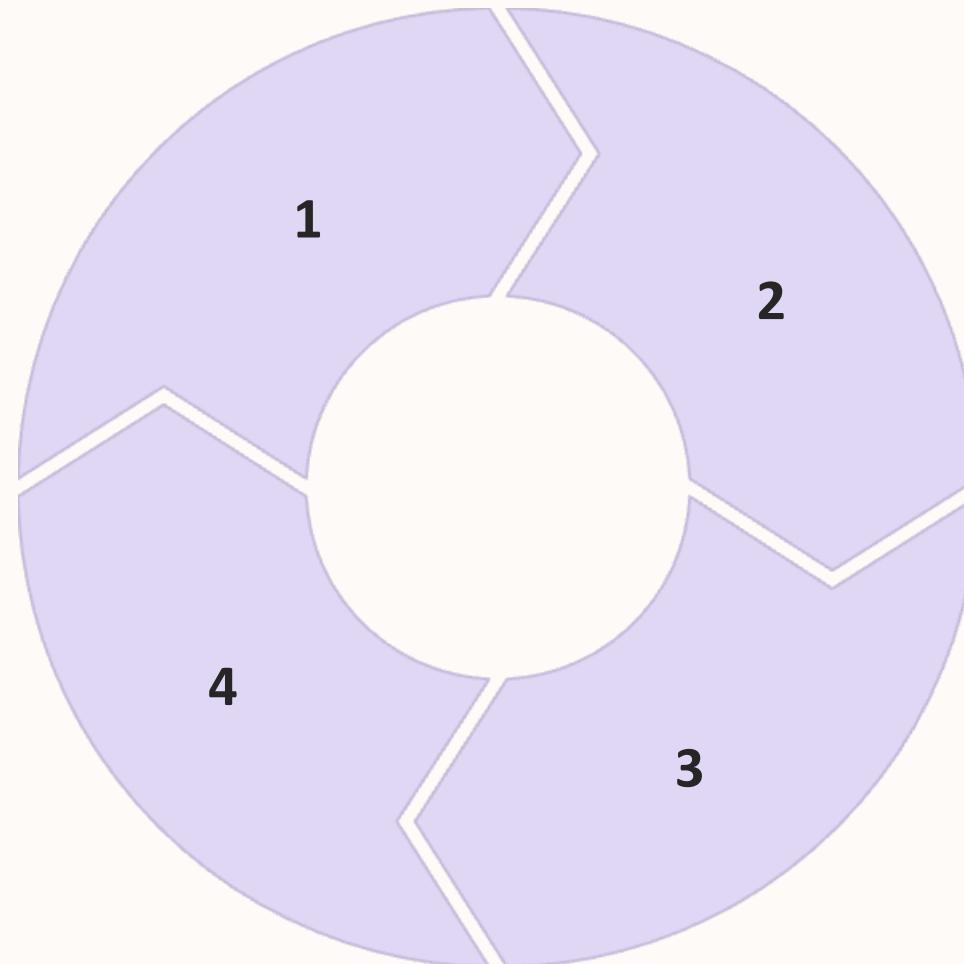
हिम्मत और मदद का संबंध

हिम्मत

एक कदम हिम्मत का आपका

शक्ति

सर्वशक्तिवान बाप की मदद



मदद

हजार कदम मदद बाप की

सफलता

निश्चित विजय का अनुभव

दृढ़ निश्चय की शक्ति

1

निश्चयबुद्धि विजयी

दृढ़ निश्चय से विजय निश्चित

2

हक और निश्चय

बाप पर पूरा हक और निश्चय रखना

3

दृढ़ता की चाबी

दृढ़ता को तीव्र पुरुषार्थ की चाबी बनाना

4

प्लेन बुद्धि

संकल्प को साकार रूप में लाना

विजय का अधिकार

21

कल्प

अनेक कल्प के विजयी आत्मा

100%

निश्चय

विजय निश्चित है, यह दृढ़ निश्चय

1

जन्मसिद्ध अधिकार

विजय आपका जन्म सिद्ध अधिकार है



मन की एकसरसाइज

- 1 निराकारी**
एक मिनट में निराकारी स्थिति का अभ्यास
- 2 आकारी**
एक मिनट में आकारी स्वरूप का अनुभव
- 3 साकारी**
एक मिनट में सर्व प्रकार के सेवाधारी रूप का अभ्यास
- 4 निरंतरता**
दिन में पांच बार यह अभ्यास करना



वेस्ट थॉट्स को समाप्त करना

पहचान

व्यर्थ संकल्पों को पहचानना

परिवर्तन

व्यर्थ को श्रेष्ठ में बदलना

शक्तिशाली संकल्प

सकारात्मक और शक्तिशाली विचारों को बढ़ावा देना

वायुमंडल निर्माण

शुद्ध संकल्पों से शक्तिशाली वायुमंडल बनाना

मनसा सेवा की शक्ति



1

शक्तिशाली संकल्प

मन को शक्तिशाली संकल्पों से भरना



2

वायब्रेशन फैलाना

शुद्ध संकल्पों के वायब्रेशन फैलाना



3

आत्माओं को आकर्षित करना

शक्तिशाली वायब्रेशन से आत्माओं को आकर्षित करना



4

प्राप्ति की अनुभूति

आत्माओं को प्राप्ति की अनुभूति कराना

ब्रह्मा बाप का अंतिम वरदान



निराकारी

देह से न्यारे आत्मिक स्थिति में रहना



निर्विकारी

सभी विकारों से मुक्त रहना



निरहंकारी

अहंकार से मुक्त विनम्र स्थिति

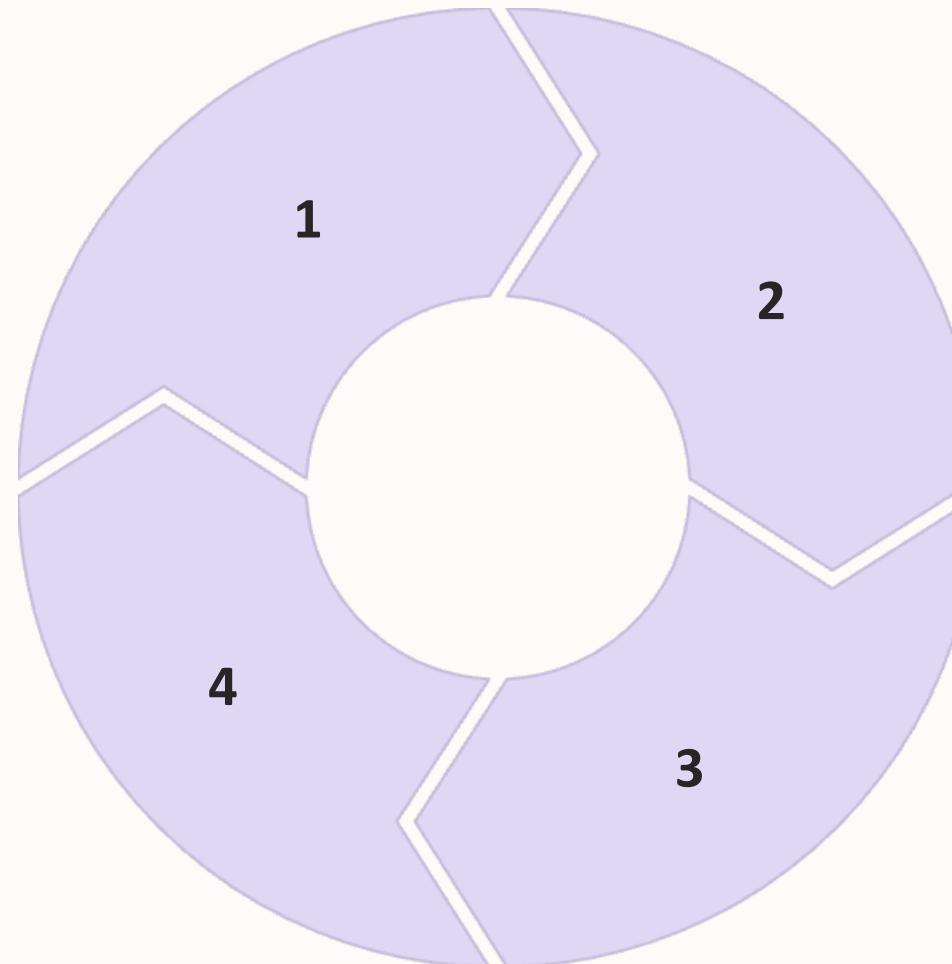
ब्रह्मा बाप की सौगात का रिटर्न

स्वीकार

सौगात को दिल से स्वीकार करना

सेवा

सेवा द्वारा रिटर्न देना



होली का आध्यात्मिक महत्व

रंगों का अर्थ

ज्ञान, गुण और शक्तियों के रंग का महत्व

पवित्रता

आत्मा की पवित्रता का प्रतीक

परिवर्तन

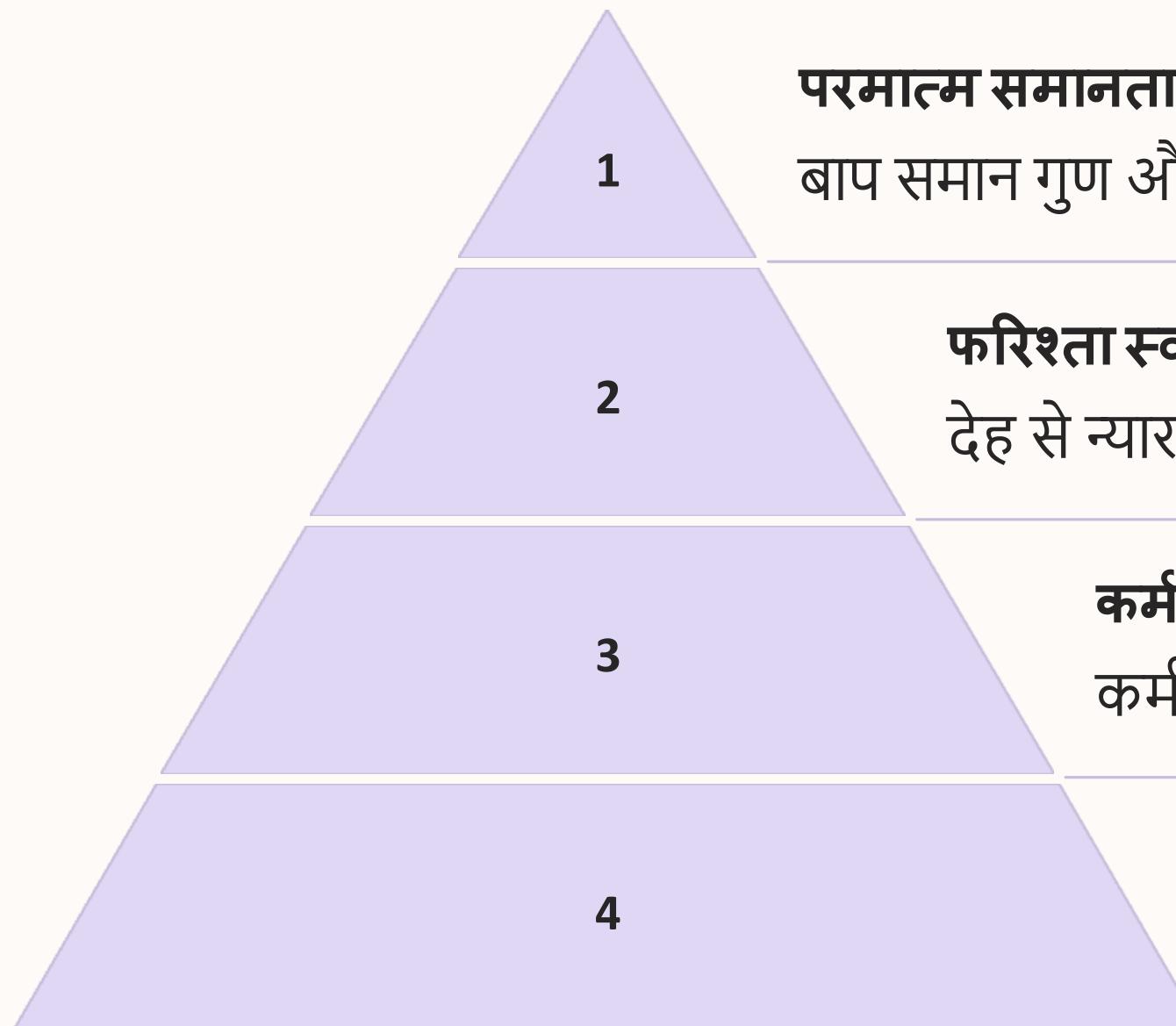
आत्मिक परिवर्तन का उत्सव

संगमयुग का महत्व

- 1 परमात्म मिलन
आत्मा और परमात्मा का मिलन काल
- 2 ज्ञान प्राप्ति
गुह्य ज्ञान की प्राप्ति का समय
- 3 कर्मों की गुह्य गति
श्रेष्ठ कर्मों द्वारा भाग्य निर्माण का समय



आत्मिक स्थिति की श्रेष्ठता



सेवा की नई विधियाँ

वर्गीकरण सेवा

विभिन्न वर्गों के लिए विशेष कार्यक्रम

मीडिया द्वारा सेवा

मीडिया के माध्यम से ज्ञान प्रसार

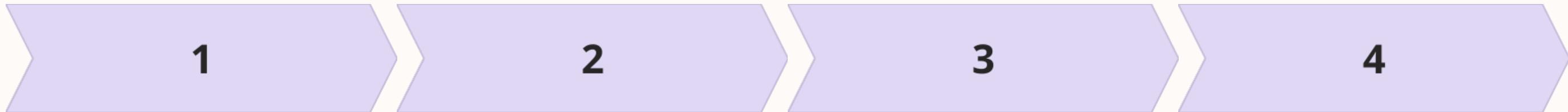
वी.आई.पी. सेवा

प्रभावशाली व्यक्तियों द्वारा संदेश प्रसार

ऑनलाइन सेवा

डिजिटल माध्यमों से ज्ञान का प्रचार

आध्यात्मिक उन्नति के लिए सुझाव



नियमित अध्यास
रोज़ योग और
ज्ञान का अभ्यास

सेवा में तत्परता
निस्वार्थ भाव से
सेवा में लगे रहना

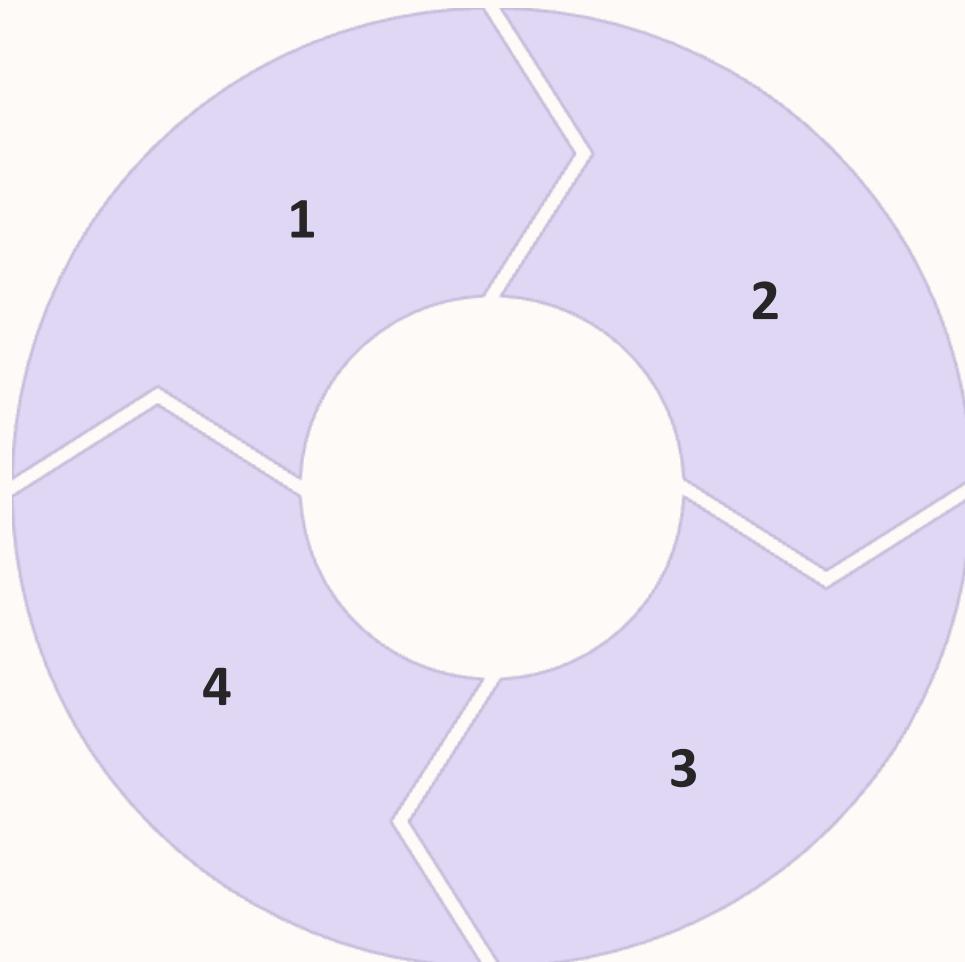
संग का प्रभाव
श्रेष्ठ संग में
रहना

आत्म-चिंतन
स्व-परिवर्तन पर
ध्यान देना

विश्व परिवर्तन की प्रक्रिया

स्व परिवर्तन
खुद में बदलाव लाना

विश्व परिवर्तन
पूरे विश्व में शांति और सुख की स्थापना



वायुमंडल परिवर्तन
सकारात्मक वायब्रेशन फैलाना

समाज परिवर्तन
समाज में मूल्यों का प्रसार

आध्यात्मिक जीवन की विशेषताएँ



निःस्वार्थ प्रेम

सभी के प्रति
निःस्वार्थ प्रेम रखना



संतुलन

जीवन के हर पहलू
में संतुलन बनाए
रखना



ज्ञान

गहन आध्यात्मिक
ज्ञान को धारण
करना



सेवा

निरंतर विश्व सेवा में
तत्पर रहना

परमात्म याद की विधि

मन की एकाग्रता

मन को एकाग्र करना

आत्म-स्मृति

स्वयं को आत्मा समझना

परमात्म स्मृति

परमात्मा के गुणों का चिंतन

लवलीन अवस्था

परमात्म प्रेम में लीन होना



कर्म योग की कला

न्यारा और प्यारा

कर्म करते हुए देह से
न्यारे और आत्मा में प्यारे रहना

साक्षी दृष्टा

कर्म करते हुए साक्षी
भाव से देखना

कर्मफल त्याग

कर्म के फल की
इच्छा से मुक्त रहना

सतयुगी दुनिया की स्थापना

1

ज्ञान प्राप्ति

परमात्मा से गुह्य ज्ञान की प्राप्ति

2

आत्मिक शुद्धिकरण

योग द्वारा आत्मा का शुद्धिकरण

3

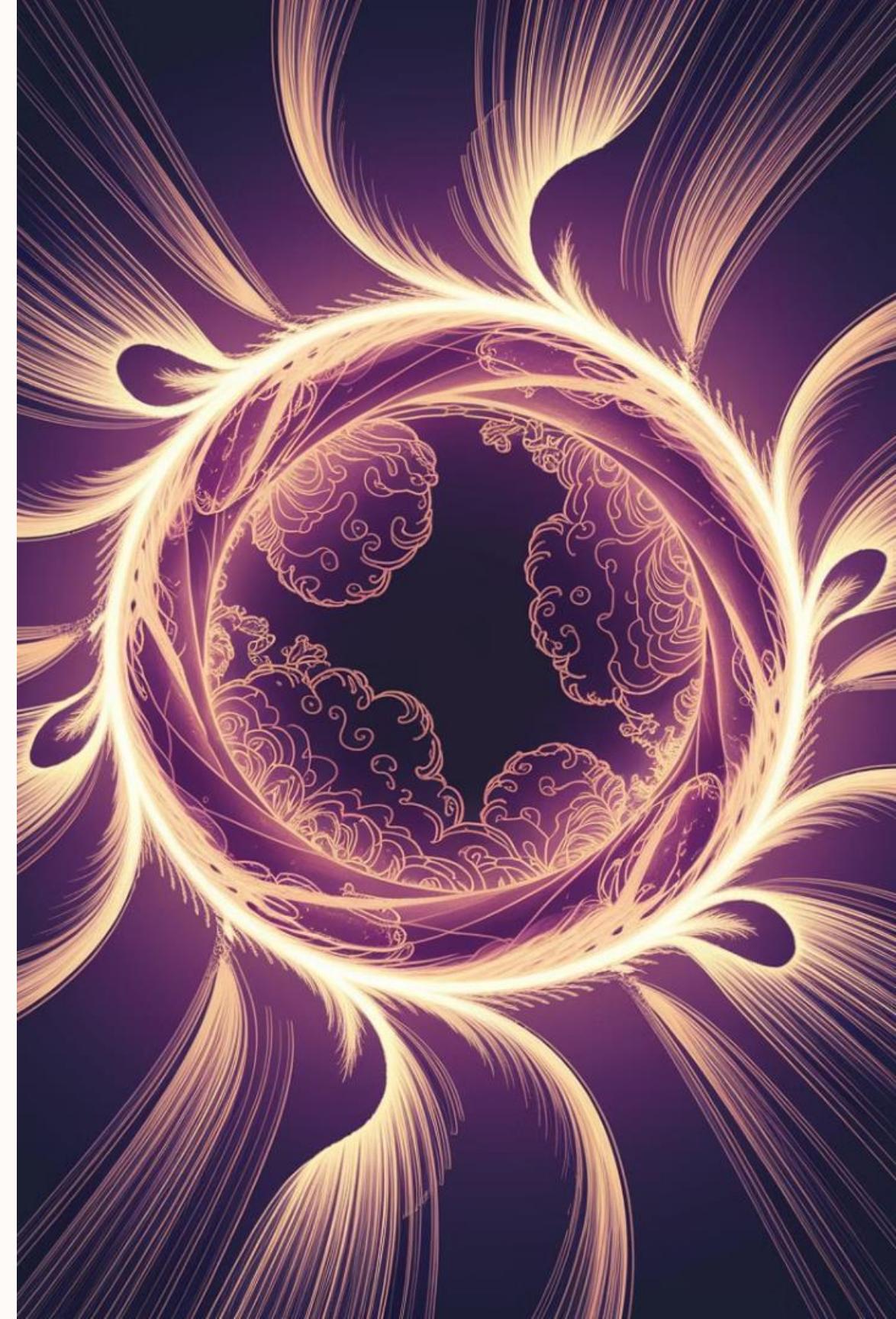
देवी-देवता स्वरूप

श्रेष्ठ कर्मों द्वारा देवी-देवता बनना

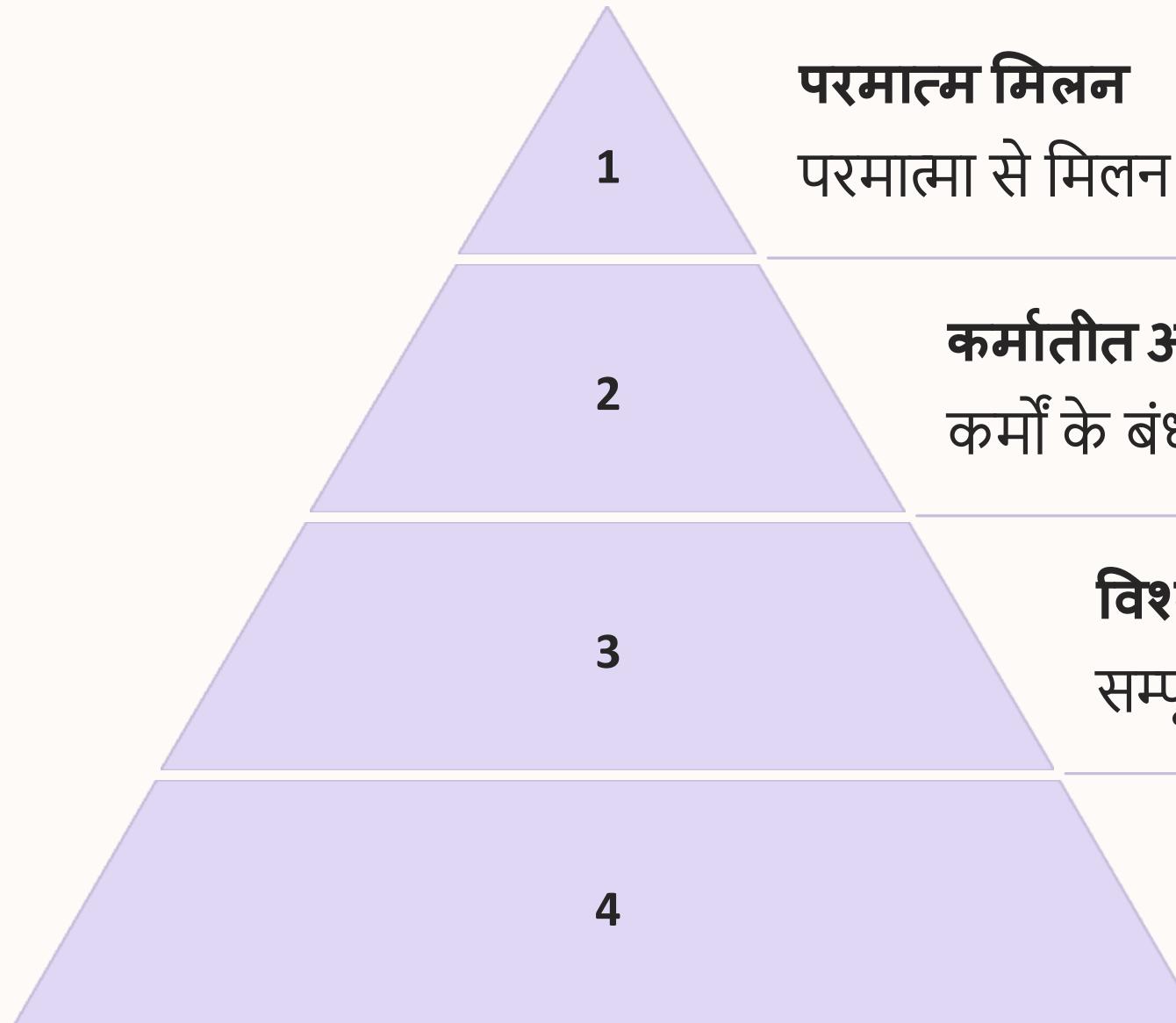
4

नई दुनिया

सतयुगी दुनिया की स्थापना



आध्यात्मिक जीवन का लक्ष्य



परमात्म मिलन

परमात्मा से मिलन का अनुभव

कर्मातीत अवस्था

कर्मों के बंधन से मुक्त होना

विश्व कल्याण

सम्पूर्ण विश्व के कल्याण में योगदान

स्व-परिवर्तन

स्वयं में दैवी गुणों का विकास



होली का आध्यात्मिक महत्व 9

MARCH 2009

आज होलीएस्ट बाप अपने होली बच्चों से होली मनाने आये हैं। सभी बच्चे होली बच्चे हैं। आप सब भी होली मनाने आये हैं। सोचो आप होली आत्माओं के ऊपर कौन सा रंग लगा जो होली बन गये! रंग तो अनेक हैं लेकिन आपके ऊपर कौन सा रंग लगा?



अव्यक्त बापदादा



परमात्म संग का रंग

श्रेष्ठ रंग

सबसे श्रेष्ठ रंग है परमात्म संग का रंग। यह अविनाशी संग का रंग है।

आत्मा का परिवर्तन

आत्मा का रंग अपवित्रता से पवित्र बन गया।

पवित्रता का रंग

परमात्म संग का रंग लगने से सहज ही होली अर्थात् पवित्र बन गये।

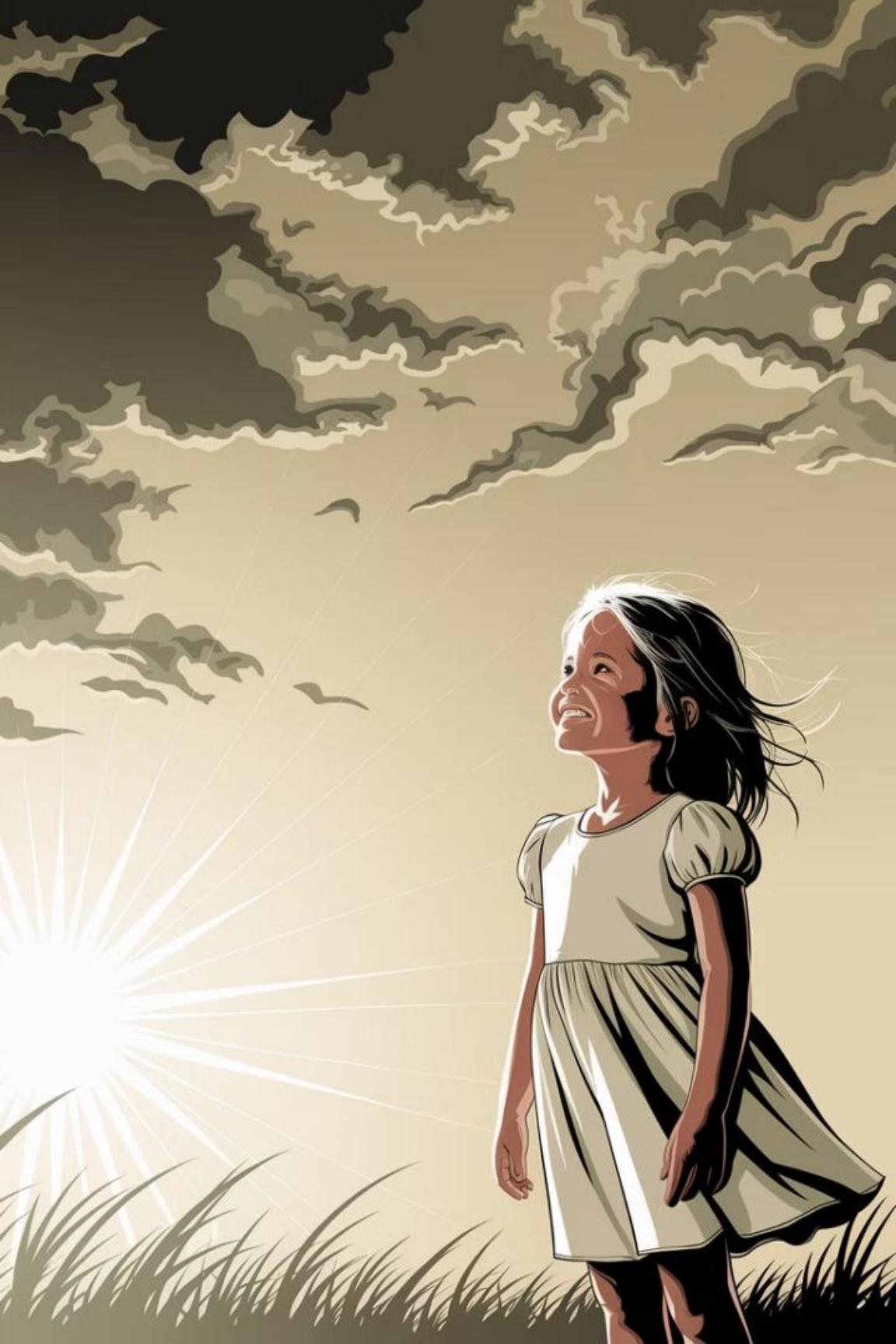
कम्बाइन्ड स्वरूप

परमात्मा का साथ

आप सबने परमात्मा को अपना कम्पैनियन बना लिया,
कम्पनी बना लिया इसलिए कम्बाइन्ड हो गये।

अविभाज्य संबंध

यह कम्बाइन्ड रूप कभी भी अलग नहीं हो सकता।
सदा कम्बाइन्ड रहते हो ना!



माया के प्रभाव से सावधान

- 1
- 2
- 3

माया का प्रयास

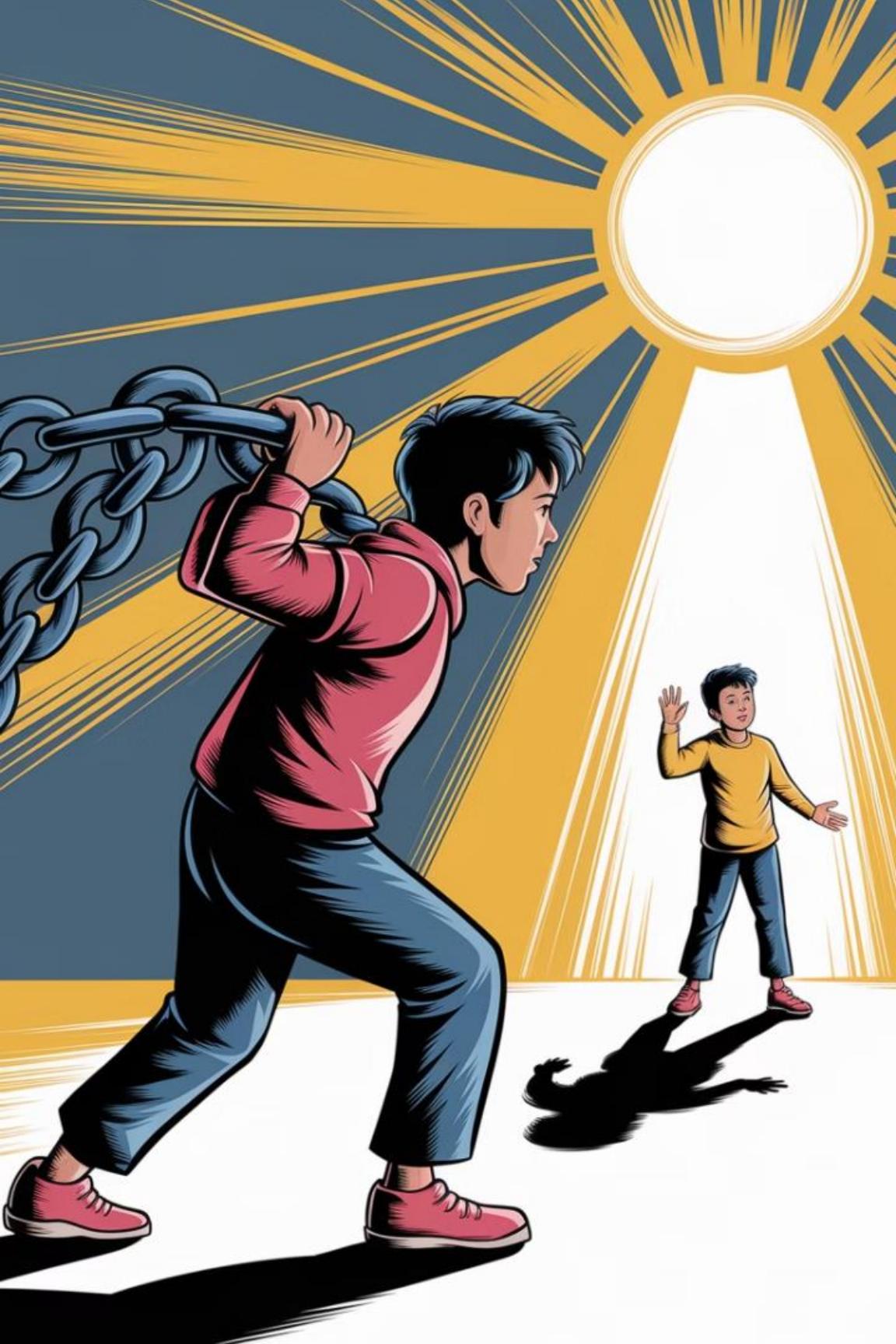
माया अकेले करने की कोशिश करती है।

पुराने संस्कार

माया अलग करके फिर पुराने संस्कार को इमर्ज करती है।

शुद्ध संस्कारों का दबना

पुराने संस्कार इमर्ज हो जाते हैं तो शुद्ध संस्कार मर्ज हो जाते हैं।



पुराने संस्कारों की पहचान

अलबेलापन

पुराने संस्कार में अलबेलापन आता है, जो आध्यात्मिक प्रगति में बाधा बनता है।

आलस्य

आलस्य भी एक पुराना संस्कार है, जो हमें पीछे खींचता है।

भिन्न-भिन्न रूप

ये पुराने संस्कार भिन्न-भिन्न रूप में इमर्ज होते हैं।

स्व-परीक्षण का महत्व

- 1
- 2
- 3

नियमित जांच

हर एक अपने को चेक करो कि सदा कम्बाइंड रहते हैं वा कभी अकेले भी हो जाते हैं?

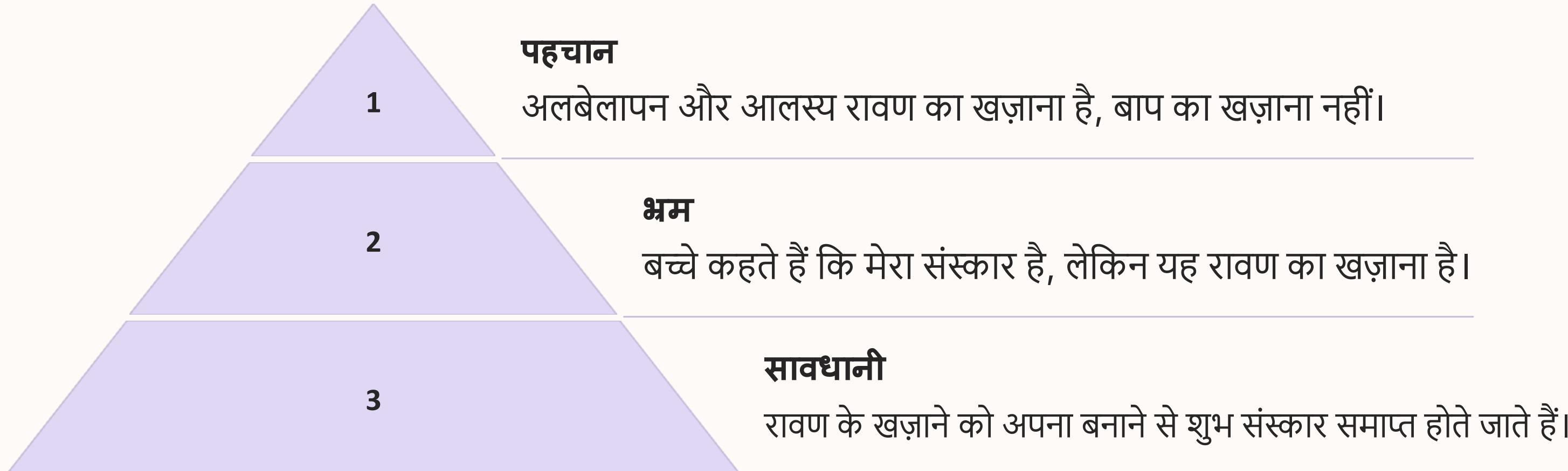
माया की पहचान

माया के अनेक स्वरूपों को तो जान गये हो ना! वह चतुराई से अपना रंग लगा देती है।

सावधानी

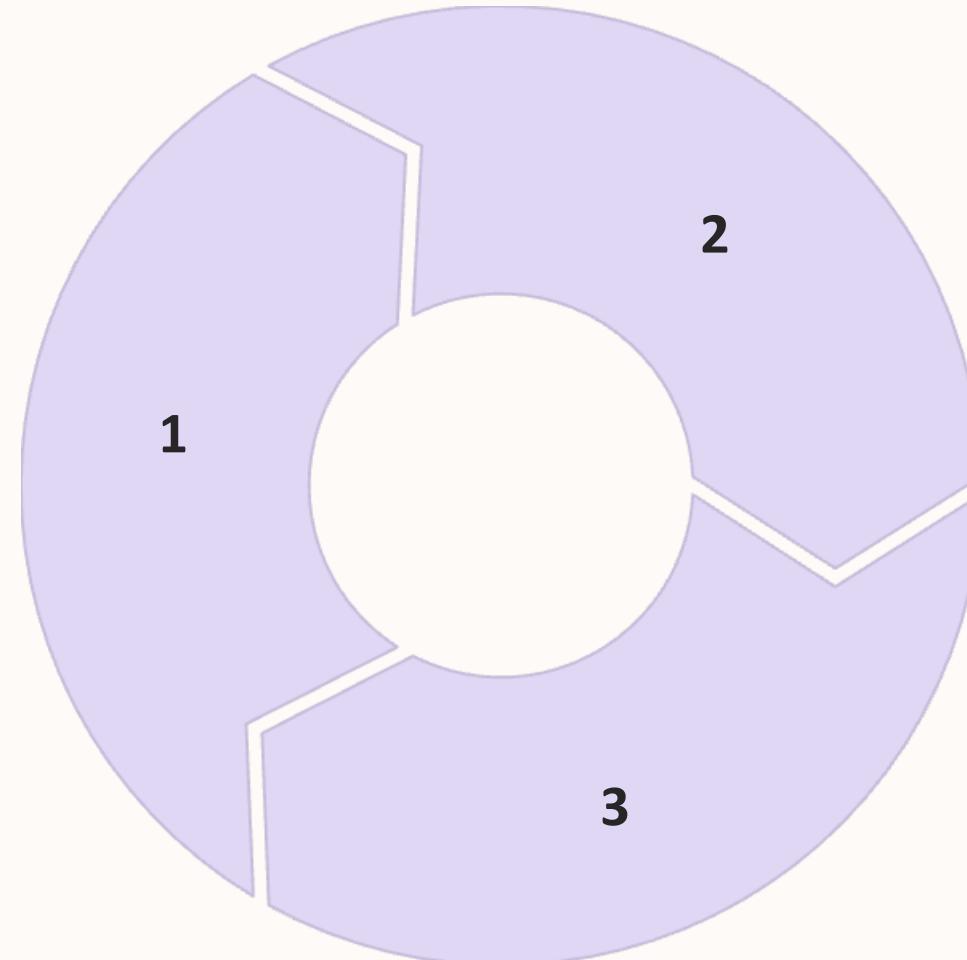
अलग होना अर्थात् माया के रंग में रंगना।
इससे सावधान रहना है।

रावण के खजाने से सावधान



परमात्म संग का रंग

ज्ञान का रंग
बापदादा ज्ञान का रंग लगाता है।



शक्तियों का रंग
आत्मिक शक्तियों का रंग चढ़ाया जाता है।

गुणों का रंग
दिव्य गुणों का रंग लगाया जाता है।

रुहानी रंग की विशेषता



अविनाशी रंग

रुहानी रंग अविनाशी है,
जो कभी उतरता नहीं।



सुरक्षा कवच

इस रंग से ढके होने पर
कोई और रंग लग नहीं
सकता।



पवित्रता का प्रतीक

यह रंग आपको सारे कल्प में सबसे पवित्र बनाता है।

पवित्रता की शक्ति

आत्मा और शरीर की पवित्रता

आप ऐसे होली बनते हो, पवित्र बनते हो जो आपका शरीर और आत्मा दोनों पवित्र रहते हैं।

पवित्रता के फल

पवित्रता को सुख, शान्ति, प्रेम, आनंद की जननी कहा जाता है। जहाँ पवित्रता है वहाँ सुख शान्ति साथ में ही है।



पवित्रता का प्रभाव

- 1 कलियुग तक प्रभाव**
आपके जड़ चित्र कलियुग के लास्ट जन्म में भी पूजे जाते हैं।
- 2 विधिपूर्वक पूजा**
आपकी पूजा कितने विधि पूर्वक होती है, यह पवित्रता की विशेषता है।
- 3 दुआएं देने की शक्ति**
लास्ट जन्म तक आपके चित्र भी दुआयें देते रहते हैं।

सच्ची होली का महत्व

परमात्म संग का रंग
सच्ची होली
परमात्म संग के रंग की है।

कम्बाइन्ड स्वरूप
कम्बाइन्ड स्वरूप की यथार्थ
होली आप मनाते हो।

होली का रहस्य
होली शब्द का भी रहस्य है, जो आप ही जानते हो, आप ही मनाते हो।



होली का अर्थः हो ली

1 बीती सो बीती

होली का अर्थ है, हो ली,
बीत चुका सो बीत चुका।

3 नया जन्म

आप सभी मरजीवा बने हो, नया जन्म हो गया।

2 पुरानी जीवन का त्याग
आप सबने पुरानी जीवन,
पुरानी बातें, पुराने
संस्कार, पुराने व्यर्थ
संकल्प को हो ली कर दी।

पुराने संस्कारों से मुक्ति

- 1 पुराना भूलना
- 2 नया जीवन
- 3 पुराने संस्कारों की होली

पुराना भूलना

परमात्म संग का रंग लगाना अर्थात् पुराना जन्म भूल जाना।

नया जीवन

ब्राह्मण जीवन अर्थात् नया जीवन
इसमें पुराना कुछ हो नहीं सकता।

पुराने संस्कारों की होली

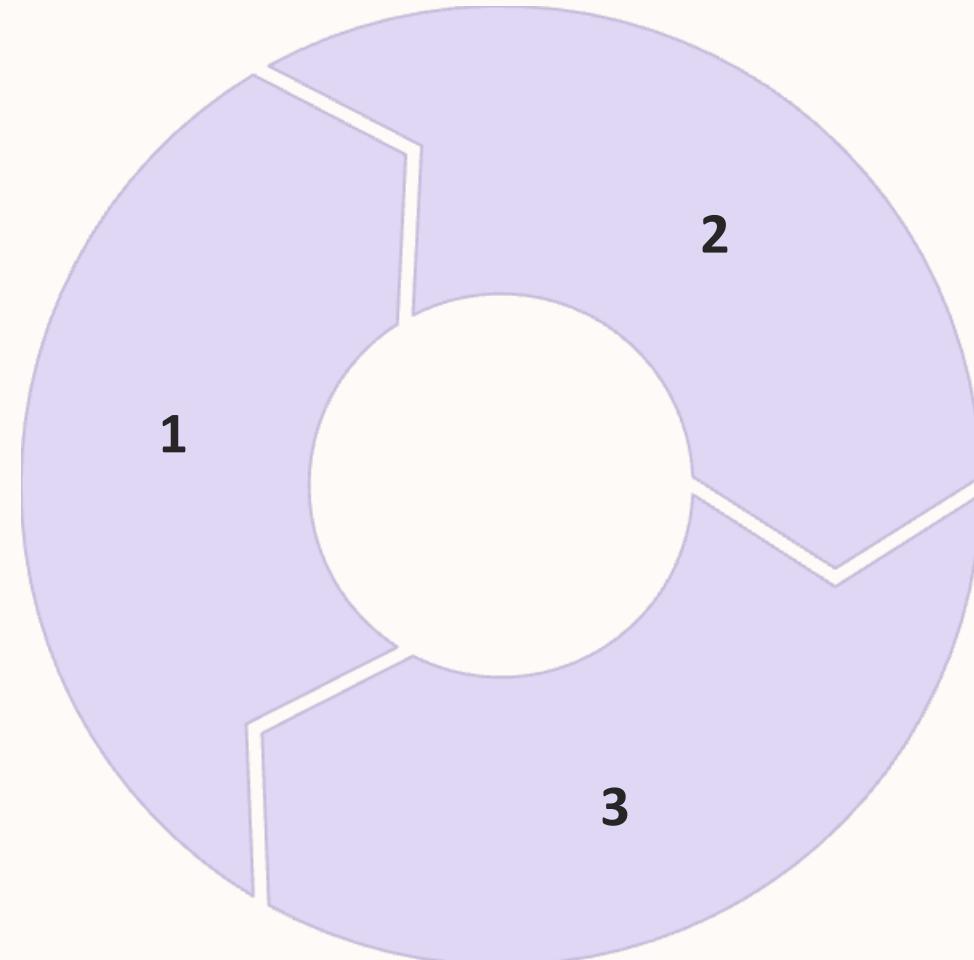
आज होली मनाना अर्थात् पुराने संस्कार की होली जलाना।



होलीएस्ट बाप का रंग

पवित्रता का रंग

होलीएस्ट बाप ने आपके ऊपर होली बनने का पवित्र बनने का रंग लगाया है।



रुहानी रंग

बाप हमें कितना रुहानी रंग डाल रहा है जिससे आप होलीहंस बन गये।

निर्णय शक्ति

होलीहंस अर्थात् निर्णय शक्ति वाले होली हंस।

त्रिकालदर्शी दृष्टि

त्रिकालदर्शी सीट

कोई भी काम करो तो एक सीट फिक्स कर लो - त्रिकालदर्शा की सीट।

तीनों काल का विचार

तीनों कालों को देखो - आदि मध्य अन्त तीनों कालों को देखो।

फायदा-नुकसान का विश्लेषण

तीनों काल में फायदा है या नुकसान? यह विचार करो।



चतुराई से बचें

गलत सोच

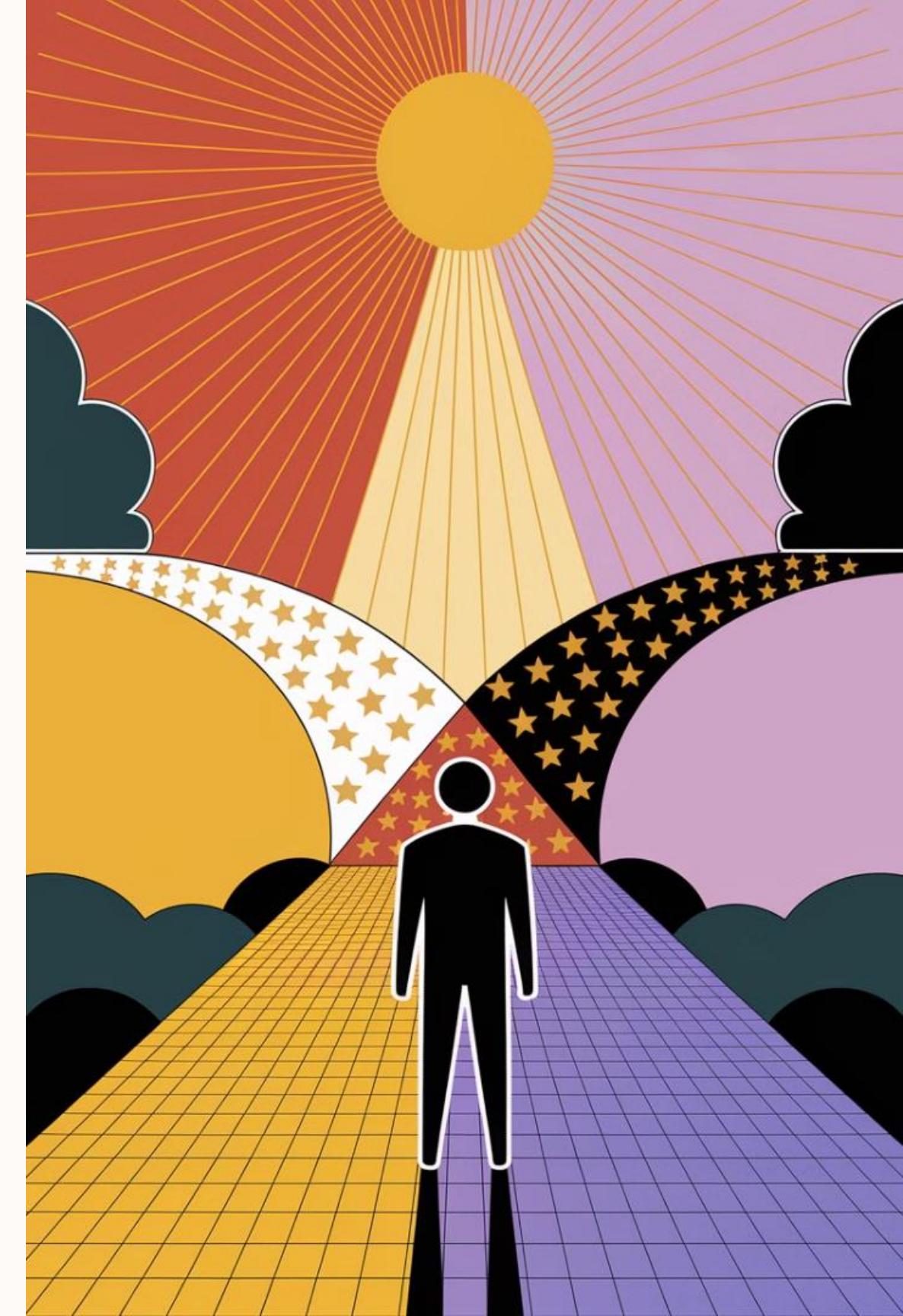
कई बच्चे कहते हैं - ऐसा काम को चलाना था ना इसीलिए काम चला लिया।

बाप को रिझाना

बापदादा को भी बहुत रिझाते हैं, गलती करते हैं ना फिर बापदादा को ऐसी ऐसी बातें सुनाते हैं।

कर्म का फल

चलो कर लिया तो कर्म का फल तो मिलेगा ना!



सच्ची दिल का महत्व

सच्ची दिल की शक्ति

साफ दिल मुराद हांसिल करके देखो।
सच्ची दिल और मुराद हांसिल नहीं हो, हो नहीं सकता।

दृढ़ संकल्प

पहले दृढ़ संकल्प से स्व को परिवर्तन करके फिर सुनाओ।



एवररेडी बनने का महत्व

गे गे की आदत

बापदादा सारे दिन में गे गे के गीत बहुत सुनते हैं।
करेंगे, दिखायेंगे, बनेंगे लेकिन स्पीड क्या?

घर लौटने का समय

जब घर लौटने का समय आ गया है
तो क्या घर नहीं चलेंगे?

- 1
- 2
- 3

बाप के साथ चलना

बाप तो एवररेडी है और गे गे वाले एवररेडी तो
नहीं हुए। तो बाप के साथ कैसे चलेंगे?

एडवांस पार्टी की होली



वतन में होली

बापदादा ने वतन में भी होली मनाई एडवांस पार्टी वालों के साथ।

त्रिमूर्ति का सम्मान

ममा और दीदी और दादी त्रिमूर्ति को विशेष सभी के संगठन के बीच खड़ा किया।

गुप्त सेवा

इन्हों को गुप्त रूप में सेवा करनी पड़ती है। अमृतवेले यह भी वतन में इमर्ज होते हैं और सेवा पर जाते हैं।



एडवांस पार्टी की सेवा

1

मन्सा सेवा

चारों ओर कोई न कोई सेवा अर्थ
मन्सा सेवा करते हैं।

2

मन और बुद्धि की सेवा

मन और बुद्धि द्वारा आत्माओं के
मन और बुद्धि को आकर्षण करने
की विशेष सेवा करते हैं।

3

प्रेरणा देना

दो प्रकार से प्रेरणा देते हैं - एक
हलचल मचाने वालों को भी और
दूसरा नये सृष्टि के निमित्त बनने
वालों को भी।

एडवांस पार्टी का संदेश

मम्मा का संदेश

हमें तो बहुत टाइम हो गया है इन्तजार करते। तो हमारी सखियों से पूछना कि क्या अभी तक इन्तजार कराना है या कुछ इंतजाम करना है!

दीदी का प्रश्न

सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने में एवररेडी हो?

दादी का संदेश

कर्मातीत बनना ही है, कब? कब को अब में कब बदली करेंगे?

वतन में होली का वर्णन



अर्ध चन्द्रमा आकार

सभी अर्ध चन्द्रमा के रूप में बैठे हुए थे, 4-5 लाइने थी और कायदेसिर बैठे थे छोटे फिर बड़े फिर और बड़े।



सात रंगों का पाउडर

बापदादा ने 7 रंगों के हीरे का पाउडर सभी के ऊपर डाला।



आनंदमय नृत्य

दीदी नशे में चली गई। जैसे यहाँ नशे में जाती थी ना तो नशे में जाकर डांस करने लगे सभी।



फरिश्ता ड्रेस का अध्यास

ड्रेस बदली

बीच-बीच में सारे दिन में ऐसे फरिश्ता ड्रेस बदली करके टेस्ट लो।

इमर्ज करना

बस बापदादा इमर्ज करो 5 मिनट के लिए, 10 मिनट के लिए इमर्ज करो मैं फरिश्ते रूप में हूँ।

रंगों का अनुभव

बापदादा कभी ज्ञान की, कभी शक्तियों की, कभी गुणों का रंग डाल रहे हैं।

होली की सौगात

फरिश्ता ड्रेस

होली की यह सौगात बापदादा चारों ओर के बच्चों को दे रहे हैं - फरिश्ता ड्रेस।

नियमित अध्यास

ड्रेस पहनते ट्रायल करते रहना, भूलना नहीं।

फरिश्ता बनने की तैयारी

फरिश्ता बनने के बिना देवता बन नहीं सकते।

एडवांस पार्टी की सेवा

- 1** **अमृतवेले की सेवा**
बापदादा भी अमृतवेले विशेष एडवांस पार्टी से सेवा कराते हैं।
- 2** **वतन में आगमन**
सारी दुनिया तो सोई हुई होती है और यह ड्रेस बदलके वतन में आ जाते हैं।
- 3** **विश्व सेवा**
एडवांस पार्टी विश्व की सेवा में लगी रहती है।

बापदादा का प्यार

हर बच्चे से प्यार

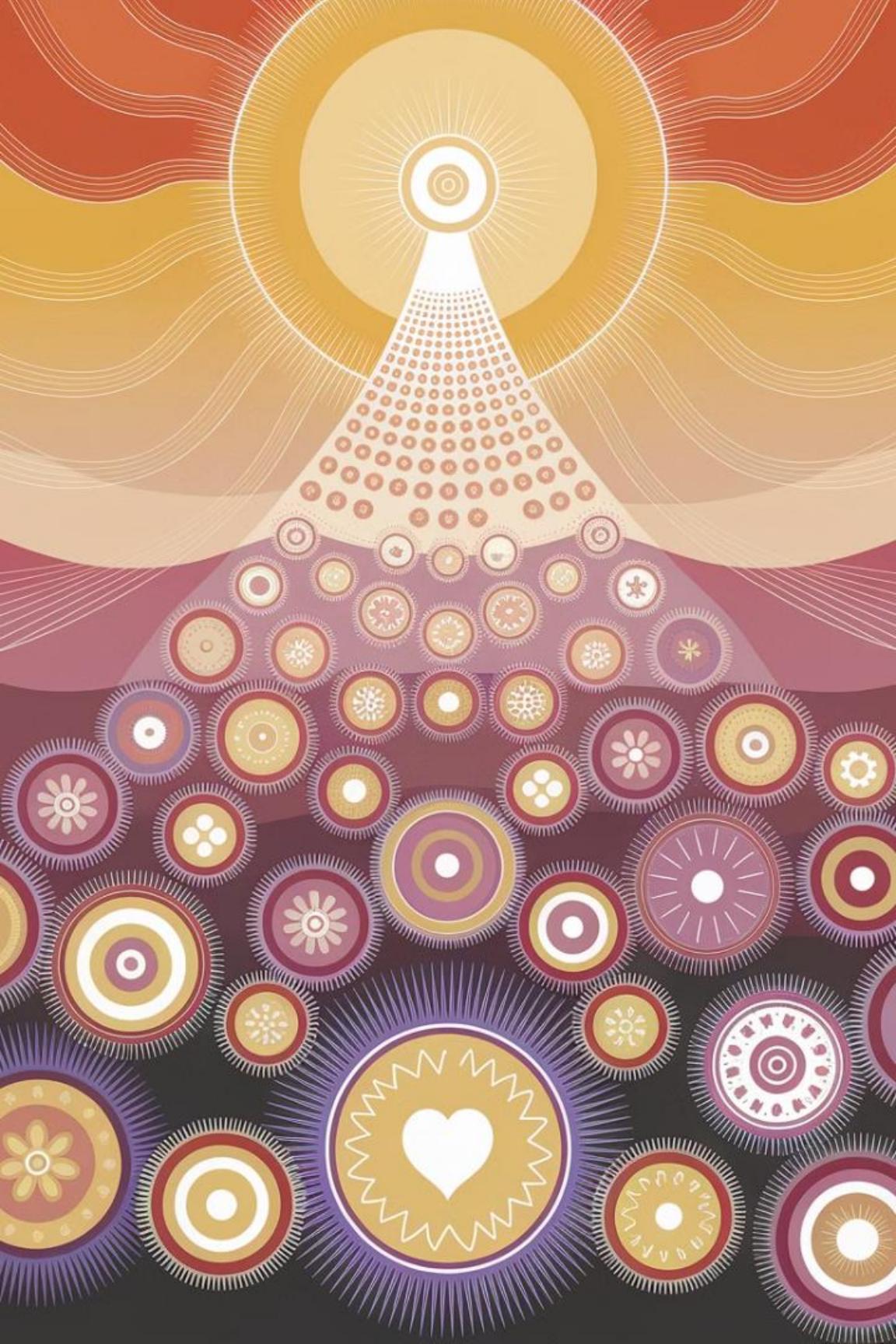
बापदादा का एक एक बच्चे से स्पेशल प्यार है।

स्वमान की दृष्टि

हर एक का स्वमान है, लास्ट नम्बर का भी स्वमान है कोटों में कोई है।

कोटों में कोई

एक-एक बच्चा कोटों में कोई तो ही ही, लास्ट नम्बर भी कोटों में कोई है।



एकता और सम्मान

एकता का महत्व

एकता
लास्ट नम्बर भी एक बाबा का बच्चा है।
बाबा को सामने लाओ उसकी गलती को सामने नहीं
लाओ।

उमंग और उत्साह

परिवार का है उसमें उमंग लाओ उत्साह लाओ।
चलो गलतियां भी करते हैं बापदादा को मालूम है
क्या क्या गलतियां करते हैं।

लक्ष्य और लक्षण

1

लक्ष्य की याद

हर एक अपने आपसे पूछे मैं ब्रह्माकुमारी ब्रह्माकुमार बना क्यों?
लक्ष्य क्या?

2

उच्च लक्ष्य

लक्ष्य बहुत अच्छा ले आये लेकिन अभी कहाँ कहाँ लक्ष्य
और लक्षण में अन्तर आ गया है।

3

संगदोष से बचना

मैजारिटी संगदोष में बहुत आते हैं। दिल भी खाती है
करना नहीं चाहिए लेकिन संग का रंग बाप के संग का
रंग कम लगा है।





निर्विघ्न भविष्य का निर्माण

वर्तमान और भविष्य

अपना वर्तमान और भविष्य
निर्विघ्न बनाओ।

संगदोष से बचना

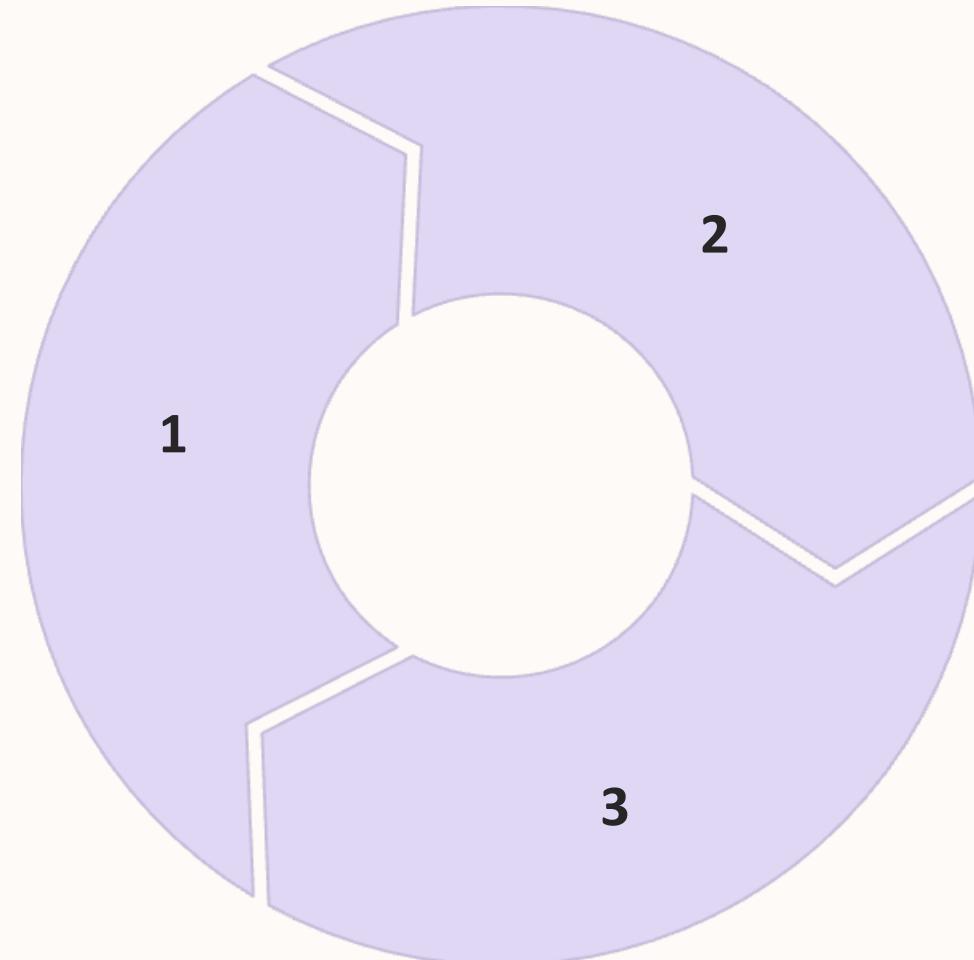
संगदोष में नहीं आओ।
संगदोष में आ जाते हैं,
टैम्पटेशन है संगदोष में नहीं
आओ।

हृद की प्राप्तियों से बचना

हृद की प्राप्तियों के आकर्षण में नहीं आओ।

होली का आध्यात्मिक महत्व

पुराने संस्कारों को जलाना
ऐसी ऐसी बातें समझदार बनके जला दो।

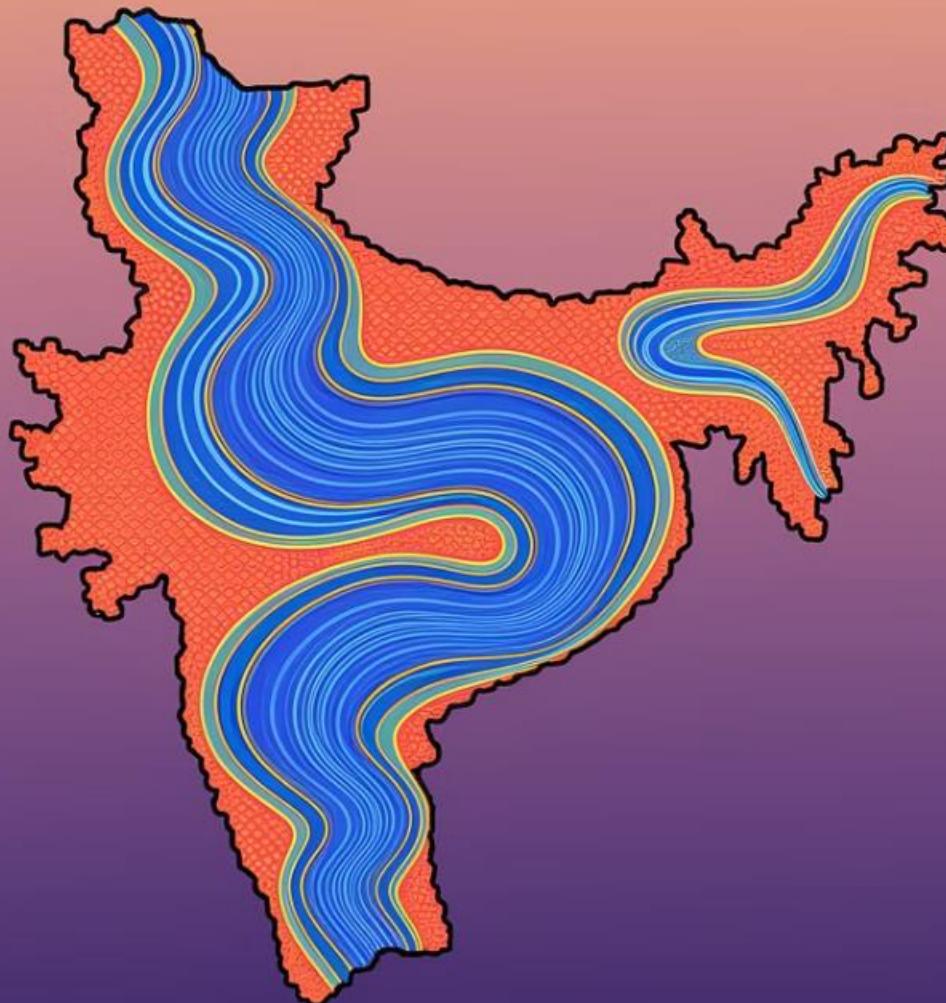


परिवर्तन

टूलेट के बोर्ड से आगे बदल जाओ।

बाप की मदद

बापदादा मदद करेगा लेकिन सच्ची दिल को।



यू.पी. की सेवा

1

यू.पी. की विशेषता

यू.पी. में ज्ञान नदियों का भी सम्मेलन है। बड़े में बड़ी गंगा नदी, यू.पी. में गंगा नदी है।

2

पतित पावनी की भूमिका

यू.पी. वालों को सदा यही लगन होगी पतित पावनी बन, पतित आत्माओं को कुछ न कुछ अंचली देने की।

3

नए कार्य की आवश्यकता

अभी यू.पी. में सेन्टर बढ़ रहे हैं। अभी भी यू.पी. कोई नया कार्य करके दिखाओ।

टीचर्स की विशेषता

फीचर्स से प्रयुचर दिखाना

ऐसी टीचर्स जो अपने फीचर्स, चलन और चेहरे से सभी को प्रयुचर दिखाये।

फरिश्ता स्वरूप

हर एक टीचर अभी का प्रयुचर जो फरिश्ता है, वह फीचर्स अर्थात् चलन और चेहरे से स्पष्ट दिखाई दे।

वर्तमान और भविष्य का प्रयुचर

अभी का प्रयुचर क्या है? फरिश्ता। भविष्य का प्रयुचर देवता।



पवित्रता की शक्ति

1

पवित्रता का चमत्कार

पवित्रता का जो चमत्कार था वह प्रत्यक्ष चलन में स्वप्न तक था।

2

अपवित्रता से मुक्ति

अपवित्रता का स्वप्न मात्र भी नहीं था।

3

लाइट और माइट

अब फिर से अपने साथियों में यह लाइट माइट की ढढ़ता लाते रहो।



टीचर्स का महत्व

बाप के कार्य में सहयोगी

बापदादा को टीचर्स छोटी चाहे बड़ी उनके लिए दिल में बहुत प्यार है क्योंकि बाप के कार्य में सहयोगी हो।

निमित्त और सहयोगी

निमित्त हो सहयोगी हो। चारों ओर सभी स्टूडेन्ट के सामने साकार रूप में आप टीचर्स हो।

एडवांस पार्टी का सहयोग

अव्यक्त रूप में बापदादा है और एडवांस पार्टी भी आपको सकाश देती रहती है।

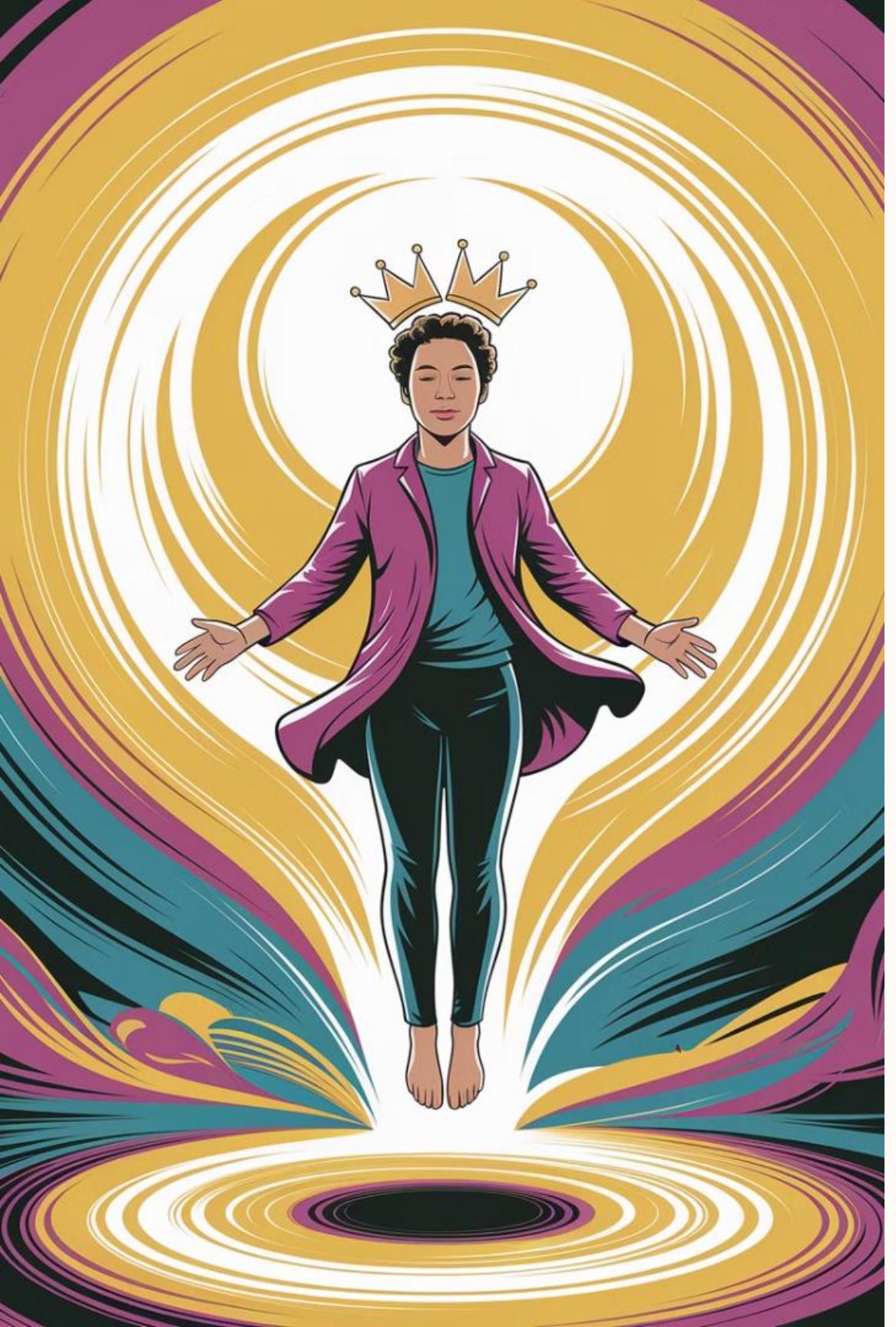
होली का आध्यात्मिक महत्व 28

FEB 2010

आज होलीएस्ट बाप अपने होली बच्चों से होली मनाने आये हैं। चारों ओर के बच्चे दूर दूर से स्नेह में दिल में समा रहे हैं। बापदादा चारों ओर के बच्चों के मस्तक में भाग्य का सितारा चमकता हुआ देख रहे हैं।

SB

अव्यक्त बापदादा



संगमयुग का महत्व

श्रेष्ठ पवित्रता

इस संगमयुग के प्राप्ति के आधार से आप बच्चे ही इतने श्रेष्ठ पवित्र बनते हो जो भविष्य में आप डबल पवित्र बनते हो।

डबल ताजधारी

आप बच्चे डबल पवित्र भी बनते हो और डबल पवित्रता की निशानी डबल ताजधारी बनते हो।

आत्मा और शरीर की पवित्रता

आत्मा भी पवित्र और शरीर भी पवित्र। सारे कल्प में चक्र लगाके देखो कोई धर्मात्मा भी डबल पवित्र नहीं बना है।

होली का वास्तविक अर्थ

उत्सव का यादगार

आज होली सब मनाते हैं लेकिन आप इस समय जो डबल होली बनते हो उसका यादगार उत्सव के रूप में होली मनाते हैं।

हर कदम का महत्व

आपके ही हर कदम-कदम का जीवन का महत्व उत्सव के रूप में मनाते हैं। आप इस संगम पर हर दिन, हर कदम उमंग और उत्साह में रहते हो।

परमात्म संग का रंग

आप परमात्मा के संग के रंग की होली मनाते हो। तो आपका हर कदम उत्सव के रूप में मनाते हैं। अभी होली में पहले जलाते हैं फिर मनाते हैं।



पुराने संस्कार जलाना

आप भी संगम पर अभी अपने पुराने संस्कार स्वभाव को योग अग्नि में जलाते हो

परमात्म संग का रंग

परमात्म संग का रंग लग नहीं सकता,
परमात्म मिलन हो नहीं सकता।

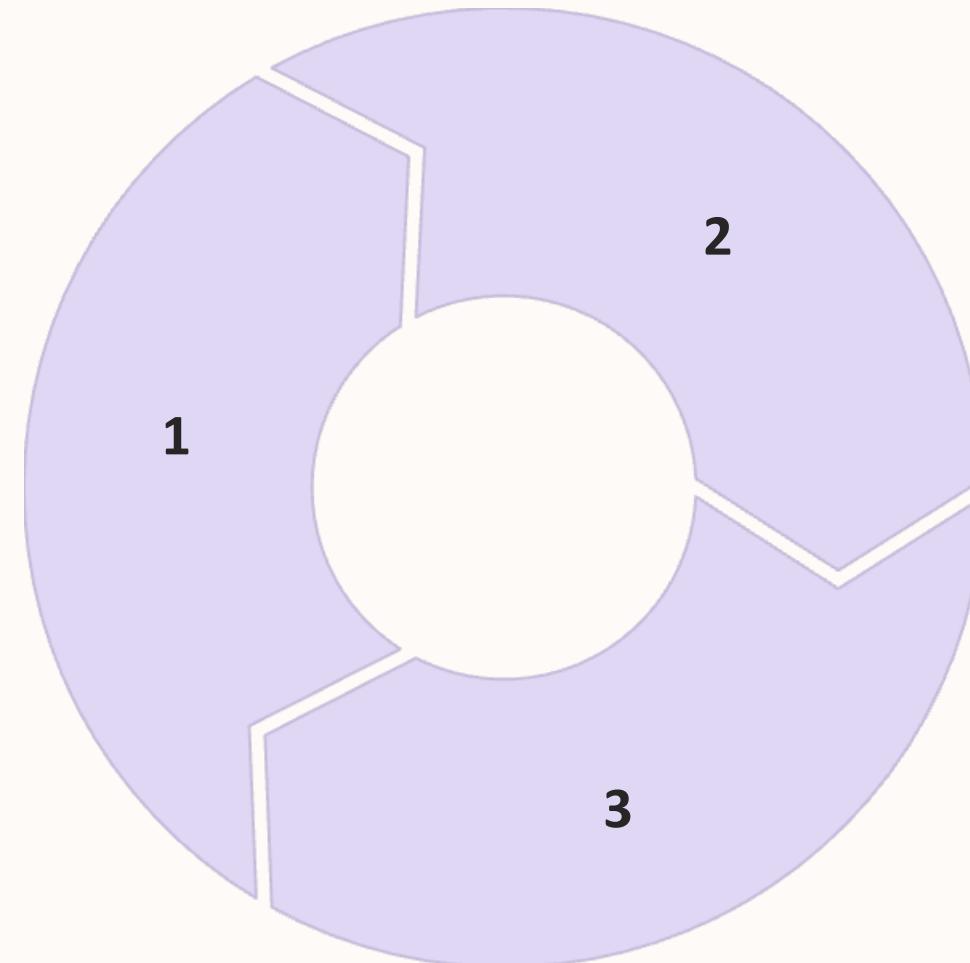
योग अग्नि

तो आपने योग अग्नि में संस्कारों को जलाया
फिर परमात्म संग के रंग में रंगे।

स्थूल से आध्यात्मिक

आजकल जलाते भी हैं और रंग भी लगाते हैं लेकिन आपके अध्यात्मिक रूप को स्थूल रूप दे दिया है। वह स्थूल आग जलाते, स्थूल रंग लगाते क्योंकि अभी बॉडीकान्सेस वृत्ति है।

स्थूल होली
स्थूल आग और रंग



आध्यात्मिक होली
योग अग्नि और परमात्म रंग

बॉडीकान्सेस से सोलकान्सेस
देह भान से आत्म भान

होली का वास्तविक अर्थ

आप होली बनते हो वह होली मनाते हैं। सारे कल्प में कोई भी अध्यात्मिक होली मनाके डबल होली नहीं बनें। तो आप सभी जो भी जहाँ से आये हो तो परमात्म संग के होली में आये हो।

होली का अर्थ

होली अर्थात् जो बात हो चुकी वह हो ली। ड्रामा अनुसार जो बीत चुका उसको कहते हैं हो ली, बीती सो बीती।

व्यर्थ से मुक्ति

कोई भी व्यर्थ बात चित पर नहीं लाते हैं, हो चुकी, ऐसी होली मनाते रहते हो ना।

पवित्रता का पुरुषार्थ

आप सभी ने होली अर्थात् पवित्र बनने का पूर्ण पुरुषार्थ कर पवित्रता को धारण किया है



क्रोध पर विजय

बापदादा ने देखा कि जन्मदिन पर जो बाप ने होम वर्क दिया था - क्रोध को जन्मदिन पर जन्मदिन की गिफ्ट दे दो। तो उसकी रिजल्ट बापदादा के पास कुछ बच्चों की आज पहुंची है।

- 1 **होमवर्क**
क्रोध को जन्मदिन की गिफ्ट देना
- 2 **प्रयास**
बच्चों ने अटेन्शन दिया और प्रयास किया
- 3 **परिणाम**
कुछ बच्चों की सफलता की रिपोर्ट बापदादा के पास पहुंची

क्रोध पर विजय का संकल्प

जिन्होंने अपनी रिजल्ट में कन्ट्रोल किया और सफलता का अनुभव किया वह हाथ उठाओ। सफलता को प्राप्त किया! बड़ा हाथ उठाओ। टीचर्स हाथ उठाओ, फारेनर्स हाथ उठाओ।

हिम्मत का फल

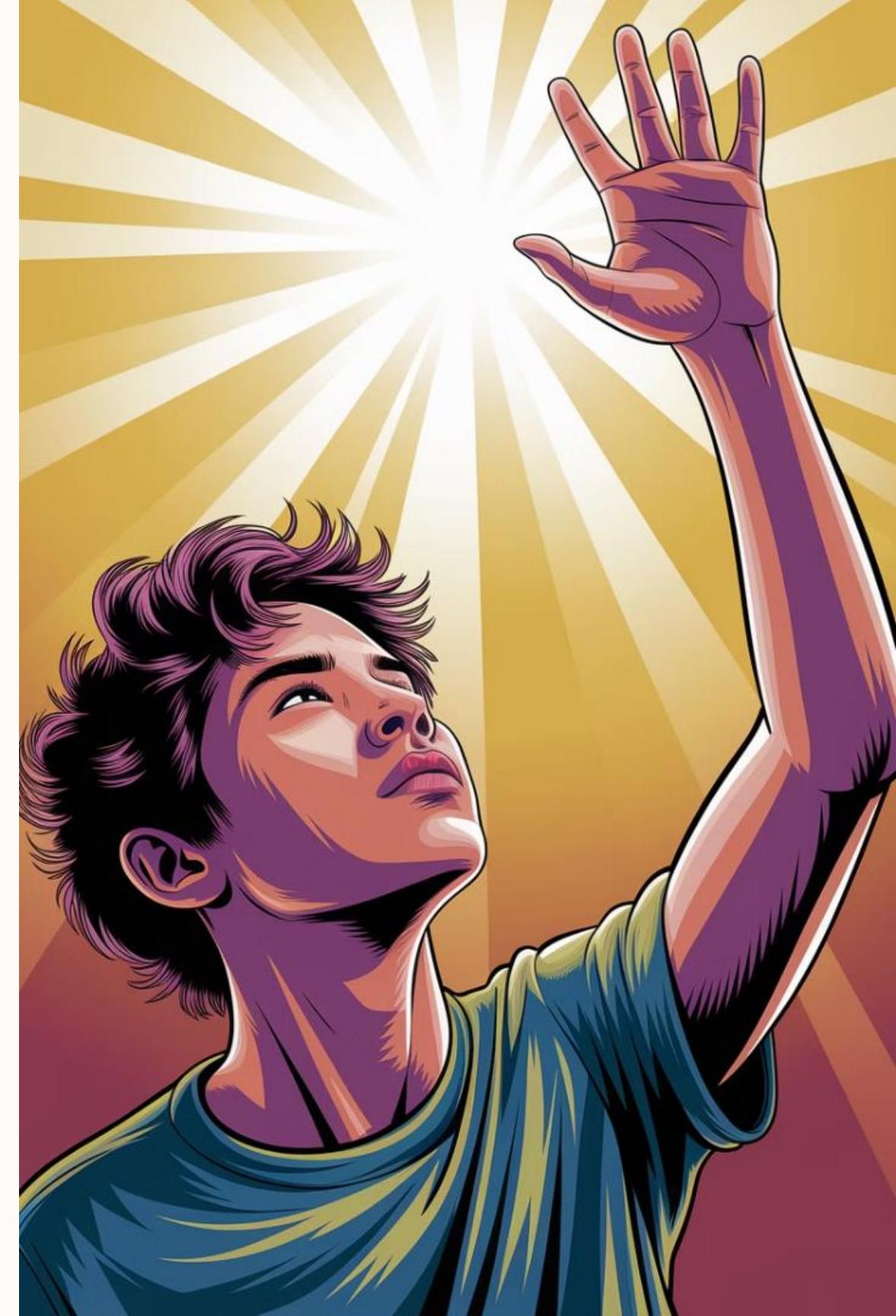
इससे आप सबने अपने में हिम्मत रखी और हिम्मत का फल प्राप्त हो सकता है, यह अनुभव किया।

संकल्प की दृढ़ता

सम्भव हो सकता है, नहीं, होना ही है इसकी ताली बजाओ।

आगे बढ़ने का लक्ष्य

तो क्या अगर इस अनुभव को आगे भी लक्ष्य रखके बार-बार चेकिंग करते और आगे बढ़ाने चाहे तो समझते हो कि सम्भव है?



क्रोध पर विजय का लक्ष्य

अभी तो ज्यादा दिन नहीं हुए हैं लेकिन अभी हर तीन मास के बाद आज से तीन मास अटेन्शन रख क्रोध का टेन्शन खत्म कर सकते हो? कर सकते हो?

तीन महीने का लक्ष्य

हर तीन महीने में क्रोध पर विजय का लक्ष्य रखें

अटेन्शन

लगातार अपने व्यवहार पर ध्यान रखें

टेन्शन खत्म

क्रोध का टेन्शन धीरे-धीरे समाप्त करें

विजय

क्रोध पर पूर्ण विजय प्राप्त करें



क्रोध का कारण

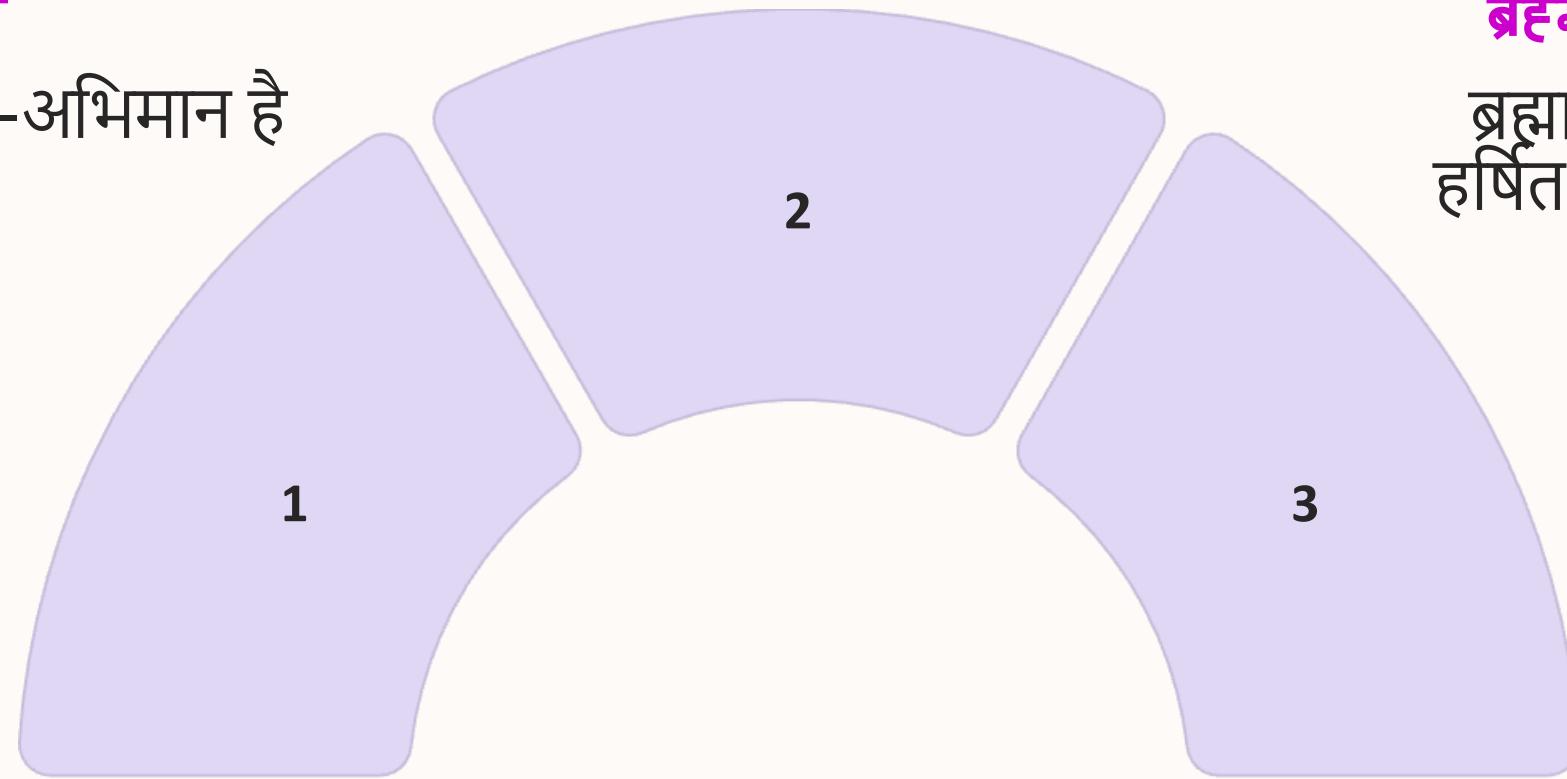
क्रोध का कारण क्या होता है? क्रोध का बीज क्या होता है? आप सदा अपना भविष्य स्वरूप सामने रखो, आपका भविष्य स्वरूप कितना सजा सजाया हर्षित चेहरा है और बापदादा को देखो उसमें भी ब्रह्मा बाप को सामने लाओ

भविष्य स्वरूप

अपने दैवी स्वरूप को याद रखें

देह-अभिमान

क्रोध का मूल कारण देह-अभिमान है



ब्रह्मा बाप का उदाहरण

ब्रह्मा बाप के शांत और हर्षित स्वरूप को याद करें

ब्रह्मा बाप का उदाहरण

शिव बाप तो है ही निराकार लेकिन ब्रह्मा बाप आपके सदृश्य साकार रूपधारी, आपके सदृश्य जिम्मेवारी का ताजधारी फिर भी सदा मुस्कराता हुआ, खुशनुमा चेहरा क्योंकि इन विकारों पर विजय प्राप्त कर आपके आगे शरीर होते कार्य करते एकजैम्पुल रहा।



जिम्मेवारी का ताज
ब्रह्मा बाप ने
जिम्मेवारी का ताज
पहना



सदा मुस्कराता चेहरा
हर परिस्थिति में
खुशनुमा रहे



विकारों पर विजय
सभी विकारों पर
जीत हासिल की

जिम्मेवारी और खुशी

ब्रह्मा बाप से ज्यादा आपकी जिम्मेवारी है? ब्रह्मा बाप की जिम्मेवारी के आगे आपकी जिम्मेवारी तो कुछ भी नहीं है। और लास्ट तक देखा कर्मातीत वायब्रेशन में अव्यक्त फरिश्ते बन गये।

ब्रह्मा बाप की जिम्मेवारी

ब्रह्मा बाप ने बहुत बड़ी
जिम्मेवारी निभाई

आपकी जिम्मेवारी

आपकी जिम्मेवारी ब्र
ह्मा बाप की तुलना में कम है

कर्मातीत स्थिति

अंत में ब्रह्मा बाप कर्मातीत
वायब्रेशन में अव्यक्त फरिश्ते बन
गए

क्रोध पर विजय का वरदान

तो अभी बापदादा को दी हुई सौगात वापस तो नहीं लेंगे ना! बापदादा समझते हैं कि कारोबार में आते हैं तो कहाँ-कहाँ ऐसे सरकमस्टांश बनते हैं, कईयों ने रिजल्ट में भी लिखा कि तेज आवाज हो जाता है। मूड में थोड़ी तेजी आ जाती है।

परिस्थितियों का सामना

जब ऐसी बातें सामने आती हैं तब ही तो विजयी बनने का चांस है।

ज्ञान का उपयोग

बातों का काम है आना लेकिन आपका नॉलेज है बातों से पार हो विजयी बनना।

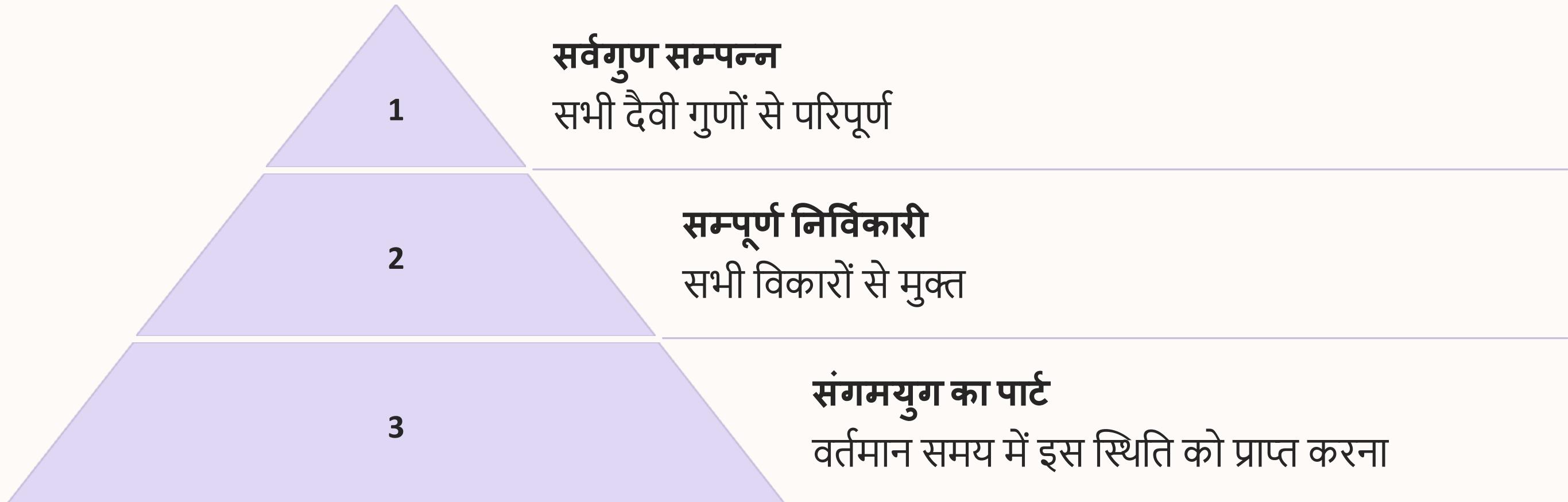
सदा के लिए विजय

क्रोध को विदाई देंगे सदा के लिए या तीन मास के लिए? कितना समय की हिम्मत है?



देवता स्वरूप की महिमा

आपके लास्ट जन्म में भी आपकी महिमा क्या गाते हैं? आपके देवता स्वरूप के आगे आपकी महिमा सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी यह गाते हैं। तो आपका यह बनने का पार्ट अभी संगमयुग का ही गायन है।



बापदादा की दिल की आशा

बापदादा के दिल की विशेष आशा है बतायें? कांध हिलाओ बतायें? बापदादा अभी से, अभी से हर एक बच्चे को सदा खिला हुआ गुलाब का पुष्प देखने चाहते हैं। खुशनसीब, खुशनुमा।

खिला हुआ गुलाब

हर बच्चा खिले हुए
गुलाब की तरह खुशनुमा हो

खुशनसीब

हर बच्चा अपने भाग्य पर
खुश हो

खुशनुमा

हर बच्चे का चेहरा सदा
खुशी से चमकता रहे

परिस्थितियों का सम्बन्ध

बातों का काम है आना, यह भी समझ लो। बातें आयेंगी लेकिन अपना लक्ष्य लक्षण में लाना है। घबराना नहीं।

1

समझ

परिस्थितियों का आना स्वाभाविक है

2

लक्ष्य

अपने लक्ष्य को लक्षण में लाना है

3

धैर्य

घबराना नहीं है, शांत रहना है

4

विजय

परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करना है



क्रोधमुक्त बनने की विधि

तो जैसे अभी कहते हैं कि ब्रह्माकुमारियां पवित्रता का बहुत पाठ पढ़ाती हैं,
ऐसे प्रसिद्ध हो कि ब्रह्माकुमारियां क्रोधमुक्त बनाती हैं क्योंकि क्रोध से मुक्त होना सब चाहते हैं। तनाव होता है ना!



पवित्रता का पाठ
ब्रह्माकुमारियों द्वारा पवित्रता का ज्ञान



क्रोधमुक्त बनने की शिक्षा
क्रोध से मुक्त होने की विधि सिखाना



तनावमुक्त जीवन
क्रोध से मुक्त होकर तनावमुक्त जीवन जीना



क्रोध जीत का संदेश

तो तनाव पैदा होता है इसलिए सभी चाहते हैं लेकिन उन्हों को विधि नहीं आती है। जैसे पवित्र बनना असम्भव समझते थे लेकिन अभी आप सबके अनुभव के आधार से समझते हैं कि हो सकता है।

अनुभव का प्रमाण

आपके अनुभव से लोग समझ रहे हैं कि क्रोध जीत संभव है

संदेश फैलाना

इस वर्ष यह लहर फैलाओ कि क्रोध जीत बनना हो सकता है, कोई मुश्किल नहीं है।

प्रैक्टिकल उदाहरण

ऐसा एकजैम्पुल के अनुभव प्रैक्टिकल में स्टेज पर लाओ।

क्रोध जीत के उदाहरण

बापदादा ने देखा है कि बहुत बच्चे कार्य करते भी क्रोध जीत बने हैं। ऐसे दृष्टान्त आपके परिवार में, ब्राह्मण परिवार में बने हैं।



कार्य में क्रोध जीत

कार्य करते हुए भी
क्रोध पर विजय प्राप्त करना

ब्राह्मण परिवार के उदाहरण

ब्राह्मण परिवार में क्रोध जीत
के दृष्टान्त

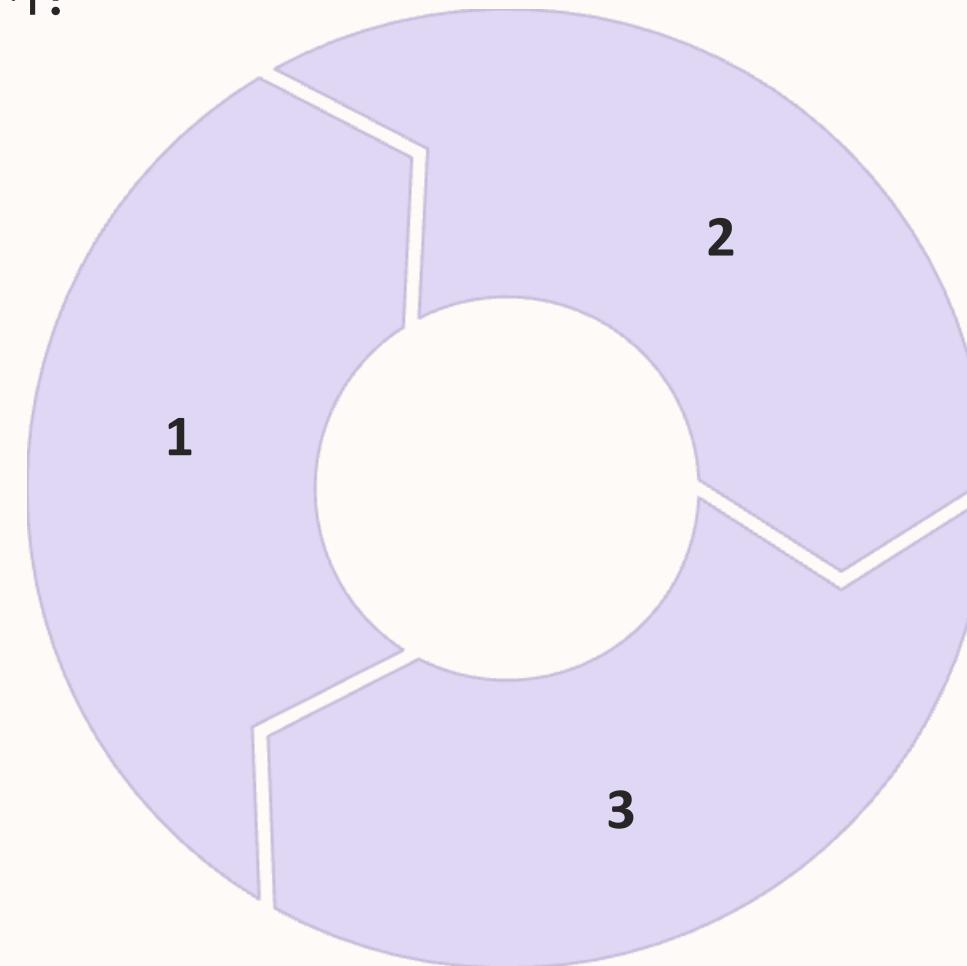


प्रेरणादायक उदाहरण

दूसरों को प्रेरित करने वाले
क्रोध जीत के उदाहरण

होली का आध्यात्मिक अर्थ

तो इस वर्ष क्या करेंगे? होली मनाने आये हो ना! तो होली में क्या करते हैं? कुछ जलाते हैं ना!
तो आज की होली में आप क्या जलायेंगे?



क्रोध जलाना

क्रोध को योग अग्नि में जलाना

देह अभिमान जलाना

'मैं' शब्द के अभिमान को जलाना

आत्म-अभिमान जगाना

'मैं आत्मा हूँ' की स्मृति जगाना



देहभान का 'मैं' जलाना

क्रोध जीत में आगे बढ़ने के लिए बॉडी कान्सेस का मैं इसको योग अग्नि में जलाओ। अनेक मैं-मैं को जलाओ और एक मैं आत्मा हूँ, इस 'मैं' शब्द को पक्का करो और बाकी 'मैं' आज योग अग्नि में जलाके जाओ।

■ **बॉडी कान्सेस का 'मैं'**
देहभान से उत्पन्न
अहंकार को जलाना

■ **अनेक 'मैं' को जलाना**
विभिन्न प्रकार के अहंकार
को समाप्त करना

■ **'मैं आत्मा हूँ' को दृढ़ करना**
आत्म-स्मृति को मजबूत करना

तनाव का कारण

क्योंकि क्रोध का कारण तनाव बहुत होता है। तो इस 'मैं' को समाप्त करने के लिए आज अपने अन्दर संकल्प लो। जलाना है क्योंकि यह भी तो बोझ है ना।

क्रोध

तनाव का प्रमुख कारण

देहभान का 'मैं'

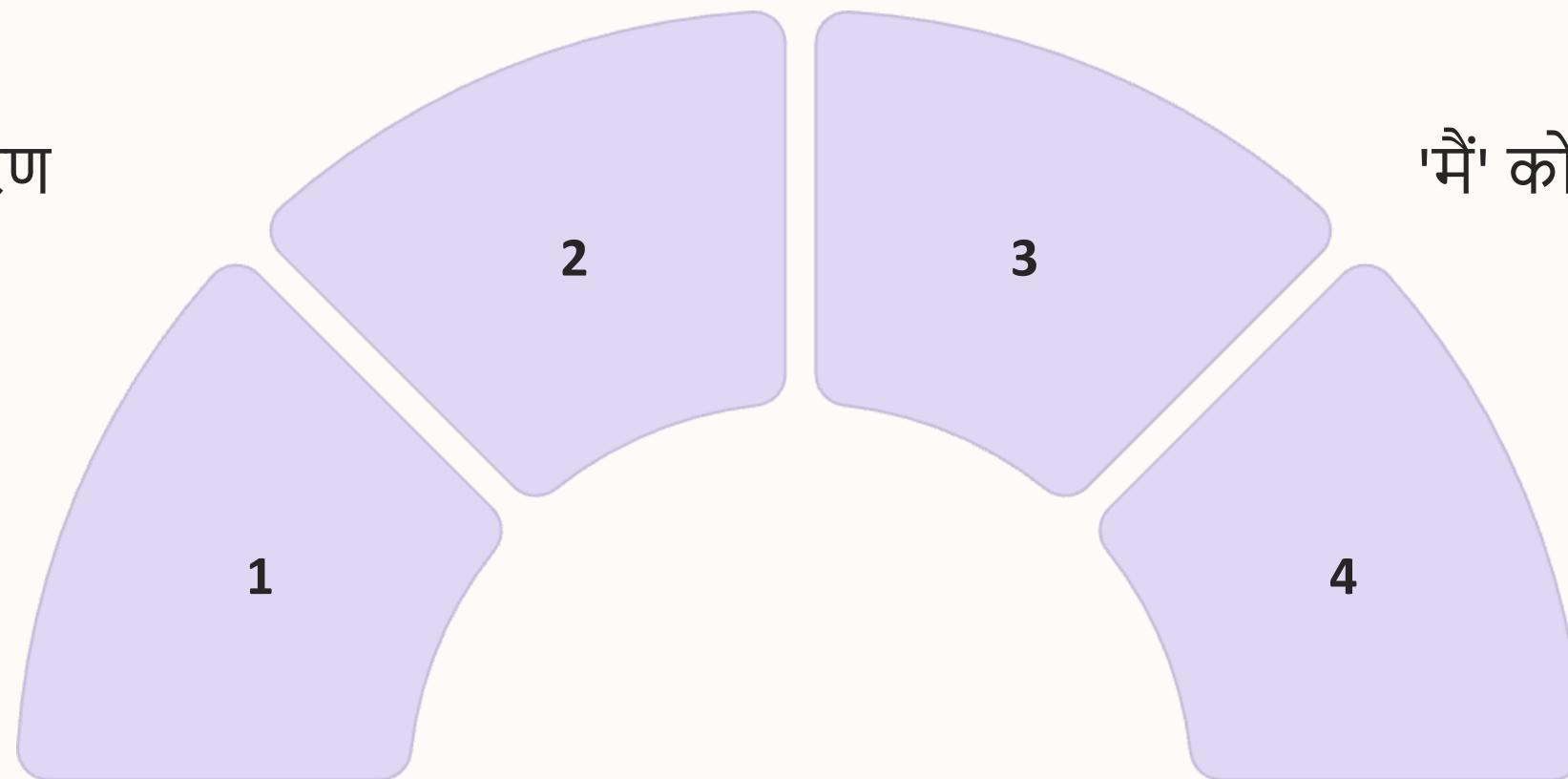
क्रोध का मूल कारण

बोझ

'मैं' का अहंकार एक बोझ है

संकल्प

'मैं' को समाप्त करने का दृढ़ निश्चय



विजयी बनने का संकल्प

तो ट्रेन में जाओ, प्लेन में जाओ तो यह बोझ यहाँ जलाके जाओ। जला सकते हो? जो समझते हैं हिम्मते बच्चे मददे बाप साथ है ही, तो विजय भी साथ है, जो यह सोचते हैं कि मुझे विजयी बनना ही है, वह हाथ उठाओ।



बोझ जलाना

अहंकार का बोझ
योग अग्नि में जलाना



हिम्मत

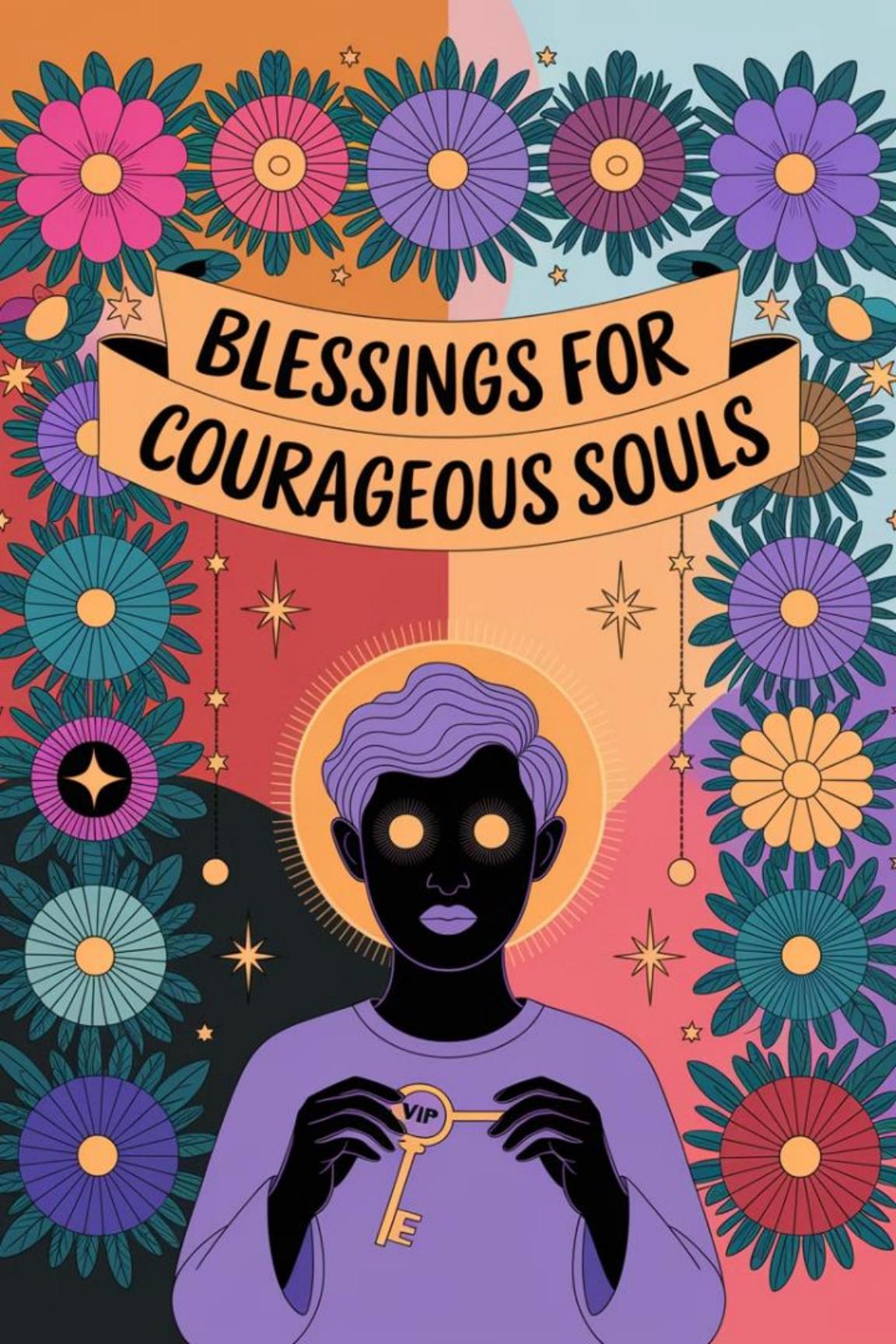
बच्चों की हिम्मत
और बाप की मदद



विजय

विजयी बनने का दृढ़ संकल्प





वी.आई.पी. का वास्तविक अर्थ

जो भी विजयी बनेंगे, उस एक-एक को माला पहना रहे हैं। मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा। हिम्मत वाले अभी जो भी वी.आई.पी आये हैं हिम्मत वाले हैं इसीलिए बापदादा वरदान दे रहे हैं।

विजय की माला

हर विजयी आत्मा को आध्यात्मिक माला पहनाई जा रही है

हिम्मत का वरदान

हिम्मतवान बच्चों को बापदादा विशेष वरदान दे रहे हैं

वी.आई.पी. का नया अर्थ

वी.आई.पी. का अर्थ अब हिम्मतवान और विजयी आत्मा है

21 जन्म का वरदान

इस समय आप जो भी वी.आई.पी किसी भी कार्य में बने हो एक जन्म के लिए लेकिन बापदादा आप हिम्मत वाले बच्चों को अब वी.आई.पी नहीं कहेंगे, बच्चे कहेंगे। बापदादा यह वरदान देते हैं, गैरन्टी देते हैं कि आप सभी 21 जन्म वी.आई.पी बनेंगे।

21

1

जन्म

परिवर्तन

21 जन्मों तक वी.आई.पी. बनने का वर्खीआई.पी. से बच्चे बनने का परिवर्तन

100%

गारंटी

बापदादा की 100% गारंटी

ब्राह्मण परिवार से कनेक्शन

यह इलेक्शन, सेलेक्शन नहीं चलेगी। तो सभी सिर्फ एक बात छोड़ना नहीं, जैसे अभी सम्बन्ध में सम्पर्क में आये हो ऐसे इस ब्राह्मण परिवार के कनेक्शन को छोड़ना नहीं। जितना कनेक्शन रखेंगे उतना रिलेशन पक्का होगा और बाप का वरदान प्राप्त कर ही लेंगे।

- 
- कनेक्शन बनाए रखना**
ब्राह्मण परिवार से जुड़े रहना
 - रिलेशन मजबूत करना**
संबंधों को और गहरा बनाना
 - वरदान प्राप्त करना**
बाप के वरदानों को प्राप्त करना

नए बच्चों के लिए संदेश

और आप सभी नये बच्चे वा रीयल गोल्ड बच्चे सदा बाप के आज्ञाकारी हो ना! तो आज इस मैं को जलाके ही जाना। जो पहले बारी आये हैं वह उठो।

पहली बार आने वालों को मुबारक

बापदादा पहले बारी आने वाले बच्चों को पहले बारी आने की पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं।

'मैं' को जलाना

आज इस 'मैं' को जलाके ही जाना

फर्स्ट डिवीजन का लक्ष्य

जैसे अभी पहले बारी आये हो ऐसे ही पहला नम्बर फर्स्ट डिवीजन, पहला नम्बर में तो फिक्स है लेकिन फर्स्ट डिवीजन में आयेंगे



तीव्र पुरुषार्थ का महत्व

लक्ष्य रखो कि हम लास्ट आये हैं लेकिन फास्ट जायेंगे क्योंकि समय का कोई भरोसा नहीं। अभी जो करना है वह तीव्र पुरुषार्थी बन कर लो क्योंकि बहुत समय का पुरुषार्थ आप सबको थोड़े समय में पूरा करना पड़ेगा।

1

लास्ट से फास्ट

देर से आने पर भी तेजी से आगे बढ़ना

2

तीव्र पुरुषार्थ

गहन आध्यात्मिक प्रयास करना

3

समय का सदुपयोग

उपलब्ध समय का अधिकतम लाभ उठाना

4

लक्ष्य प्राप्ति

कम समय में अधिक उपलब्धि हासिल करना

हिम्मत और मदद

तो हिम्मत है? है हिम्मत? हाथ उठाओ। देखो फोटो निकल रहा है आपका। बापदादा ऐसे हिम्मत वालों को मुबारक देते हैं कि हिम्मत आपकी मदद बाप की। लेकिन हिम्मत नहीं हारना।



हिम्मत

आध्यात्मिक मार्ग पर
चलने का साहस



मदद

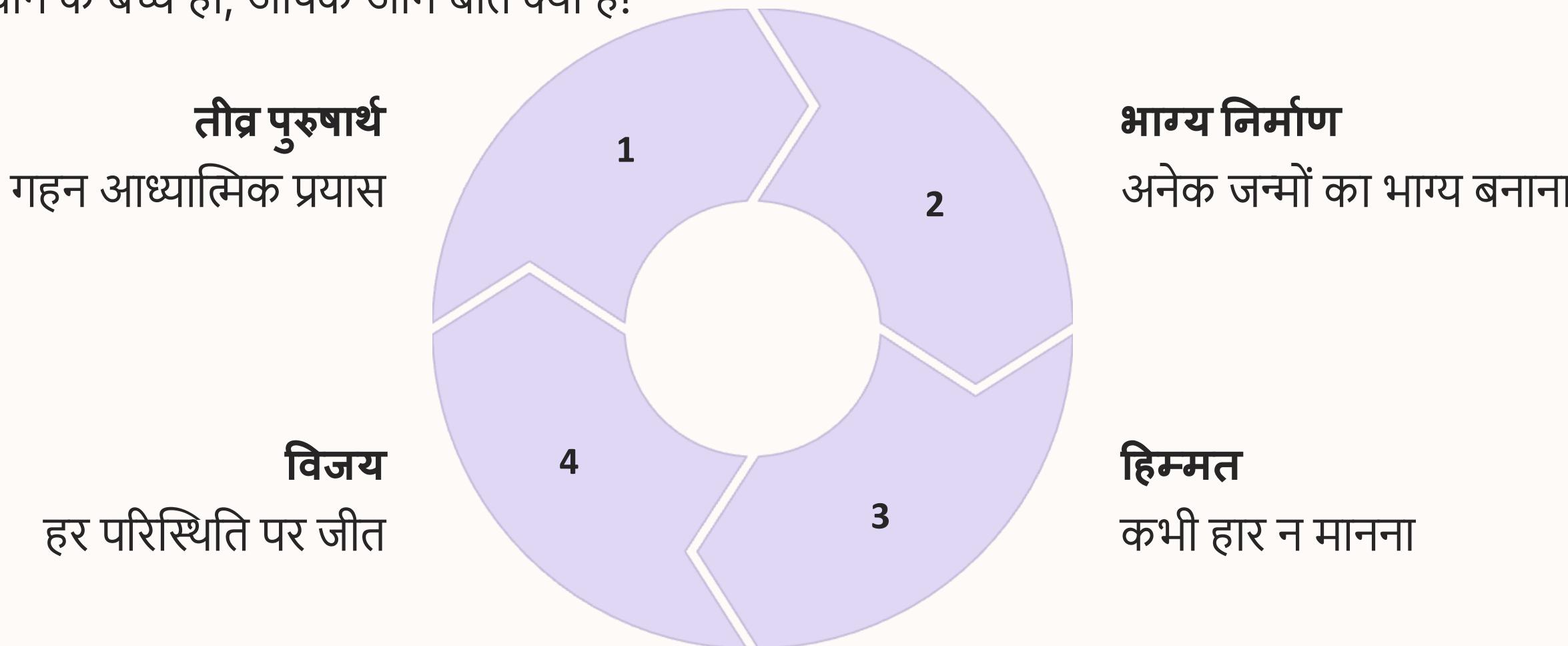
परमात्मा की निरंतर सहायता को कभी न हारना



दृढ़ता

भाग्य का सितारा

अपने भाग्य का सितारा सदा चमकाते रहना क्योंकि इस जन्म का तीव्र पुरुषार्थ, पुरुषार्थ नहीं तीव्र पुरुषार्थ अनेक जन्मों का भाग्य बनाने वाला है इसलिए हिम्मत कभी नहीं हारना। बातें आयेंगी लेकिन बात महावीर नहीं है, आप सर्वशक्तिवान के बच्चे हो, आपके आगे बात क्या है!



दृढ़ संकल्प द्वारा टेन्शन फ्री बनें

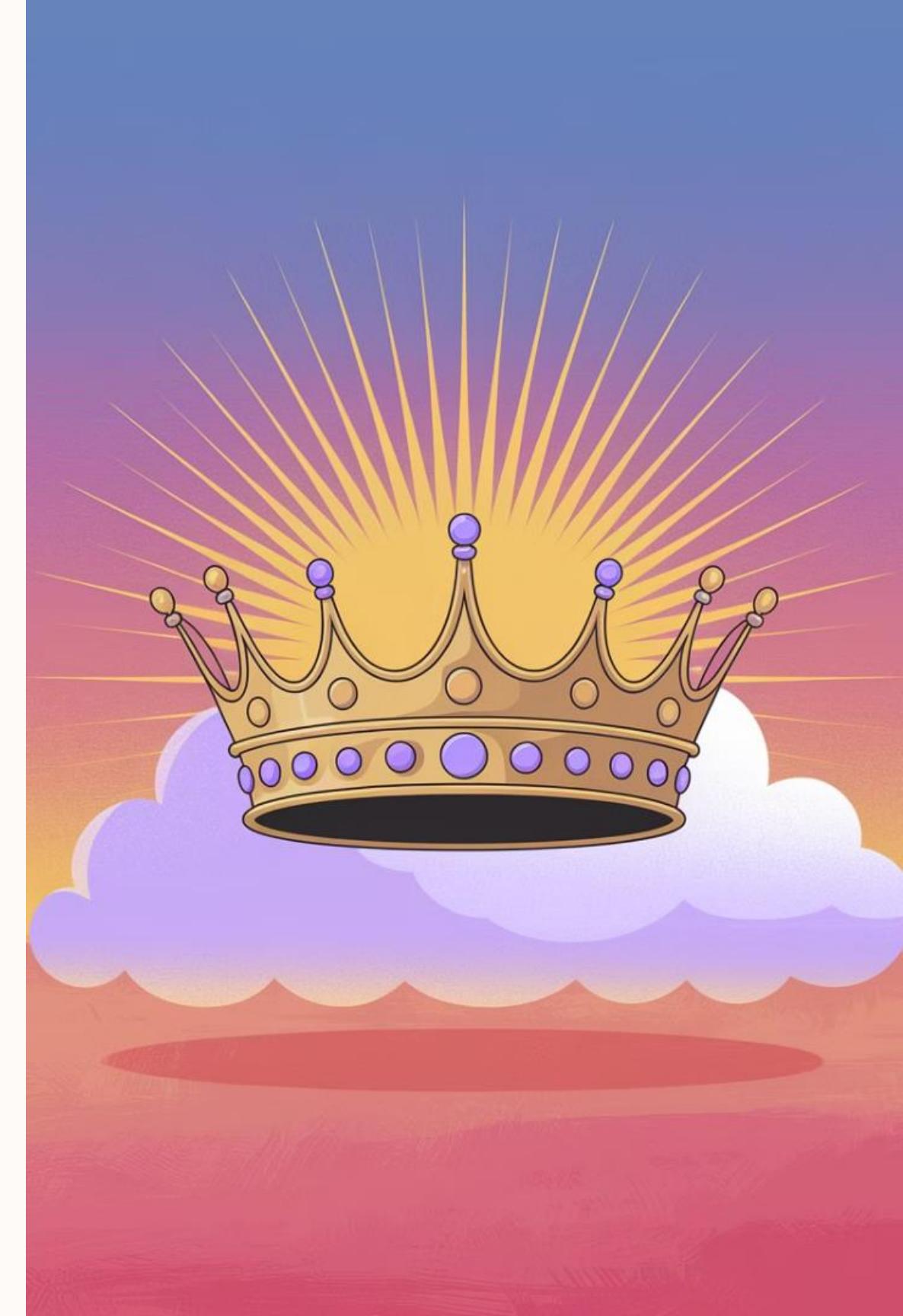
31 MARCH 2011

बापदादा आज अपने बच्चों को एक विशेष संदेश दे रहे हैं, वे चाहते हैं कि हर बच्चा टेन्शन फ्री बने और दूसरों के लिए एक आदर्श बने। यह संगमयुग सर्व प्राप्तियों का युग है, जहां हम अपना भाग्य जमा कर सकते हैं।

बापदादा हर बच्चे को स्वराज्य अधिकारी राजा के रूप में देखना चाहते हैं, वे चाहते हैं कि हम अपने मन, बुद्धि और संस्कारों पर नियंत्रण रखें।

SB

अव्यक्त बापदादा



दृढ़ संकल्प द्वारा टेन्शन फ्री बनें 31 MARCH 2011



नई शुरुआत

हर बच्चा टेन्शन फ्री बने,
एक आदर्श बने।

स्वराज्य अधिकारी

बापदादा हर बच्चे को
राजा के रूप में देखना चाहते हैं।

नियंत्रण

अपने मन, बुद्धि और संस्कारों पर
नियंत्रण रखें।

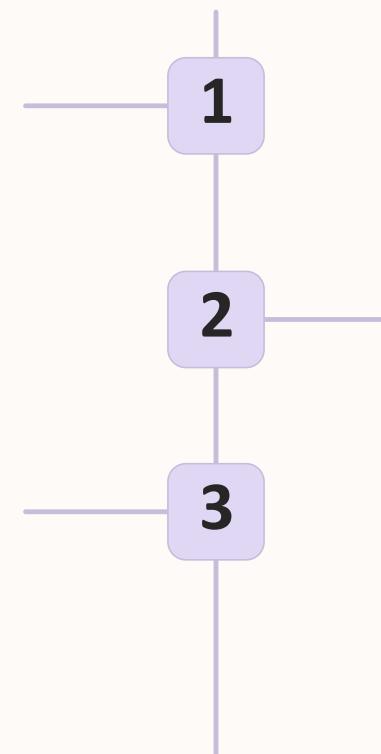
संगमयुग की महिमा

सर्व प्राप्तियों का युग

संगमयुग में हम अनेक जन्मों के लिए अपना भाग्य जमा कर सकते हैं। यह समय अमूल्य है और इसका सदृप्योग करना चाहिए।

शक्तियों का खजाना

बाप द्वारा हमें सर्व शक्तियों का खजाना प्राप्त हुआ है। इन शक्तियों का उपयोग कर हम मायाजीत बन सकते हैं।



स्वराज्य की प्राप्ति

इस समय हम स्वराज्य अधिकारी बन सकते हैं, अपने मन और इंद्रियों पर नियंत्रण पा सकते हैं।

स्वराज्य अधिकारी बनने की विधि

बाप को साथी बनाना

हमेशा बाप को अपना साथी बनाकर रखें। इससे मन, बुद्धि और संस्कार सहज ही नियंत्रण में रहेंगे।

शिवशक्ति स्वरूप की स्मृति

अपने को शिवशक्ति समझें। यह स्मृति मायाजीत और प्रकृतिजीत बनने में सहायक होगी।

प्रकृतिजीत बनना

प्रकृति को सतोप्रधान बनाने का कार्य करें। इससे हम प्रकृति के प्रभाव से मुक्त हो सकेंगे।

टेन्शन फ्री जीवन का महत्व

मानसिक शांति

टेन्शन फ्री जीवन से मन शांत रहता है, जिससे हम अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

आध्यात्मिक उन्नति

तनाव मुक्त होने से आध्यात्मिक प्रगति तेज होती है और हम बाप के समीप आ सकते हैं।

सेवा में वृद्धि

जब हम टेन्शन फ्री होते हैं, तो हमारी सेवा की क्षमता बढ़ जाती है और हम अधिक प्रभावी ढंग से दूसरों की मदद कर सकते हैं।

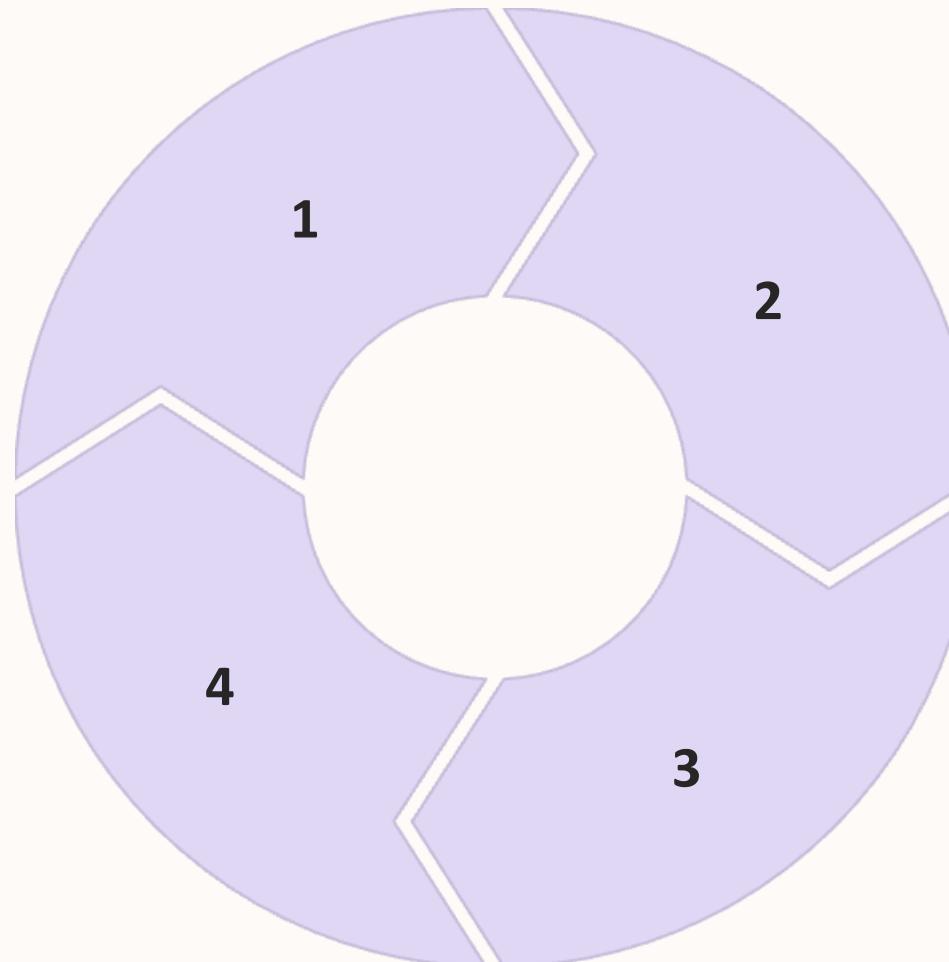
दृढ़ संकल्प की शक्ति

संकल्प

मन में दृढ़ निश्चय करें कि हम टेन्शन फ्री रहेंगे।

स्थिति

टेन्शन फ्री स्थिति को अपनी प्राकृतिक अवस्था बना लें।



प्रयास

निरंतर प्रयास करें और बाप की मदद लें।

अनुभव

धीरे-धीरे टेन्शन फ्री जीवन का अनुभव करें।

मन्सा सेवा का महत्व

दूसरों को शक्ति देना

अपनी खुशी की किरणों द्वारा दुखी आत्माओं को शक्ति दें। यह मन्सा सेवा का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

नियमित अभ्यास

मन्सा सेवा के लिए रोज़ाना कुछ समय निकालें। इसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं।



समय और संकल्प का मूल्य

संगमयुग का महत्व

संगमयुग में एक सेकंड भी बहुत कीमती है। इस समय का सदृप्योग करें।

व्यर्थ संकल्पों से मुक्ति

व्यर्थ संकल्पों को समाप्त करें। हर संकल्प को शक्तिशाली और सार्थक बनाएं।

सफलता का आधार

समय और संकल्प का सही उपयोग सफलता का आधार है। इन्हें सफल करने पर ध्यान दें।

तीव्र पुरुषार्थ की आवश्यकता

1

बिंदु लगाने का अभ्यास

सेकंड में बिंदु लगाने का अभ्यास करें। यह आने वाले समय के लिए बहुत आवश्यक है।

2

फुलस्टॉप की शक्ति

हर परिस्थिति में तुरंत फुलस्टॉप लगाने की शक्ति विकसित करें।

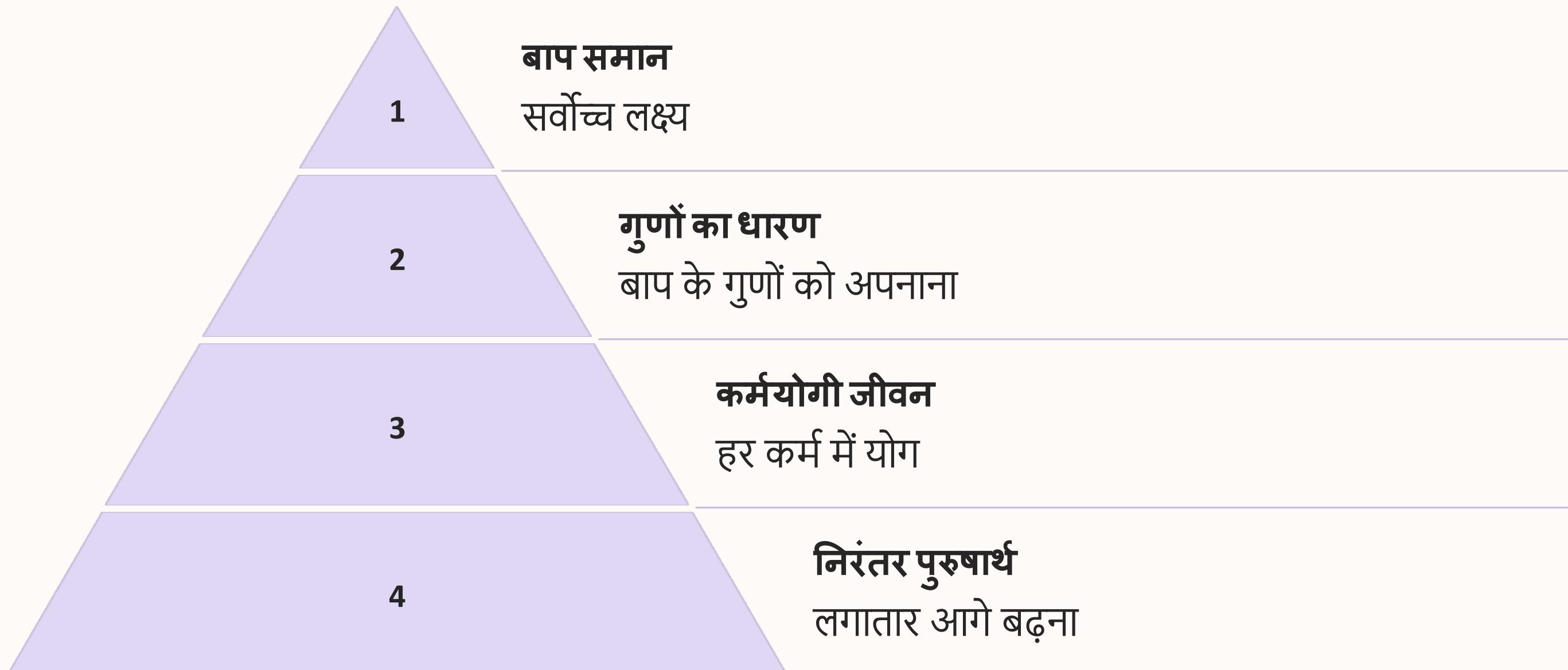
3

अचानक परिवर्तन की तैयारी

किसी भी अचानक परिवर्तन के लिए तैयार रहें। यह तीव्र पुरुषार्थ का परिणाम होगा।



बाप समान बनने का लक्ष्य





यज्ञ रक्षक की भूमिका



सुरक्षा

यज्ञ की रक्षा करना और उसे सुरक्षित रखना हर ब्राह्मण की जिम्मेदारी है।



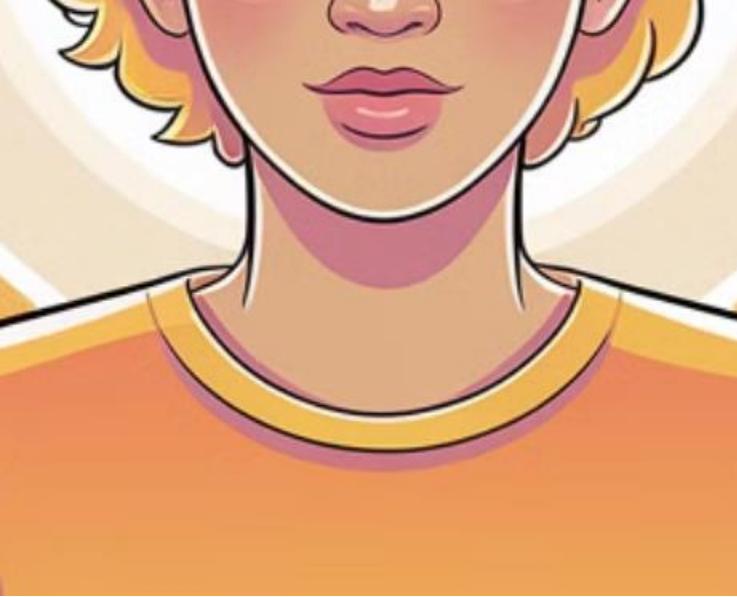
विकास

यज्ञ को आगे बढ़ाना और उसका विस्तार करना भी हमारा कर्तव्य है।



सेवा

यज्ञ के माध्यम से निःस्वार्थ सेवा करना हमारे जीवन का मुख्य उद्देश्य है।



कर्मयोगी जीवन की विशेषताएं

1 संतुलन

कर्म और योग का संतुलन बनाए रखें।
हर कर्म करते हुए योग में रहें।

2 निरंतरता

योग की स्थिति को निरंतर बनाए रखें,
चाहे कितना भी कठिन कार्य क्यों न हो।

3 सेवाभाव

हर कर्म को सेवा के भाव से करें,
इससे योग सहज हो जाएगा।

4 साक्षीभाव

कर्म करते हुए साक्षी दृष्टा बनें,
इससे योग की स्थिति मजबूत होगी।

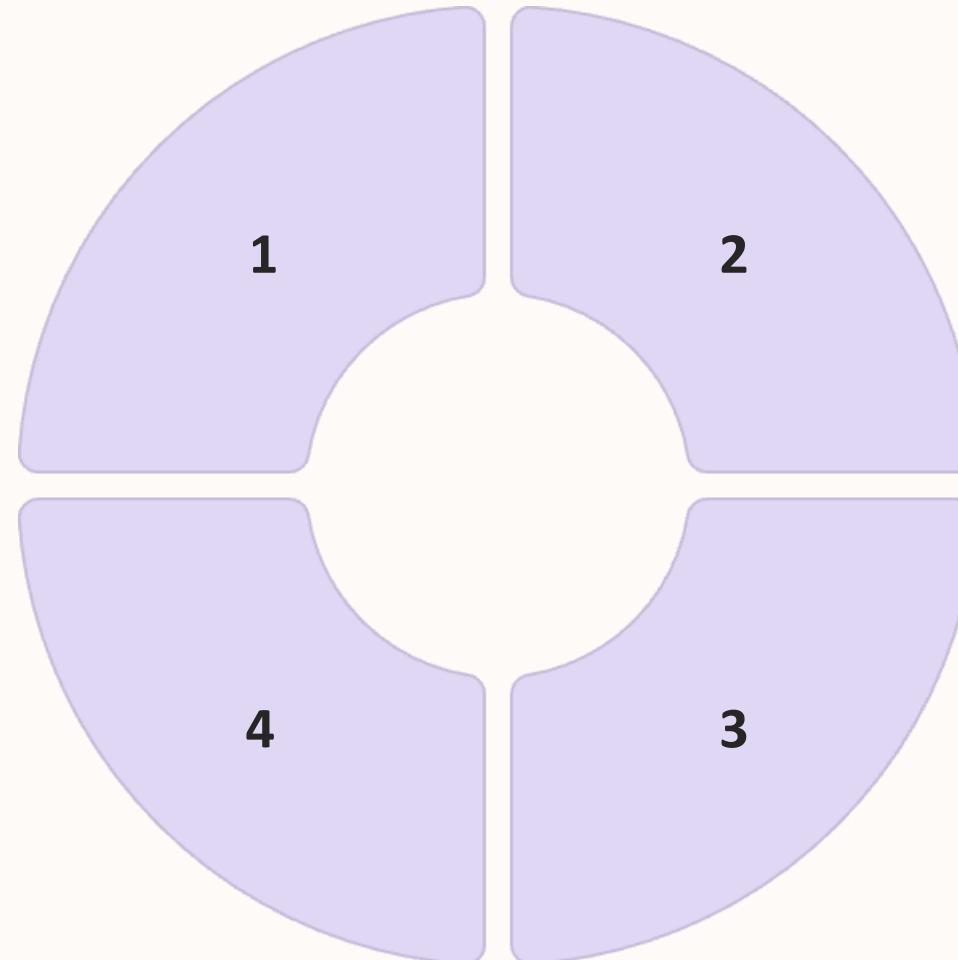
शुभ भावना की शक्ति

आत्मिक दृष्टि

हर आत्मा को शुद्ध आत्मा के रूप में देखें। यह शुभ भावना का आधार है।

निःस्वार्थ प्रेम

सभी के प्रति निःस्वार्थ प्रेम रखें। यह शुभ भावना का प्रत्यक्ष रूप है।



कल्याण की भावना

सभी के कल्याण की भावना रखें। यह विश्व परिवर्तन का बीज है।

सकारात्मक दृष्टिकोण

हर परिस्थिति में सकारात्मकता देखें। यह शुभ भावना को मजबूत करता है।

मनसा शक्ति द्वारा सेवा

1

संकल्प शक्ति

शुद्ध संकल्पों द्वारा वायुमंडल को शक्तिशाली बनाएं

2

वायब्रेशन

सकारात्मक वायब्रेशन फैलाएं

3

दृष्टि

शुभ भावना की दृष्टि से देखें

4

वरदान

मन से वरदान दें

स्व-परिवर्तन और सेवा का संतुलन

स्व-परिवर्तन

अपने आप को बदलने पर ध्यान दें।
यह सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि
इसके लिए समय कम है।

सेवा

दूसरों की सेवा करें, लेकिन स्व-
परिवर्तन को भूलें नहीं। दोनों का
संतुलन आवश्यक है।

प्रभाव

स्व-परिवर्तन से सेवा का प्रभाव
बढ़ता है। जब हम बदलते हैं, तो
दुनिया बदलती है।

निर्विघ्न सेवाकेंद्र की विशेषताएं

एकता

सभी साथी मिलकर काम करें, एक दूसरे का सहयोग करें।

नियमित मुरली

रोज मुरली का अध्ययन हो और उसे जीवन में उतारा जाए।

शुद्ध वायुमंडल

सेवाकेंद्र का वातावरण शांत और सकारात्मक हो।

सेवा का उत्साह

हर सदस्य में सेवा का जोश और उत्साह हो।

यज्ञ स्नेही वारिस बनने की विधि

समर्पण भाव

यज्ञ के प्रति पूर्ण समर्पण भाव रखें। इसे अपना घर समझें।

निःस्वार्थ सेवा

बिना किसी स्वार्थ के यज्ञ की सेवा करें। यह आपको यज्ञ स्नेही बनाएगा।

ज्ञान का अभ्यास

यज्ञ में मिले ज्ञान को जीवन में उतारें। इससे आप वारिस बनेंगे।

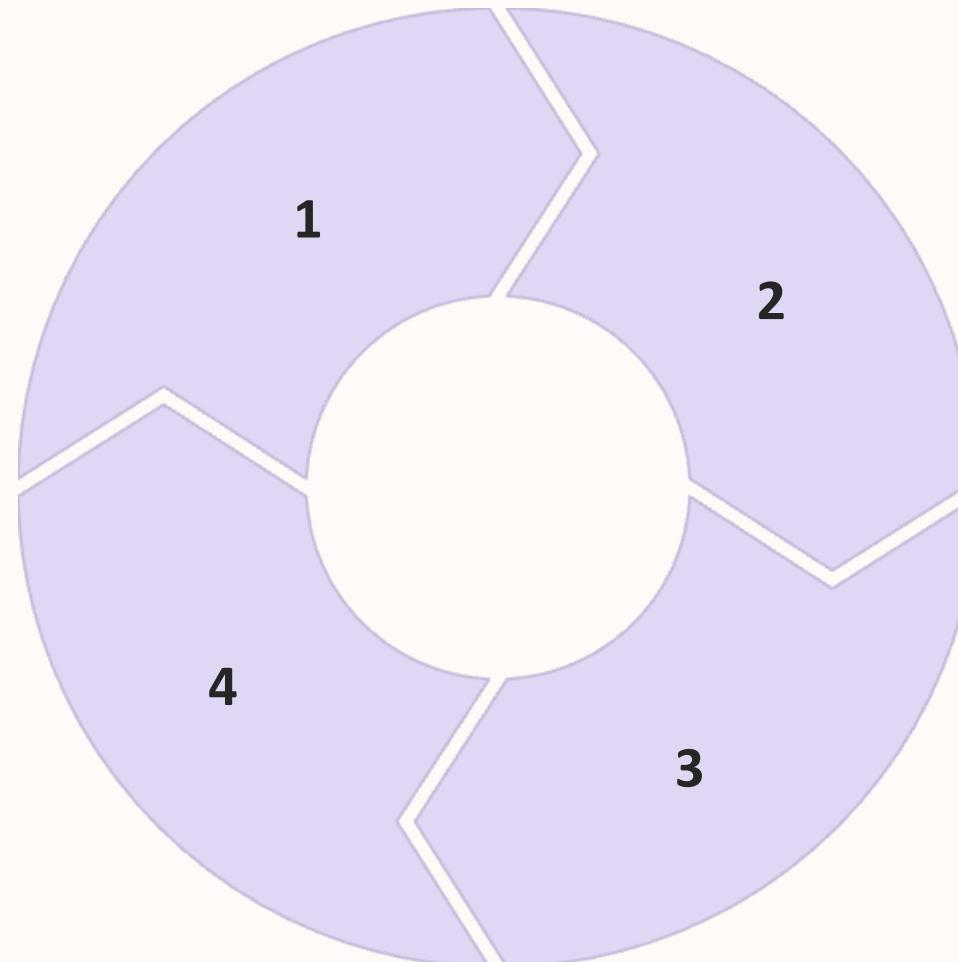
दूसरों को प्रेरणा

अपने उदाहरण से दूसरों को भी यज्ञ स्नेही बनने की प्रेरणा दें।

स्व और सेवा का बैलेंस

आत्म-चिंतन
स्वयं के विकास पर ध्यान दें

ज्ञान का दान
अपना अनुभव बांटें



सेवा
दूसरों की मदद करें

शक्ति संचय
योग द्वारा शक्ति भरें



प्रकृतिजीत बनने की युक्तियाँ

- 1
- 2
- 3
- 4

साक्षी दृष्टा

प्रकृति के खेल को साक्षी होकर देखें।
इससे आप प्रभावित नहीं होंगे।

आत्म-स्थिति

अपनी आत्मिक स्थिति में स्थित रहें।
यह प्रकृति से ऊपर उठने में मदद करेगा।

योग की शक्ति

निरंतर योग द्वारा अपनी शक्तियों को बढ़ाएं। यह
प्रकृति पर विजय पाने में सहायक होगा।

सतोप्रधान संकल्प

अपने संकल्पों को सतोप्रधान बनाएं।
इससे प्रकृति भी सतोप्रधान होगी।



अमृतवेले का महत्व

शक्ति का स्रोत

अमृतवेला दिन भर की शक्ति का स्रोत है।
इस समय का सदुपयोग करें।

वरदानों की घड़ी

अमृतवेले बाप से विशेष वरदान प्राप्त किए जा सकते हैं।
इस अवसर का लाभ उठाएं।

बाप से मिलन

यह समय बाप से गहरा कनेक्शन बनाने का है।
इससे पूरे दिन की दिशा तय होती है।

आत्मिक शुद्धि

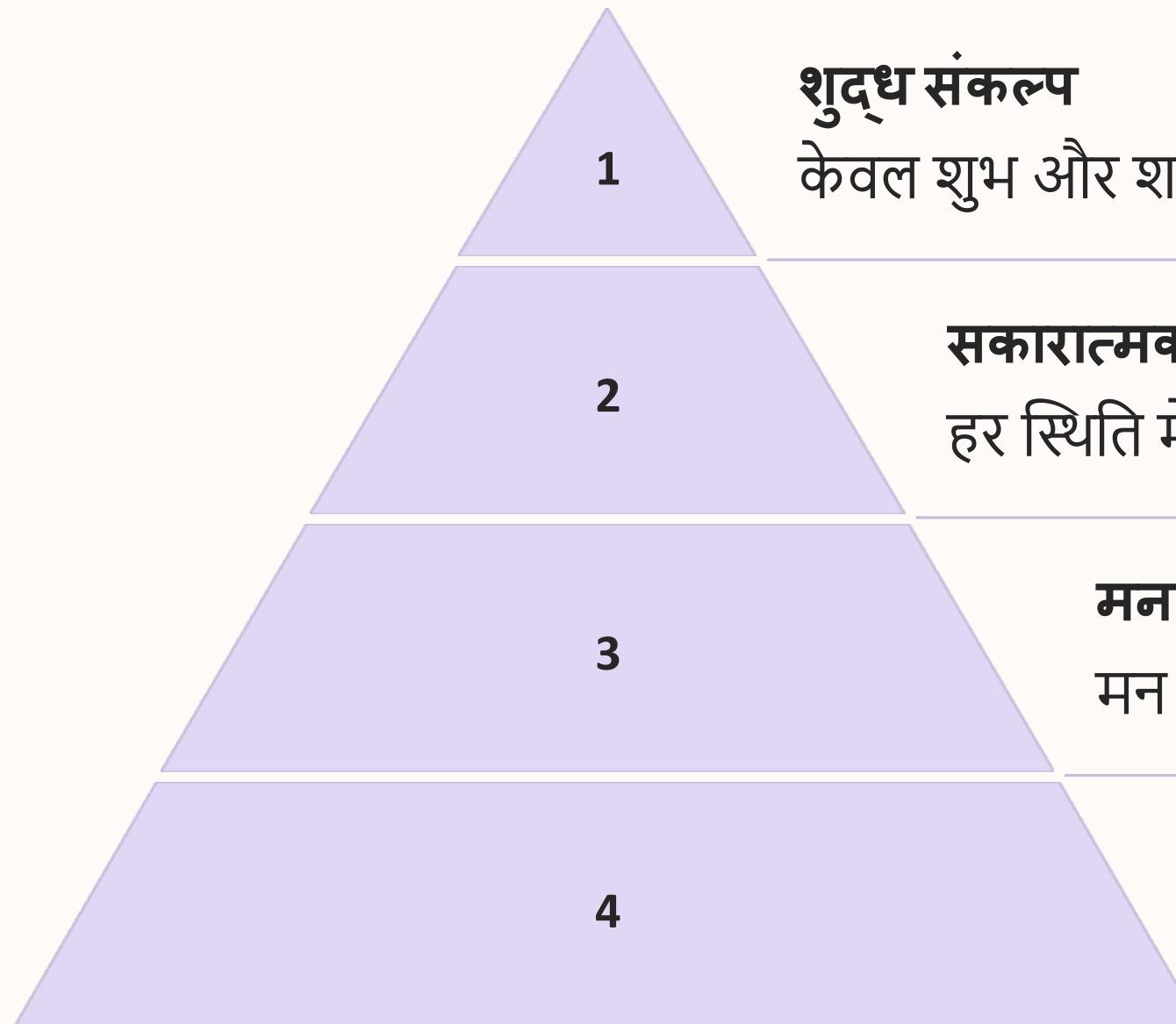
यह समय आत्मा को शुद्ध करने और
नई ऊर्जा से भरने का है।



मन्सा सेवा का समय निर्धारण

- नियमित समय**
हर दिन एक निश्चित समय मन्सा सेवा के लिए निर्धारित करें। यह आपकी दिनचर्या का हिस्सा बन जाएगा।
- अमृतवेले**
अमृतवेले के समय विशेष रूप से मन्सा सेवा करें। इस समय की शक्ति का लाभ उठाएं।
- ट्रैफिक कंट्रोल**
दिन में कई बार ट्रैफिक कंट्रोल के दौरान मन्सा सेवा का अभ्यास करें।
- सोने से पहले**
रात को सोने से पहले कुछ समय मन्सा सेवा के लिए निकालें। यह आपकी नींद को भी शांतिपूर्ण बनाएगा।

व्यर्थ संकल्पों से मुक्ति





सफलतामूर्त बनने के चरण

लक्ष्य निर्धारण

स्पष्ट और उच्च लक्ष्य निर्धारित करें। यह आपको दिशा देगा।

दृढ़ संकल्प

अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ संकल्प रखें। यह सफलता की नींव है।

निरंतर पुरुषार्थ

हर दिन अपने लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाएं। छोटी-छोटी उपलब्धियां बड़ी सफलता की ओर ले जाती हैं।

आत्मविश्वास

अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखें। आत्मविश्वास सफलता का मूल मंत्र है।

कर्मयोगी जीवन का महत्व



संतुलन

कर्म और योग का संतुलन जीवन को सार्थक बनाता है।



आध्यात्मिक विकास

कर्मयोग से आत्मा का निरंतर विकास होता है।



निःस्वार्थ सेवा

कर्मयोगी जीवन से निःस्वार्थ सेवा स्वाभाविक हो जाती है।



आंतरिक शांति

कर्मयोग से मन में सदा शांति बनी रहती है।

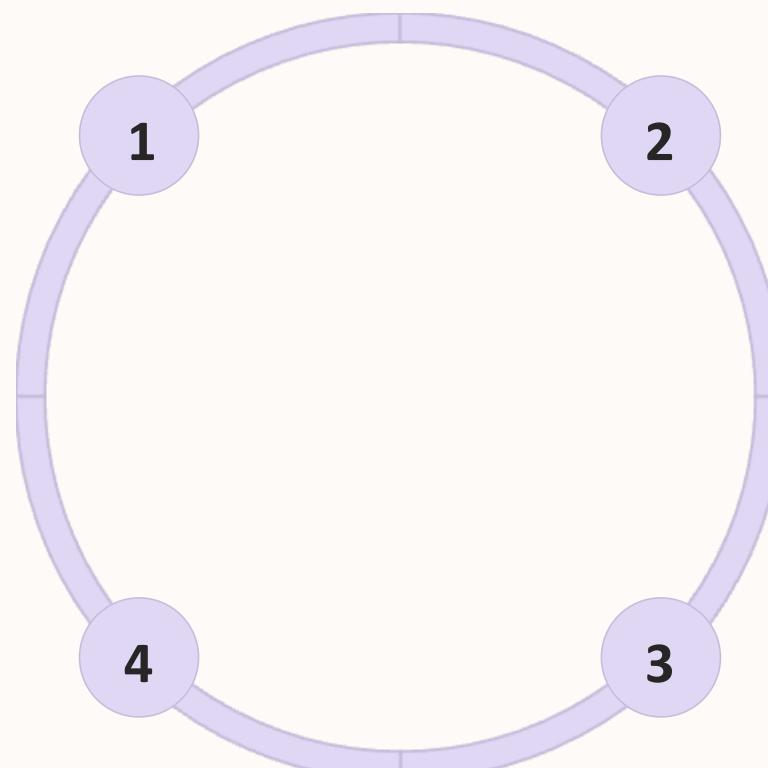
शुभ भावना का प्रभाव

आत्मिक उन्नति

शुभ भावना से स्वयं की आत्मा का विकास होता है। यह आध्यात्मिक प्रगति का मूल है।

आंतरिक शांति

शुभ भावना रखने से मन में शांति बनी रहती है। यह तनाव मुक्त जीवन का आधार है।



सकारात्मक वातावरण

शुभ भावना से आस-पास का वातावरण सकारात्मक बनता है। यह दूसरों को भी प्रभावित करता है।

सेवा की शक्ति

शुभ भावना से की गई सेवा अधिक प्रभावशाली होती है। यह दूसरों के जीवन में परिवर्तन ला सकती है।

बाप समान बनने का संकल्प

निरंतर योग

बाप के साथ निरंतर योग में रहें। यह बाप समान बनने की नींव है।

गुणों का धारण

बाप के गुणों को अपने जीवन में उतारें।
इससे आप उनके समान बनते जाएंगे।

निःस्वार्थ सेवा

बाप की तरह निःस्वार्थ सेवा करें। यह आपको उनके समीप लाएगा।

दृढ़ संकल्प

बाप समान बनने का दृढ़ संकल्प रखें।
यह संकल्प आपको लक्ष्य तक पहुंचाएगा।



बाप और बच्चों का अलौकिक मिलन 15 MARCH 2015

आज हम बाप और बच्चों के अलौकिक मिलन के बारे में बात करेंगे। यह एक ऐसा संबंध है जो संगमयुग की अनमोल सौगात है। इस प्रेजेंटेशन में हम इस विशेष रिश्ते की गहराई और महत्व को समझेंगे।

SB **अव्यक्त बापदादा**

मिलन का आनंद

खुशी के चेहरे

सभी के चेहरे मुस्कराते हुए दिखाई दे रहे हैं। बापदादा से आपस में एक दूसरे को मुस्कराते हुए मिलन मना रहे हैं। हर एक का मन यही गीत गा रहा है - मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा।

मिलन का उत्साह

कितनी आत्माएं बाप और बच्चों का मिलन मनाना देख खुश हो रही हैं। सबके चेहरों पर मिलन की खुशी का भाव दिखाई दे रहा है। चाहे नजदीक हैं, चाहे दूर हैं, सभी में मिलन का उमंग और उत्साह है।



दिल का गीत

बाप का गीत

बाप के मुख से "वाह मेरे दिल से याद करने वाले बच्चे वाह!" सुनाई दे रहा है। बाप के दिल में बच्चे समाए हुए हैं।

बच्चों का गीत

बच्चों के दिल में बाबा बस गया है। सभी के मन में मिलन की, खुशी की लहर दिखाई दे रही है।

खुशी की झलक

"वाह" कहने से ही सबके चेहरे से खुशी की झलक स्पष्ट दिखाई दे रही है। हर एक का चेहरा हर्षित मुख से कितना मीठा मुस्करा रहा है।



दिल का आवाज

1

बच्चों का आवाज

हर एक के दिल में "मेरा बाबा" का आवाज गूंज रहा है। यह दिल का गीत है जो आवाज में सुनाई नहीं देता, लेकिन बाबा को स्पष्ट सुनाई दे रहा है।

2

बाप का रेस्पांस

बापदादा हर बच्चे के दिल के गीत को सुनते हुए बहुत दुलार दे रहे हैं। बाप रेस्पांस में कह रहे हैं "वाह हर बच्चा वाह!"

3

विश्वव्यापी मिलन

चाहे कितने भी दूर हों, यहाँ या अन्य देशों में, सभी के मुख से "वाह बाबा वाह" का गीत बापदादा सुन रहे हैं।

मेरा और तेरा

बच्चों का प्यार

हर एक के दिल में "मेरा बाबा" बसा हुआ है।
यह शब्द "मेरा" कितना गहरा और मीठा है।
बच्चे कहते हैं "मेरा बाबा" और इसमें
उनका सारा प्यार समाया हुआ है।

बाप का प्यार

बाप की दिल हर एक बच्चे के प्रति कह रही है
"मेरा बच्चा"। यह सम्बन्ध साधारण नहीं है, यह
आत्मा और परमात्मा का अलौकिक मिलन है।

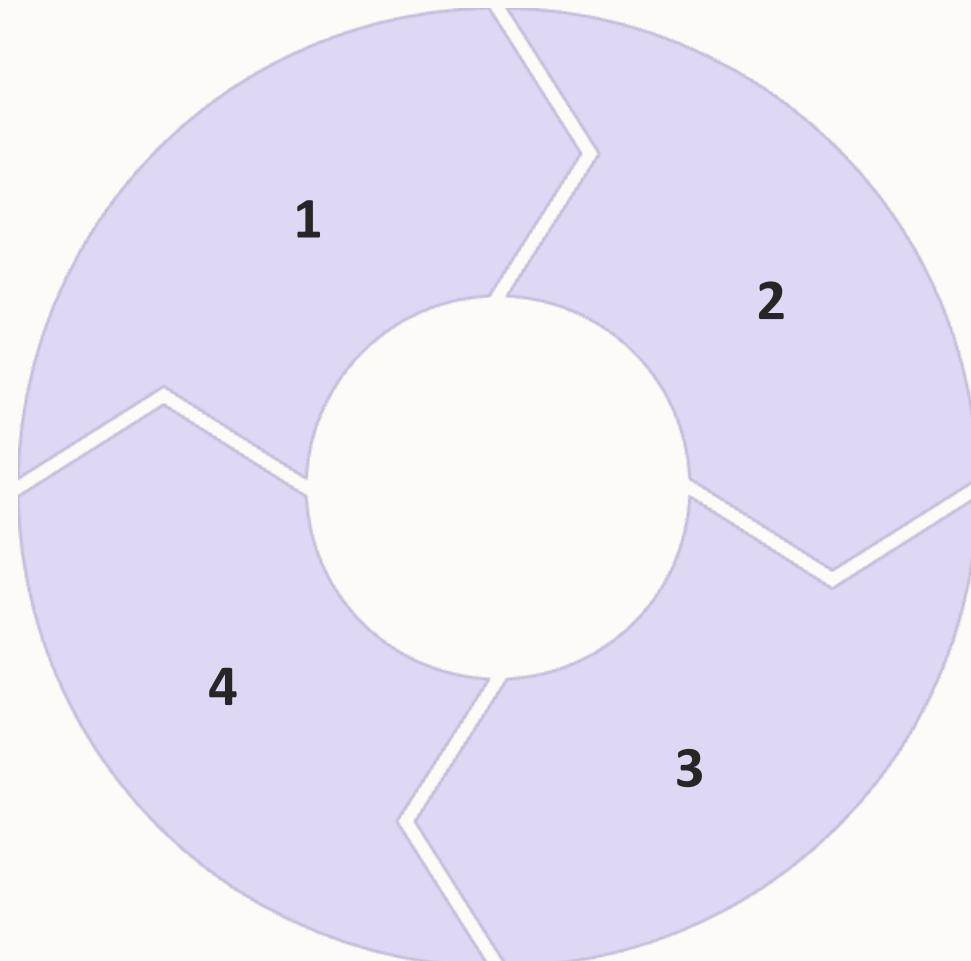
अविस्मरणीय मिलन

सदा याद

यह मिलन सदा ही याद रहेगा।

अभूल याद

यह याद कभी भूलने की चीज ही नहीं है।



अलौकिक प्यार

आत्मा और परमात्मा का यह प्यार अलौकिक है।

जिगरी रिश्ता

किससे भी पूछो, सब कहते हैं "मेरा बाबा"।



सेवा का महत्व

यज्ञ सेवा

बाप और यज्ञ सेवा से सभी का प्यार है। यह सेवा और मिलन दोनों ही साथ में हो जाते हैं।

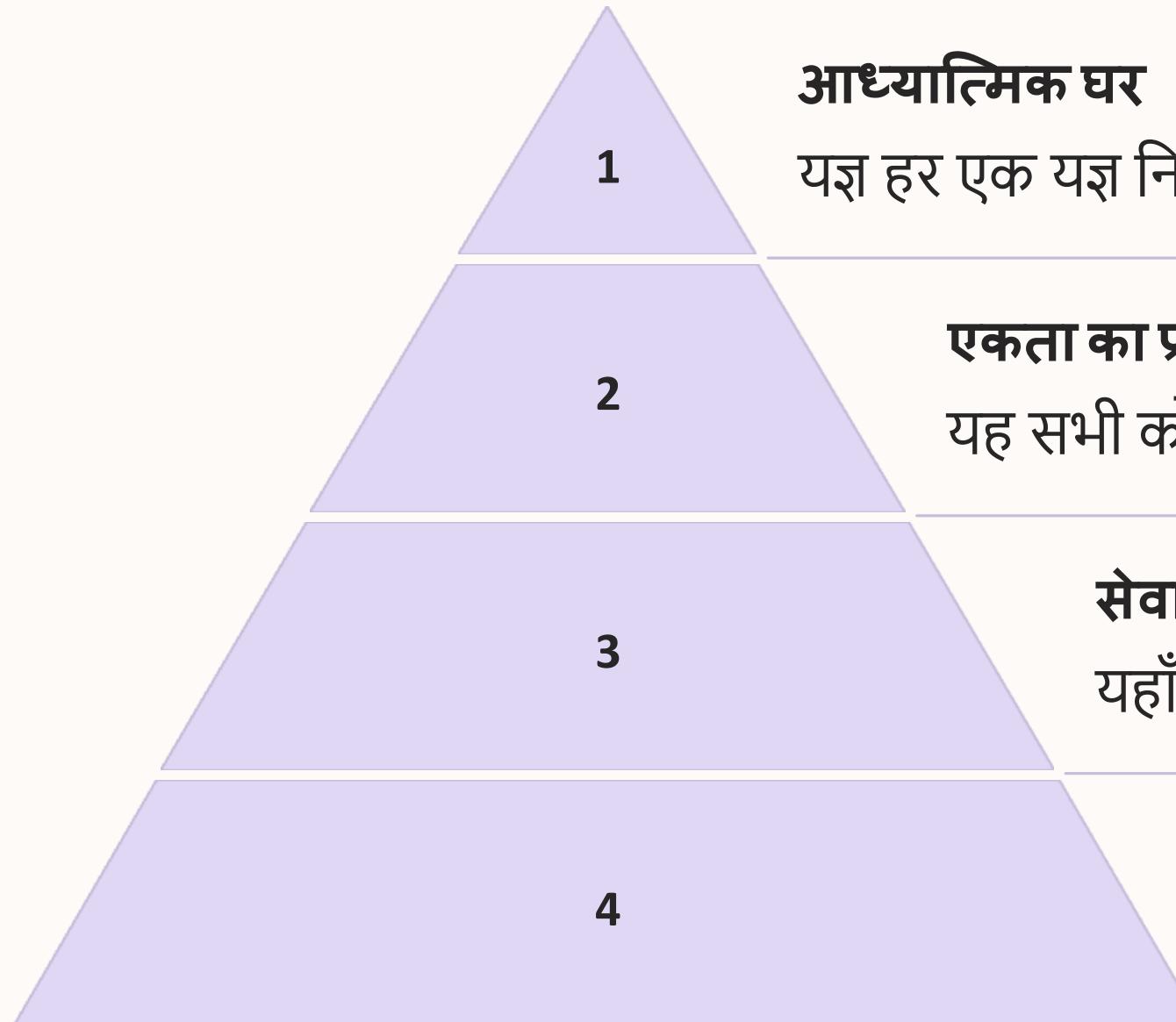
सेवा का आनंद

हर एक ग्रुप यज्ञ सेवा बहुत प्यार से कर रहे हैं, किया है और अभी भी करेंगे।

बापदादा का आशीर्वाद

बापदादा हर बच्चे को सेवा में आने की मुबारक दे रहे हैं।

यज्ञ का महत्व



आध्यात्मिक घर
यज्ञ हर एक यज्ञ निवासी का असली घर है।

एकता का प्रतीक
यह सभी को एक सूत्र में बांधता है।

सेवा का केंद्र
यहाँ से सेवा का संचालन होता है।

मिलन स्थल
यह बाप और बच्चों के मिलन का स्थान है।

दादी जानकी का उदाहरण



हिम्मत

दादी जानकी बीमार होने के बावजूद हाजिर रहती हैं। उनकी हिम्मत सबके लिए प्रेरणा है।



समर्पण

दादी का क्लास में उपस्थित रहना सबके लिए महत्वपूर्ण है। उनकी अनुपस्थिति खालीपन महसूस कराती है।



प्यार

सभी की नज़र दादी पर है। "हमारी दादी" कहकर सब उन्हें प्यार करते हैं।

मोहिनी बहन का साहस

- 1 हॉस्पिटल यात्रा
- 2 समय की पाबंदी
- 3 हिम्मत

मोहिनी बहन हॉस्पिटल की यात्रा करके आई हैं।

रोज कुछ न कुछ होने के बावजूद, वे समय पर तैयार हो जाती हैं।

उनकी हिम्मत सराहनीय है। वे हर परिस्थिति में अपने को सेफ रखती हैं।





न्यूयॉर्क की मोहिनी बहन

दूर से याद

न्यूयॉर्क की मोहिनी बहन ने याद भेजी है।

हिम्मत

उन्होंने हिम्मत अच्छी रखी है। समय लगा है, लेकिन अपने को सुरक्षित रखा है।

आशा

जल्द ही वे ठीक हो जाएंगी। बाबा और सभी की याद उनके साथ है।



भाइयों का स्वास्थ्य

बृजमोहन भाई

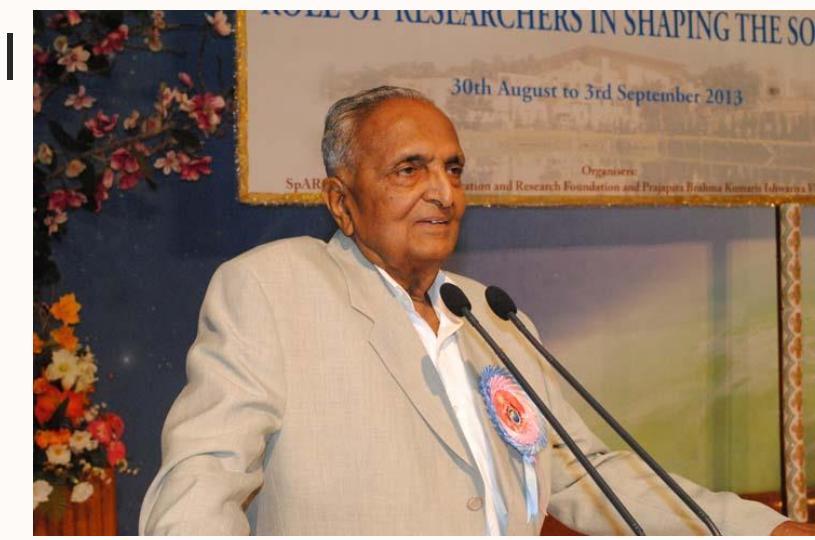
अब हॉस्पिटल छोड़ दी है। चार दिन के बाद पूरी तरह ठीक हो जाएंगे।

निर्वैर भाई

स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है। जल्द ही पूरी तरह स्वस्थ हो जाएंगे।

रमेश भाई

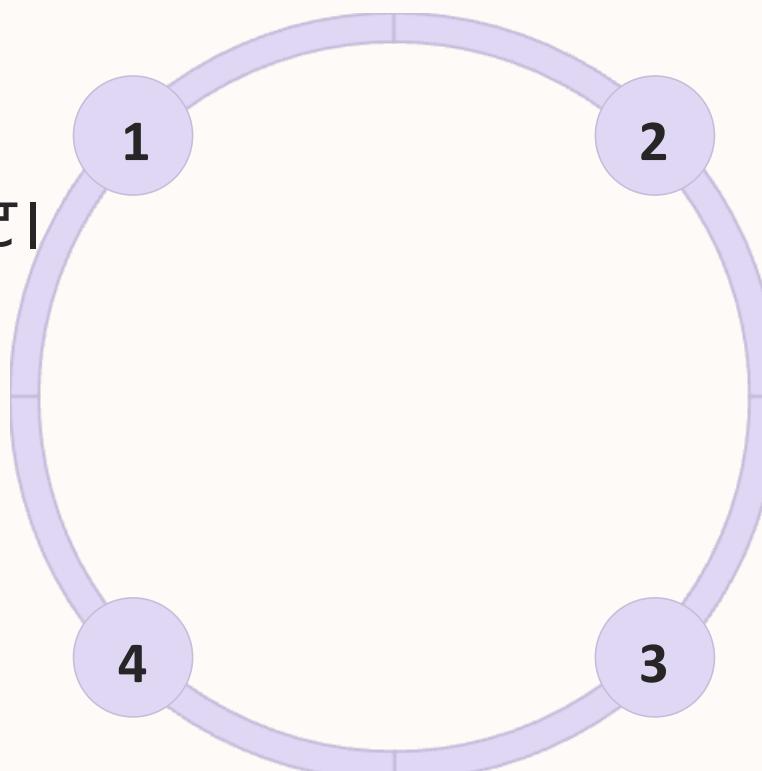
तीनों भाई अब ठीक हो गए हैं।
यह खुशी की बात है।



बापदादा के महावाक्य

पुरानी बातें भुलाना
जो पुरानी बातें हैं उसको भुला दो, पास्ट इंज पास्ट।

नए सेवा प्लान
नए सेवा के कुछ प्लान बनाओ।



शिवबाबा की याद
अब एक शिवबाबा को ही याद करो।

पावरफुल योग
अब बहुत पावरफुल योग की जरूरत है।

संगठन की शक्ति

1

एकता

संगठन की शक्ति से ही सेवा का प्लान सफल होगा।

2

सहयोग

अलग-अलग होने से सेवा का प्लान सफल नहीं होता।

3

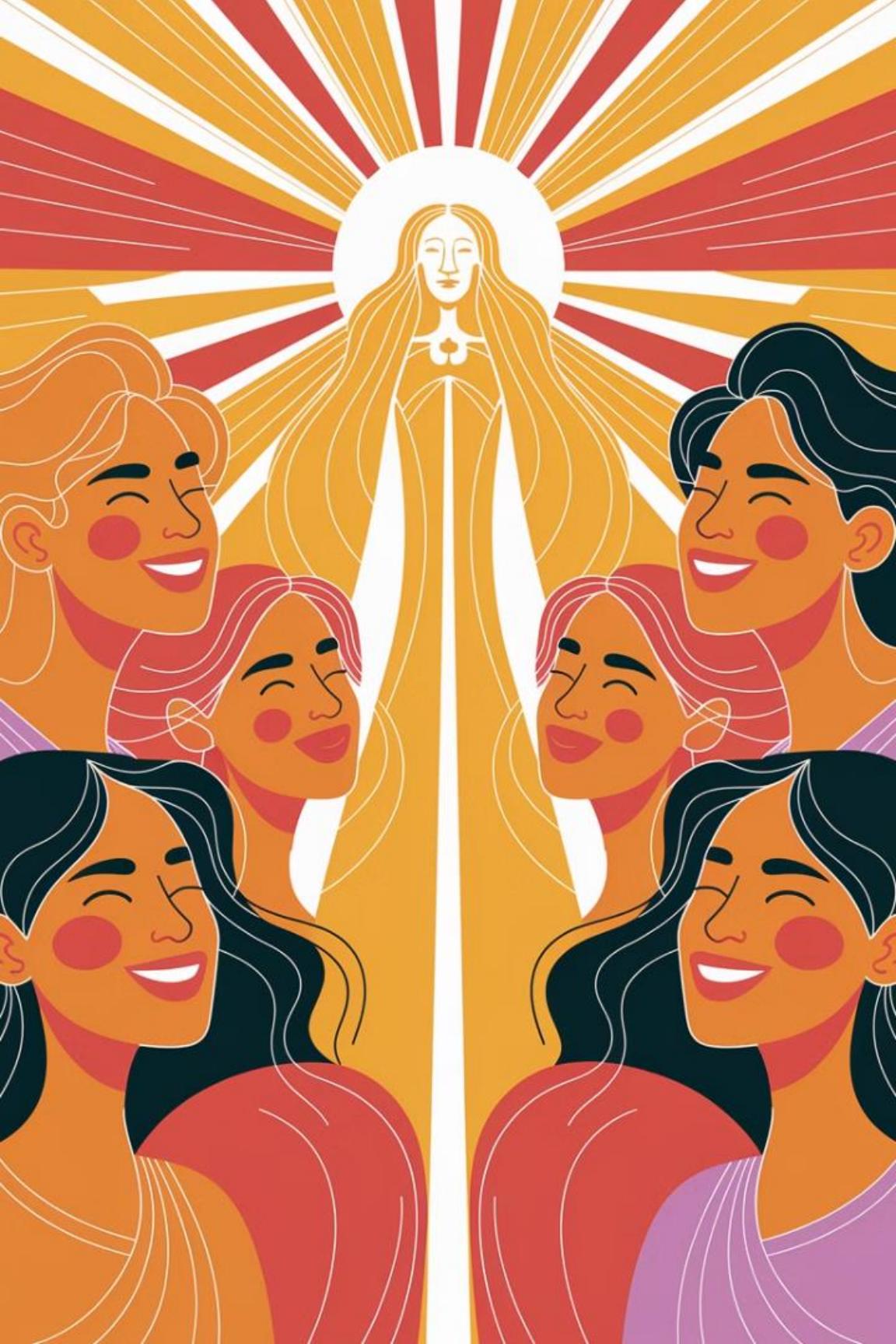
साइलेंस

10 मिनट अच्छी तरह से साइलेंस का अनुभव करो।

समापन संदेश

इस प्रेजेंटेशन में हमने बाप और बच्चों के अलौकिक मिलन के बारे में जाना। यह संबंध संगमयुग की अनमोल सौगात है। याद रखें, हमारे दिल में सदा "मेरा बाबा" बसा रहे और हम सब मिलकर सेवा में लगे रहें।

अंत में, बापदादा के शब्दों को याद करें - पुरानी बातों को भुलाकर, एक शिवबाबा को याद करो और पावरफुल योग का अभ्यास करो। संगठन की शक्ति से नए सेवा प्लान बनाएं और उन्हें सफल करें।



बापदादा का बच्चों से मिलन

31 MARCH 2016

आज बापदादा चैतन्य दीपकों के संगठन को देखकर बहुत खुश हो रहे हैं। दुनिया के कोने-कोने से एक-एक दीपक दीपराज से मिलने आए हैं। यह मिलन बहुत श्रेष्ठ और मूल्यवान है।



अव्यक्त बापदादा

दिल का मिलन

प्यारा मिलन

यह मिलन कितना प्यारा लगता है क्योंकि संगठन ही चलते फिरते दीपराज और दीपराज के बच्चे, दोनों का आपस में मिलना है।

दिल की बातें

बच्चे कहते बाबा, ओ बाबा! और बाबा कहते हाँ बच्चे, मीठे बच्चे। यह दिल की बातें बहुत मीठी लगती हैं।



दीपावली का अर्थ

दीपकों का मिलन

आज का दिन दीपावली कहलाता है, जिसका अर्थ है दीपकों का मिलन।

बाप का आगमन

बाप आज आपके लिए ही आए हैं, इसलिए इस मिलन का नाम दीपावली रखा गया है।

प्रेम का प्रकाश

हर एक दीपक अपने प्रेम और ज्ञान के प्रकाश से जगमगा रहा है।

हर चेहरे की कहानी



भावों का दर्पण

हर एक का फेस बहुत कुछ बातें मन की अभी इस समय दिल में जो भी है वह कईयों की तो बाहर लिखत में दिखाई दे रही है।



दिल का प्यार

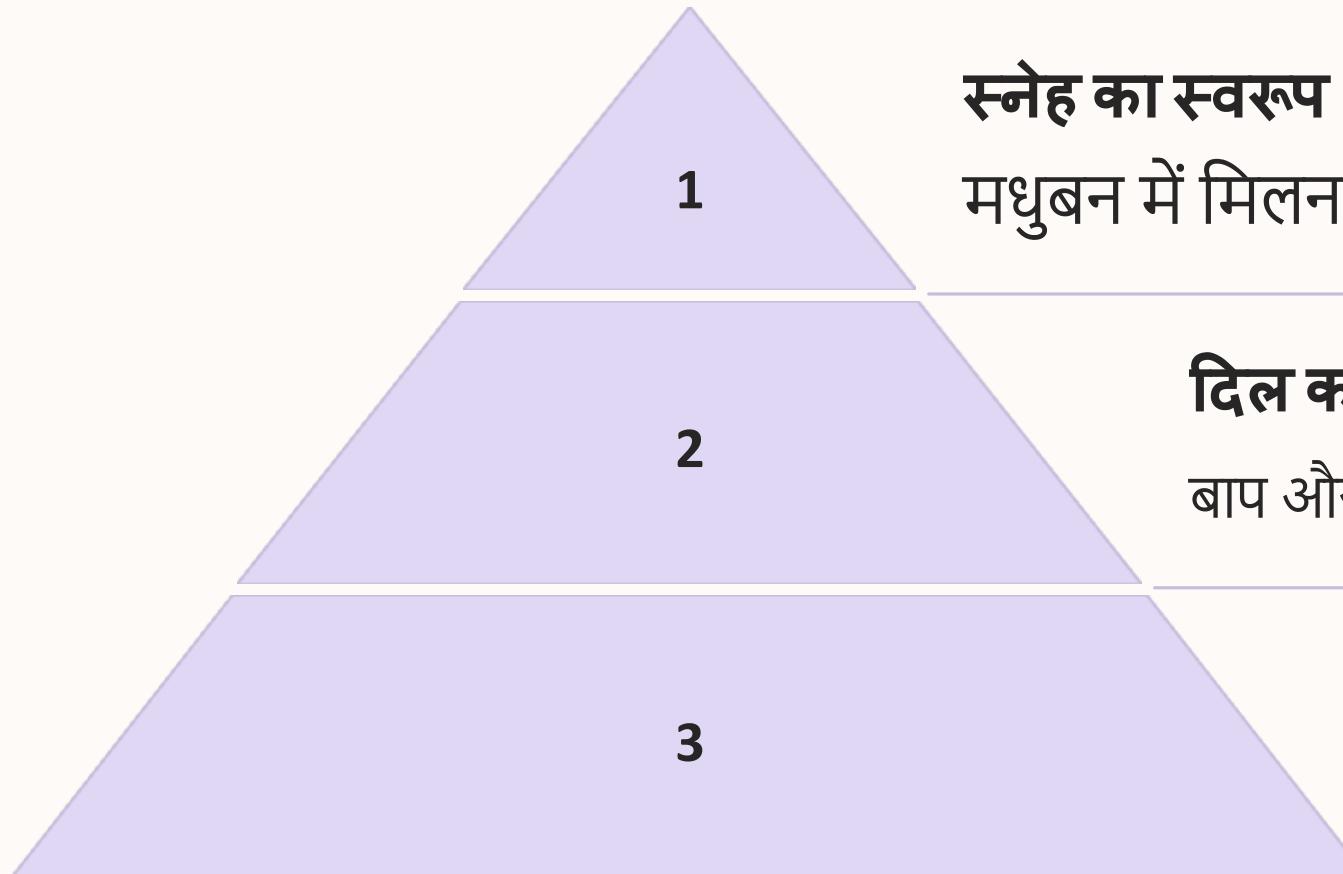
बाप के सामने दिखाई दे वह समय बहुत कम मिलता है, लेकिन दिल का प्यार स्पष्ट झलकता है।



विश्व व्यापी मिलन

चाहे फारेन हो, चाहे इन्डिया हो लेकिन बाप के दिल में बच्चे, बच्चों के दिल में बाबा।

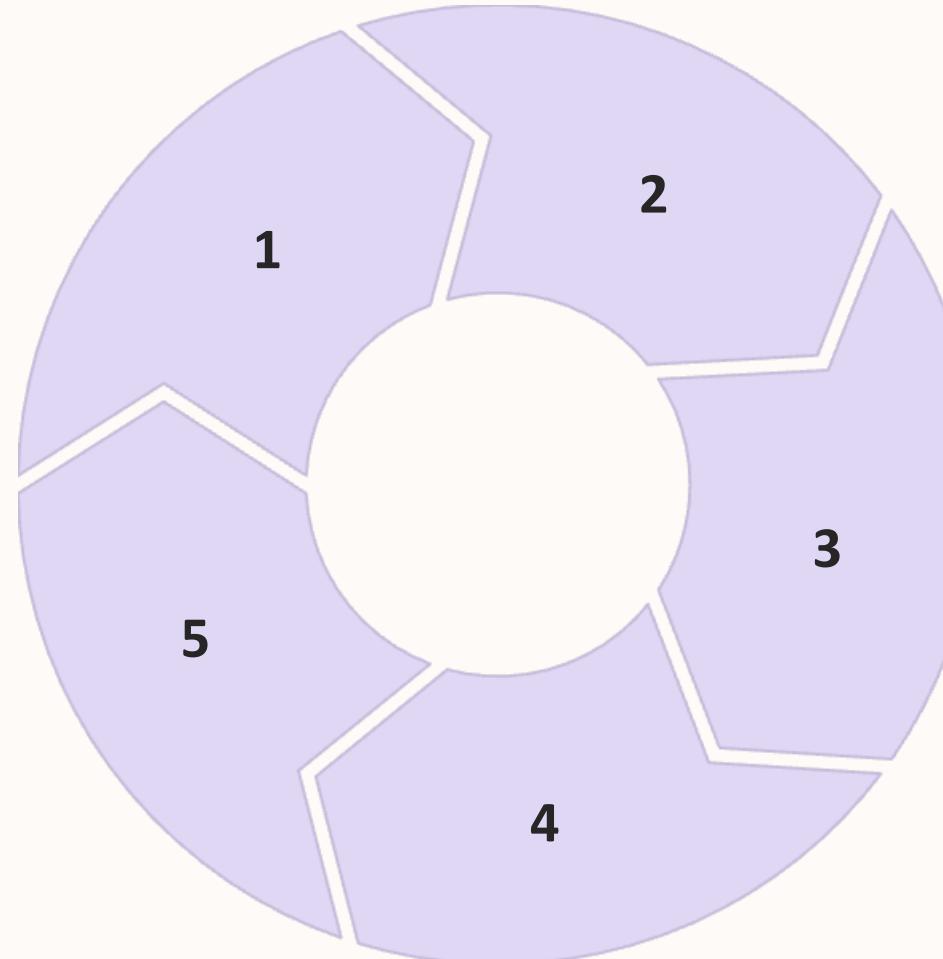
मधुबन का मिलन



मिलन के विभिन्न रूप

बच्चे का रूप
मेरा बाबा

सतगुरु रूप
मुक्ति और जीवनमुक्ति देने वाला



माँ-बाप का रूप
परवरिश करने वाला

सखा रूप
मित्र और साथी

शिक्षक रूप
ज्ञान देने वाला

हर एक अपने रूप के नशे में बहुत लगे हुए हैं।
कोई मेरा बाबा कह रहा, तो कोई मेरा दिल का हार, भिन्न-भिन्न रूप से, जो भिन्न-भिन्न सम्बन्ध यार के होते हैं।

दिल की फोटो

अंतर्मन का चित्र

हर एक के दिल का फोटो प्रत्यक्ष देख बापदादा को कितना अच्छा लगता होगा!

साधारण से असाधारण

इस साधारण रूप में नहीं लेकिन साधारण रूप के भी दिल में किस रूप से याद कर रहे हैं उसी रूप से दिखाई दे रहा है।

खुशी का झूला

हर एक की दिल खुशी के झूले में झूल रही है।



बापदादा का दृष्टिकोण

- 1
- 2
- 3
- 4

साधारण से परे

बापदादा हर एक का साधारण रूप नहीं देख रहा है।

सम्बन्ध का स्वरूप

सम्बन्ध के स्वरूप में बाप और बच्चे के स्वरूप में देख रहे हैं।

दिल का प्यार

दिल के प्यार का स्वरूप प्रत्यक्ष है।

गहरा स्नेह

हर एक के दिल का गहरा रूप देख कितना एक-एक के प्रति स्नेह प्रत्यक्ष दिखाई देता है।

मिलन की विशेषताएँ

1

समीपता का अनुभव

किसी भी कोने में बैठे हैं, अभी कोना कहाँ और हम कहाँ
लेकिन हर एक का चेहरा बापदादा के समीप ही दिखाई
देता है।

2

ओरिजनल रूप

बापदादा जब भी आते हैं तो आपका वही ओरीजनल रूप देखते हैं।

3

दिल की बातें

दिल की बातें दिल में ही कर लेते हैं, सम्मुख जैसे बात करते हैं।

4

अनुभव की गहराई

सम्मुख का जो अनुभव है, खुशी है, दिल का समाना है,
यह अनुभव कितना दिल को प्यारा लगता है।

साथीपन और साक्षीपन

साथी का अनुभव

भले कोई लास्ट में बैठा है लेकिन दिल में याद जितनी जिसकी पक्की है, वह ऐसे ही महसूस कर रहा है तो बाबा का साथी बनके बैठा हूँ।

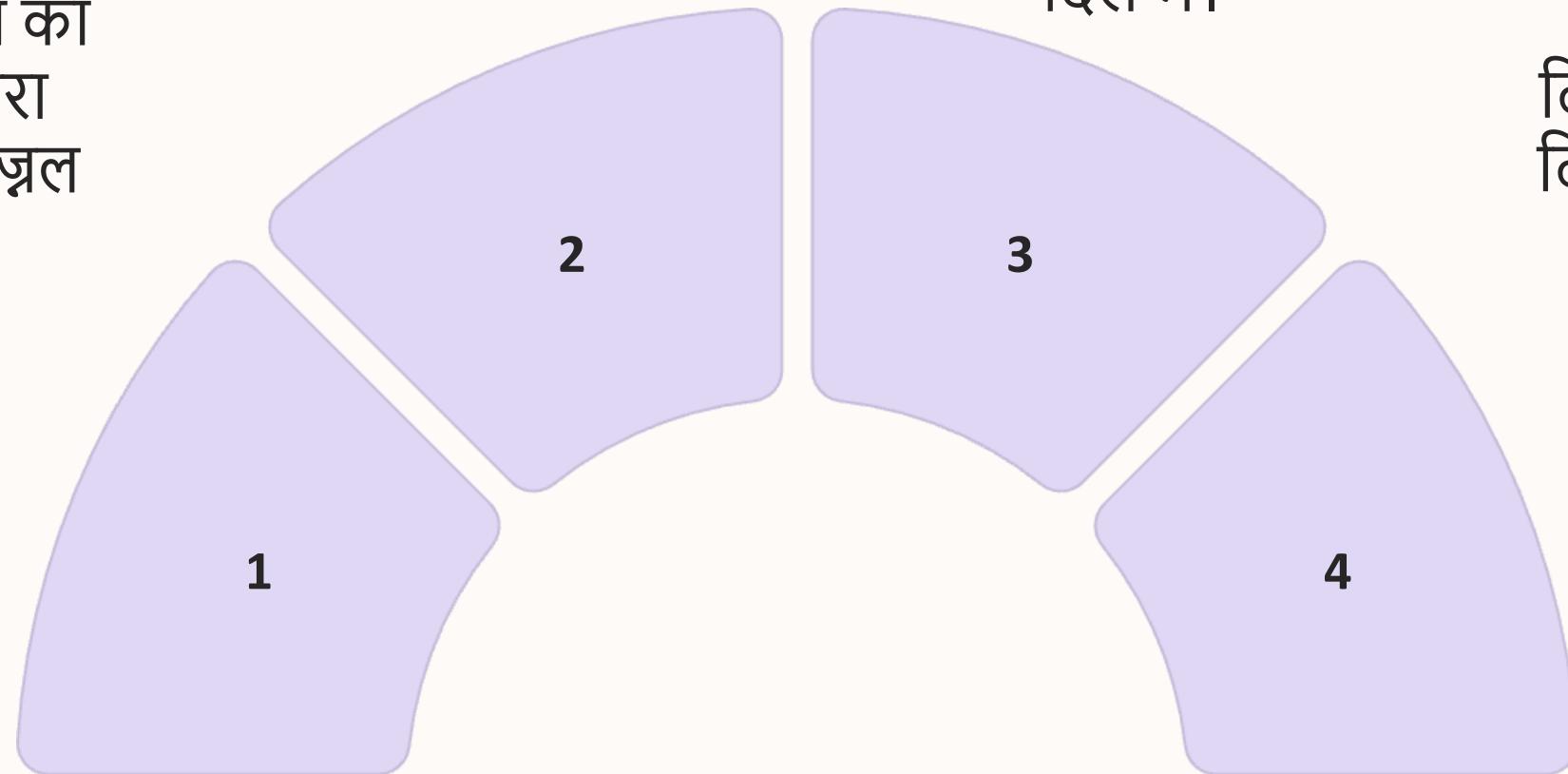
साक्षी दृष्टि

साथीपन और साक्षीपन, दोनों ही रूप दिखाई दे रहे हैं। हर एक के दिल का अनुभव अपना अपना है।

संगमयुग का अनुभव

ओरिजनल फीलिंग

मैजॉरिटी दिल में संगम का रूप ही मिलन में प्यारा लगता है क्योंकि ओरीजनल फीलिंग आती है।



बाप-बच्चे का मिलन

बाप और बच्चे का मिलन बहुत प्यारा लगता है।

दिल में समाए

भले लास्ट में बैठे हैं यहाँ हिसाब से, लेकिन हैं सब दिल में।

दिलाराम का साथ

दिलाराम और बच्चों की दिल, यह मिलन कितना प्यारा है।

प्यार के नम्बर

1

दिल का स्थान

हर एक अपने प्यार के नम्बर अनुसार उसी जगह पर बैठे हैं।

2

दिल का चित्र

हर एक के दिल का चित्र इस समय क्या है? वह चित्र दिल का हर एक का अभी बाहर के रूप में दिखाई दे रहा है।

3

स्नेह का मेकअप

सभी का चेहरा बड़ा सुन्दर, काले काले का नहीं, स्नेह में समाये हुए का मेकअप हो जाता है।

लगन का चित्र



लगन का प्रतिबिंब

बाबा को लगन वाला वह चित्र ही नजर आ रहा है। लगन का चित्र बस फेस में ही आप देख लो।



वर्तमान का दर्पण

हर एक का फेस वर्तमान समय के मन की लगन के स्वरूप का प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है।



विविधता में एकता

कोई गोरा है, कोई काला है क्या है, लेकिन बाबा को लगन वाला वह चित्र ही नजर आ रहा है।



माताओं की महिमा

बढ़ती संख्या

बापदादा तो यह देखते हैं कि समय अनुसार माताओं की संख्या कम नहीं आती। वह और ही ज्यादा आती है।

बाप का प्यार

बापदादा को ऐसे बच्चों के बीच कितना अच्छा लगता है।

दृढ़ संकल्प

चाहे टांग में थोड़ा कुछ भी है लेकिन उन्हों को कोई टांगे स्पेशल मिल जाती हैं।

भक्ति और ज्ञान का अंतर

भक्ति का स्वरूप

भक्ति में इनको भिन्न-भिन्न रूप में दिखाते हैं।

ज्ञान का स्वरूप

बापदादा भी जब यह दिन आता है तो बच्चों को बहुत एक-एक को देखता है। और बच्चे भी उसी स्नेह के रूप में दिखाई देते हैं।

दिल का गीत



वाह बाबा वाह!

हर एक के दिल से वाह
बाबा वाह! वाह बाबा वाह!
का गीत सुनाई देता है।



एक ही सुर

बाप को बच्चों के भिन्न-
भिन्न रूप में गीत बहुत
अच्छे सुर में सुनाई देता
है।



एकता का साज

एक ही साज में, एक ही
लगन के रूप में दिखाई दे
रहा है।

मिलन की चुनौतियाँ

1

समय की कमी

थोड़ा सा टाइम सम्मुख का मिलता है,
बात तो फिर भी दिल में ही कर सकते हैं।

2

भौतिक बाधाएँ

गर्मी के दिन हैं और गर्मी में आना जाना, माना पहले
एक पानी आता है गर्मी का, पीछे मिलन होता है।

3

साधनों की कमी

कलियुग है ना, कलियुग में सब साधन मिलें यह असम्भव हैं।

4

प्रेम की शक्ति

लेकिन वह एक मिनट का मिलना भी बहुत प्यारा लगता है।



मिलन की महता

1

एकता का प्रतीक

एक ही सभा में कितने शहर वाले
अपने-अपने स्थान से मिलते हैं।

3

प्रयास का महत्व

फिर भी कोशिश तो करते हैं
जितना टाइम यहां बाबा के सामने बैठते हो इकट्ठे।

2

दूरी का मिटना

अपने स्थान से एक जगह इकट्ठे तो हुए हो ना।

4

साधनों का विकास

हर एक को अपना साधन भी हो सकता है।

मिलन का भविष्य

- 1
- 2
- 3
- 4

वर्तमान चुनौतियाँ

अभी जबकि समय अभी नजदीक आ रहा है समाप्ति का लेकिन फिर भी मिलन तो हो जाता है ना।

दूरी का मिटना

इतना दूर दूर, कितना दूर से मिल रहे हैं।

धैर्य की आवश्यकता

सिर्फ धैर्य से जैसे प्रोग्राम मिलता है वैसे ही चलें।

भविष्य की उम्मीद

अपना राज्य जब होगा तब इतने साधन होंगे जो हम यूज नहीं कर सकेंगे, इतने होंगे।



अंतिम संदेश

प्रेम का महत्व

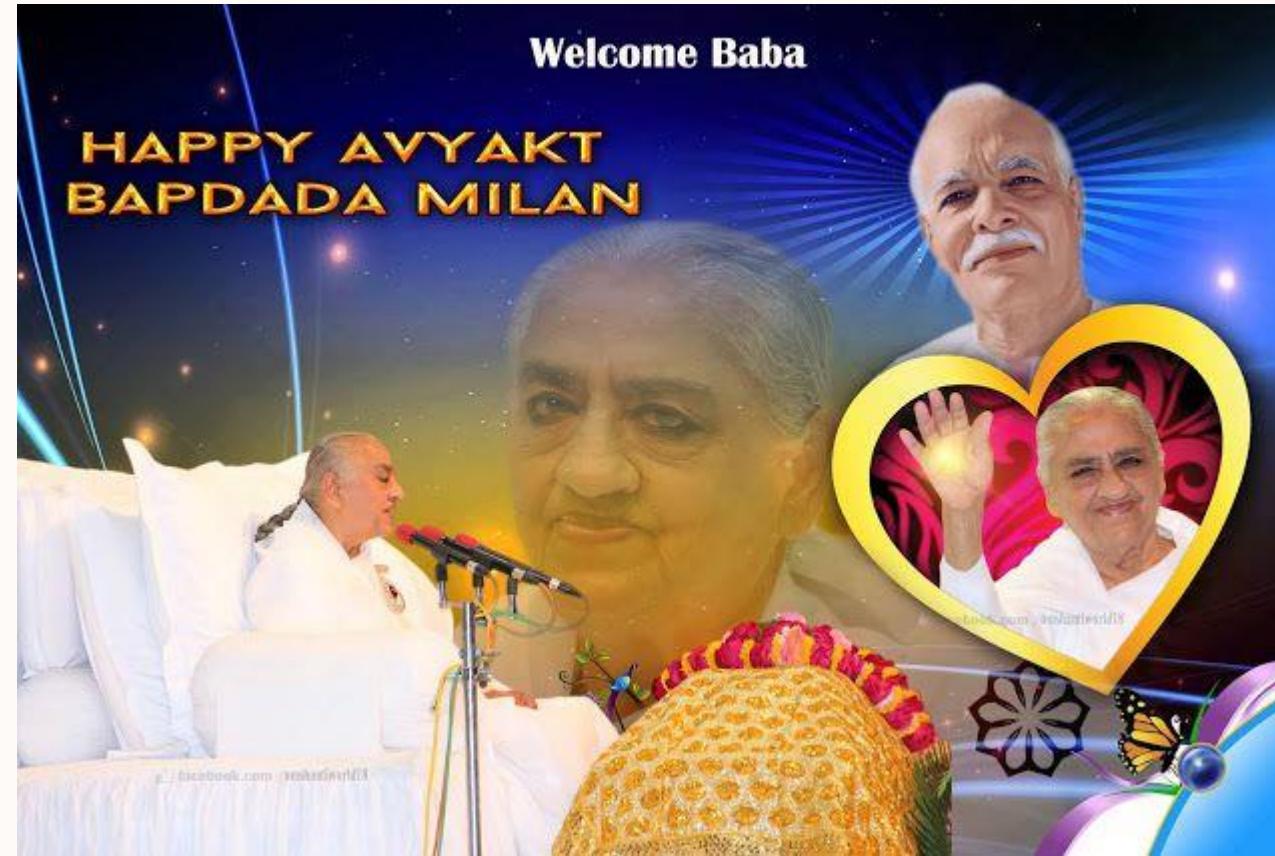
बाप और बच्चों का मिलना तो है ही कि समझते हो इससे नहीं मिले तो अच्छा! नहीं। बाप को भी तो याद आते हैं ना बच्चे।

कठिनाइयों से परे

थोड़ी गर्मी, पसीना थोड़ा देना पड़ता है लेकिन बाबा के आगे वह क्या चीज़!

ज्ञान की महिमा

भक्ति में क्या कुछ करते हैं, यह तो ज्ञान है। आराम तो मिलता है ना।





Book Review part 1 (पुस्तक समीक्षा):

“होली का रुहानी रंग: अव्यक्त मरलियों का सार” एक आध्यात्मिक यात्रा है, जो साधक को आत्मिक पवित्रता और दिव्यता की ओर ले जाती है।

हर अध्याय होली के गृह अर्थ को स्पष्ट करता है –
कहीं “बीती को बीती करने” का पाठ मिलता है,
तो कहीं “बाप समान बनने” की प्रेरणा।’

इस पुस्तक की विशेषता है कि यह केवल विचार नहीं देती,
बल्कि आत्मा के गहरे स्तर पर परिवर्तन लाने की शक्ति रखती है।

इसमें वर्णित प्रमुख संदेश हैं –

- होली का वास्तविक अर्थ: पुराने को जलाकर नया बनना
- आत्मा-परमात्मा का मिलन: मंगल मिलन का उत्सव
- आध्यात्मिक रंग: ज्ञान, योग और गुणों का अविनाशी रंग
- सेवा का महत्व: स्वयं को और को पवित्र बनाने की प्रेरणा

यह पुस्तक हर उस साधक के लिए उपयोगी है जो जीवन में हल्कापन, शांति, और सच्ची खुशी अनुभव करना चाहता है।

इसका हर पृष्ठ पाठक को स्मृति दिलाता है कि होली केवल एक दिन का त्योहार नहीं –
यह रुहानी होली है, जो आत्मा को सदा “होली” – अर्थात् पवित्र, हल्की और खुश बनाती है।

✿ पुस्तक समीक्षा part 2 (Book Review):

“होली का रुहानी रंग – अव्यक्त मुरलियों का सार” एक अनमोल आध्यात्मिक ग्रंथ है जो साधक को आत्म-परिवर्तन और दिव्य अनुभूति की ओर प्रेरित करता है।

इसमें वर्णित बापदादा के अमृत वचन हमें यह सिखाते हैं कि –

- बीती हुई बातों को भूलाना ही सच्ची होली है।
- आत्मा को योग-अग्नि से पवित्र कर, परमात्मा के रंग में रंगना ही वास्तविक आनंद है।
- सेवा, मधुरता और खुशी की पिचकारी से विश्व को रुहानी रंग में रंगना ही जीवन का उद्देश्य है।

यह पुस्तक न केवल आध्यात्मिक ज्ञान का संकलन है, बल्कि आत्मा के जीवन में व्यवहारिक परिवर्तन लाने का सशक्त माध्यम भी है।

हर अध्याय पाठक को गहराई से यह अनुभूति कराता है कि होली केवल एक दिन का पर्व नहीं, बल्कि यह आत्मा की नित्य उत्सवमयी अवस्था है।

जो इस ग्रंथ को मननपूर्वक पढ़ेगा,
वह अनुभव करेगा कि सच्ची होली बाहर नहीं,
बल्कि अंदर की शांति, प्रेम और पवित्रता में बसती है।

परिशिष्ट (Appendix):

- अ. मुख्य बिंदु - होली के महावाक्य (1969-2016)
- ब. होली पर बापदादा के विशेष सन्देश
- स. सच्ची होली मनाने के लिए दैनिक अभ्यास (होली साधना)
- द. प्रश्नोत्तरी - आत्मिक चिंतन के लिए मनन प्रश्न

 “इस पुस्तक की प्रत्येक पंक्ति में रुहानी रंग की झलक है।
इसे पढ़ते समय आत्मा स्वयं अनुभव करेगी –
कि होली केवल एक पर्व नहीं, बौलिक आत्मा की निरंतर उड़ान है।”

“स्रोत: मुरली प्रेरणाएँ (सार संकलन)”

<https://bkdrluhar.com/013.%20Avyakt%20Murlis/01.%20All%20Avyakt%20Murli/01.%20Hindi/00.%20Htm/00.%20Hindi%20Avyakt%20Murlis.htm>

| 1-MARCH-1999
| 3-APRIL-1997
| 3-FEB-2005
| 3-MARCH-2007
| 4-MARCH-1969
| 6-FEB-1985
| 9-MARCH-1982
| 9-MARCH-2009
| 13-MARCH-1998
| 14-MARCH-2006
| 15 MARCH 1984
| 15-MARCH-2015
| 16-MARCH-1992
| 21-MARCH-1981
| 23-MARCH-1970
| 25-MARCH-1986
| 26-MARCH-1993
| 28-FEB-2010
| 31-MARCH-2011
| 31-MARCH-2016



HAPPY HOLI
TO YOU!

भगवान और भाग्य की स्मृति से सदा हर्षित रह सर्व को
हर्षित बनाने वाला बाप का खुशकिस्मत खुसनशीब खुशनुमा
हर्षित हौली बच्चा

प्रिय पाठक,

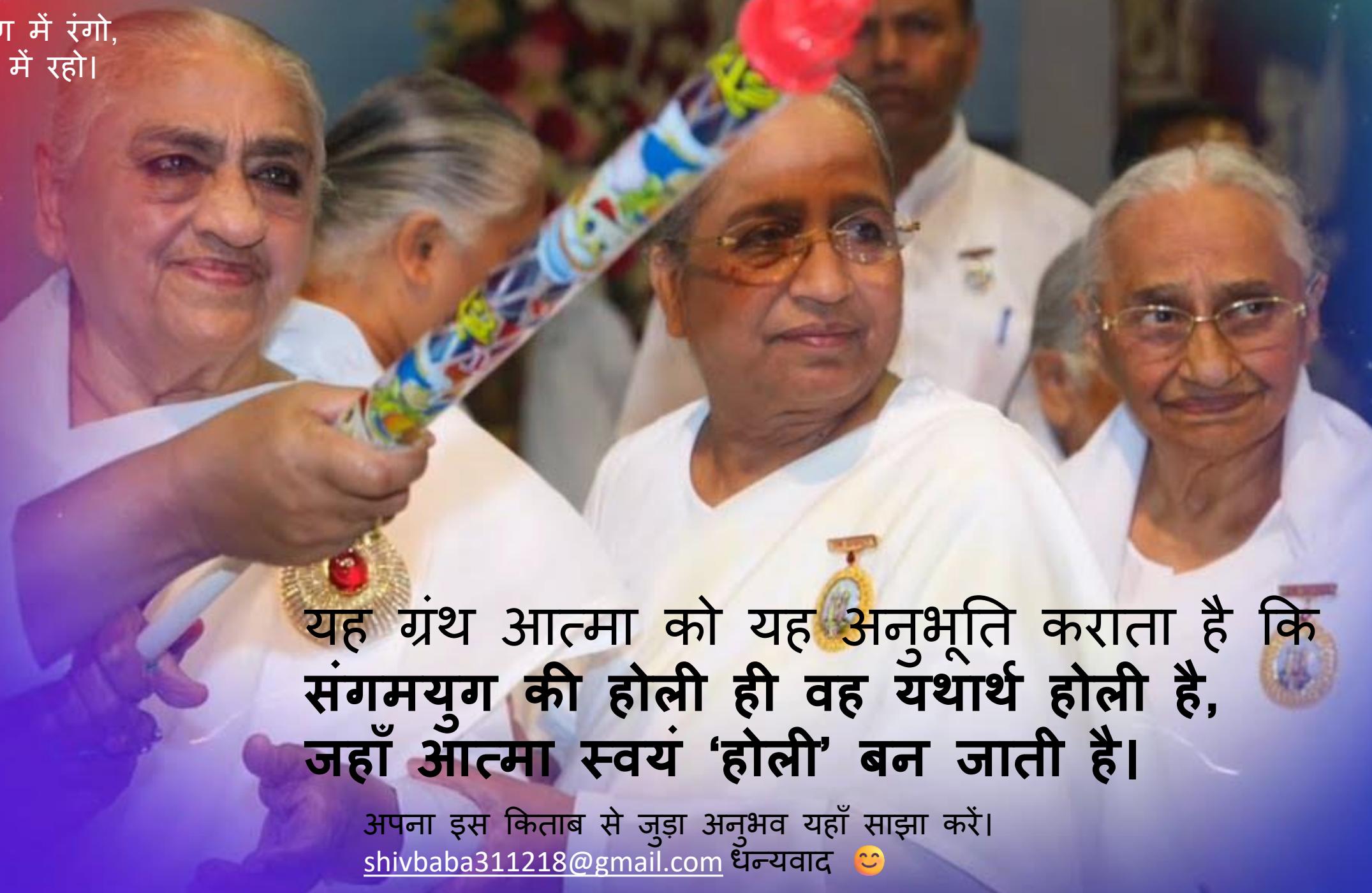
यदि इस पुस्तक को पढ़ते हुए तुम्हारा मन भी कभी शांत, गहरा और रुहानी हो जाए,

तो समझना कि तुमने भी अपनी आत्मा की “होली” मना ली है।

बीती को बीती करो,

स्वयं को बाप के रंग में रंगो,
और सदा होली मूड में रहो।

ॐ शान्ति



यह ग्रंथ आत्मा को यह अनुभूति कराता है कि
संगमयुग की होली ही वह येथार्थ होली है,
जहाँ आत्मा स्वयं ‘होली’ बन जाती है।

अपना इस किताब से जुड़ा अनुभव यहाँ साझा करें।
shivbaba311218@gmail.com धन्यवाद 😊